लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पचासवां अंक अक्टूबर-दिसम्बर, 2024

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124

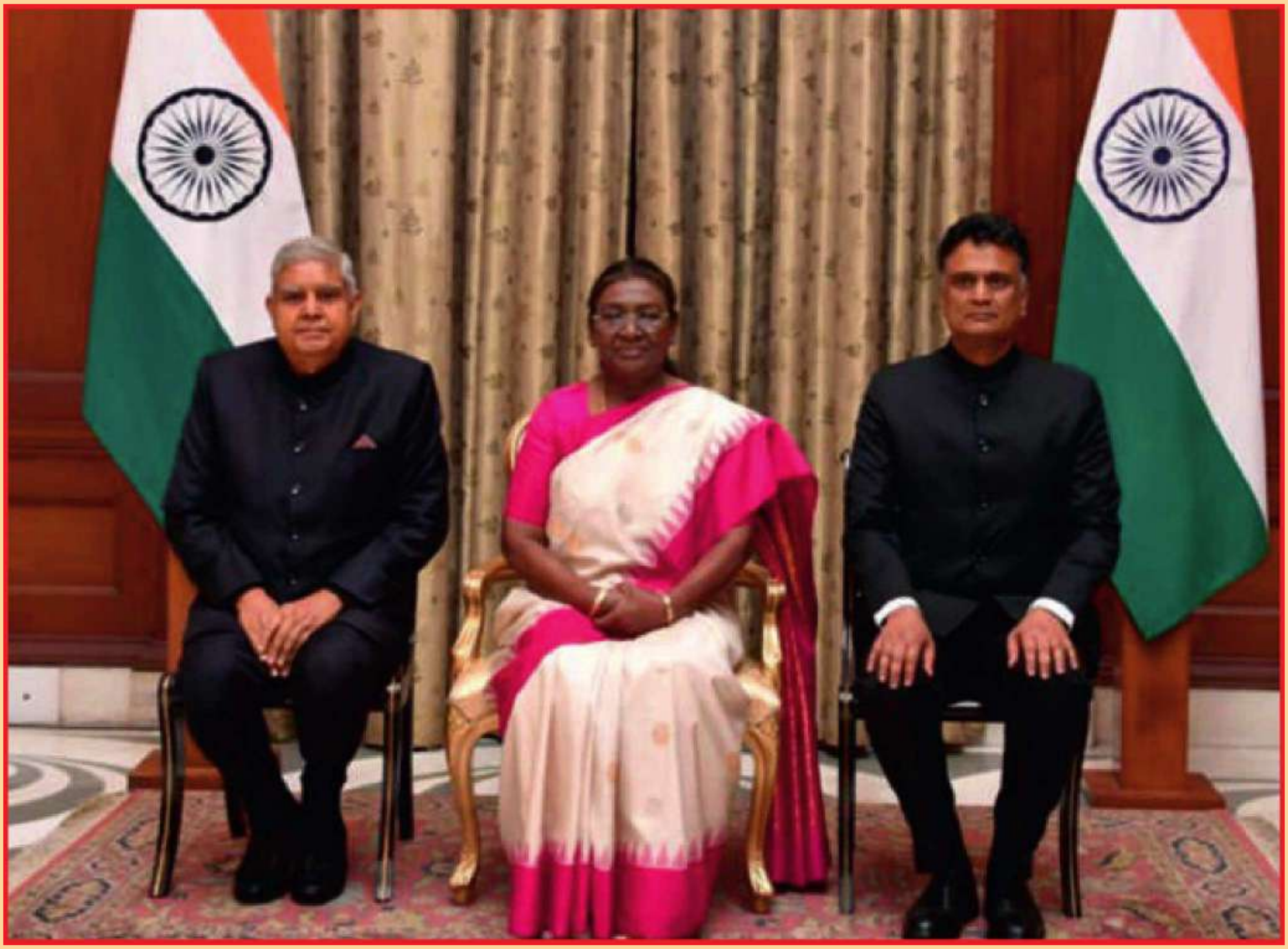

शपथ ग्रहण समारोह के दौरान राष्ट्रपति भवन में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति भारत की माननीय राष्ट्रपति सुश्री द्रौपदी मुर्मू और भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ के साथ

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पचासवां अंक

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

(अक्टूबर-दिसम्बर, 2024)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ पचासवां अंक
(अक्टूबर–दिसम्बर, 2024)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्री के. संजय मूर्ति
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक
श्री के.एस. सुब्रमण्यम
उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक
श्री भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

रचना चयन समिति
श्री भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
श्री मुकेश सिंह
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
श्री किरन पाल
सहायक निदेशक (राजभाषा)
श्री अभिषेक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
ए–102, वज़ीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली
मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

1. पत्रिका परिवार 2
2. संपादकीय 3
3. पाठकों से दो शब्द 4
4. आपके पत्र 5

लेख

5. 'नवरात्रि' - श्रद्धा, आस्था और शक्ति की नारी के सम्मान का महापर्व — डॉ. लाखा राम 12
6. युद्ध की भयानकता — चाँद सिंह दहिया 16
7. शहीद क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा - भगत सिंह के राजनीतिक गुरु — आरती शर्मा 18
8. समाज में नारी की स्थिति : कल और आज — अनुराग प्रभाकर 21
9. नेतृत्व में प्रभावी सम्पर्क की शक्ति — राजीव भाटिया 25
10. नाउरू : दुनिया का सबसे छोटा लोकतांत्रिक राष्ट्र — बिभाष रंजन मंडल 28
11. हिन्दुस्तान के गौरवः 'गाय, गंगा और गांव' — यशवंत कुमार वर्मा 32
12. वायु प्रदूषणः सांसें उधार पर — रितेश गुप्ता 35
13. भारतीय ग्रामीण एवं शहरी जीवन — संदीप 37
14. 2023 आई.सी.सी. पुरुष क्रिकेट विश्व कप – एक आर्थिक दृष्टिकोण — आनन्द नाग 41
15. मानक देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी — उदय प्रताप सिंह 44

कहानी

16. निर्वासन — मुनीष भाटिया 51
17. हामिद का चिमटा — अनुराग प्रभाकर 53

कविताएँ

18. दोस्ती के रंग — सुमित जांगड़ा 61
19. नववर्ष है — बाल बिहारी प्रजापति 62
20. बदलता वक़्त — विवेक शर्मा 62
21. पतझड़ की ऋतु है आई — कुमारी प्रियंका 63
22. मेरे देश की बेटी — रविन्द्र कुमार 64
23. पुराने दिन — हरिओम कुमार 65

प्रेरक प्रसंग

24. अस्तित्व ● विश्वास — अनुराग प्रभाकर 67
25. मुख्यालय समाचार — अनुराग प्रभाकर 71

अस्वीकरण - पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादकीय

भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)

प्रिय साथियों,

राजभाषा के विकास हेतु सरकार के सभी अंगों द्वारा समय-समय पर आवश्यक कदम उठाए जाते रहे हैं। अब तो अन्य भाषा-भाषी प्रान्तों में भी हिन्दी को लेकर जो पूर्वाग्रह था उसमे बहुत कमी आई है। ऐसा उन प्रान्तों में कार्यरत हमारे कार्यालयों से हमारी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के संबंध में प्राप्त हो रही प्रतिक्रिया से स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि उन प्रान्तों का एक सामान्य निवासी भी वहाँ निवास कर रहे हिन्दी भाषा-भाषी से हिन्दी मे सहज होकर वार्तालाप करता है। और ऐसा एक नहीं बल्कि "ग" क्षेत्र के कई राज्यों में देखा गया है। संविधान सभा में लिया संकल्प कि हिन्दी किसी पर भी थोपी नहीं जाएगी वरन सरकार इस दिशा में प्रयास करेगी कि लोग स्वेच्छा से हिन्दी को अपनाएं, अब सत्य सिद्ध होता प्रतीत हो रहा है।

यह हर्ष का विषय है कि कई नए लेखकों ने हमारी पत्रिका के साथ जुडने मे रुचि दिखाई है और वे पत्रिका की सामग्री में कविता, लेख एवं कहानी के माध्यम से अपना योगदान कर रहे हैं।राजभाषा का देश के कोने-कोने मे प्रचार-प्रसार हो, यह आरंभ से ही पत्रिका का ध्येय रहा है। नए लेखकों के इस प्रकार जुड़ने से पत्रिका मे विविधता का समावेश हो रहा है क्योंकि ऐसे लोगों के सुझाव से ही इस पत्रिका को नया कलेवर देना संभव हो सका है।

इस अंक में भी ऐसे ही लेखकों की रचनाओं को स्थान दिया गया है । हाल ही में प्रयागराज में आस्था का महाकुंभ मनाया गया। करोड़ों भारतवासियों ने धर्म, जाति, पद, प्रतिष्ठा आदि के अंतर को परे रखते हुए धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्राथमिकता दी है और महाकुंभ में अपनी भावांजलि अर्पित की। ऐसे ही आस्था एवं संस्कृति के प्रतीकों पर एक लेख सम्मिलित किया गया है। भारत में 2023 का क्रिकेट एकदिवसीय विश्वकप टूर्नामेंट आयोजित हुआ था। उसके आर्थिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करता हुआ लेख भी इस बार के अंक में सम्मिलित किया गया है। ग्रामीण एवं शहरी जीवन के मध्य अंतर पर भी एक लेख में चर्चा की गई है । राजभाषा का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में पड़ता दिख रहा है । मीडिया भी इससे अछूता नहीं है। इस पर "मीडिया एवं हिन्दी" लेख में विस्तार से चर्चा की गई है। भारत की संस्कृति में सदैव अपने से बड़ों को आदर एवं सम्मान का पात्र माना गया गया है, हालांकि पिछले कुछ समय से आधुनिकता एवं भौतिकवाद की चकाचौंध में बुजुर्गों के सम्मान की इस परंपरा को हम भूलते जा रहे थे। उन्हें या तो संपत्ति का स्रोत समझा जाता है या संपत्ति के अभाव में उन्हें बोझ की संज्ञा दी जाती है । "निर्वासन" नामक कहानी के माध्यम से हमारी इस भूल की तरफ लेखक हमारा ध्यान दिला रहे हैं। पत्रिका के अंक की इस अवधि (अक्तूबर – दिसंबर 2024) में हमारे कार्यालय में ऑडिट दिवस भी मनाया गया जिसका समाचार पाठकों को दिया गया है। नौरू देश की कहानियां आपकी जानकारी तो बढ़ाएंगी ही साथ में सदैव की तरह कविताएं और गजलें भी हैं । वे सभी स्थायी स्तम्भ भी हैं जिसकी प्रतीक्षा पाठकों को इनकी शुरुआत से हमेशा रही है।

अंत में आप सभी के पत्रिका के प्रति प्रदर्शित किए गए उत्साह एवं प्रेम का आभार प्रकट करते हुए मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका के प्रति आपका यह प्रेम सदैव बना रहेगा और अपनी रचनाओं के माध्यम से आप सभी इसे अभिव्यक्त प्रदान करते रहेंगे। पत्रिका के संबंध में आपके मूल्यवान विचारों की भी मुख्यालय के पत्रिका परिवार को उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी ।

जय भारत !

आपका शुभाकांक्षी

भवानी शंकर

प्रधान संपादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पाठकों से दो शब्द

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)

नमस्कार साथियों !

अपने साथियों के मध्य आकर उनसे संवाद स्थापित करने के माध्यम से अपने हृदय की बात करने से अच्छा और कुछ नहीं हो सकता । पत्रिका ने एक सौ पचास अंकों का एक लंबा सफर तय कर लिया है। संस्थानों के दृष्टिकोण से यह एक छोटी अवधि हो सकती है परंतु हाड़ मांस के मुझ जैसे मानव के लिए एक सौ पचास अंकों के सफर की अवधि बहुत मायने रखती है। पत्रिका की रचनाओं के संबंध में आपके द्वारा प्रेषित किया गया प्रत्येक पत्र इस पत्रिका के जीवन में अनगिनत क्षणों को जोड़ता है इसीलिए मेरा मानना है कि इस पत्रिका की जीवनरेखा आप सभी की प्रतिक्रियाओं द्वारा खींची जा रही है। उत्साह की बात है कि हर बार पत्रिका को नए पाठक और नए लेखक , दोनों प्राप्त हो रहे हैं। आप से यह भी अपेक्षित है कि इन प्रतिक्रियाओं में हमें अपनी रुचियों के बारे मे तथ्य साझा करें ताकि हम पत्रिका में उनसे संबन्धित सामग्री सम्मिलित कर सकें।

आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य एवं कल्याण की कामना के साथ,

आपका साथी,

अनुराग प्रभाकर
संपादक

पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने हेतु लेखकों के लिए अनुदेश

1. रचना वर्ड सॉफ्ट कॉपी में ही भेजी जाए। यदि भौतिक प्रति भेजी जा रही है तो मंगल फॉन्ट में फॉन्ट साइज़ 12 रखते हुए पृष्ठ के एक ओर टंकित करके निम्न पते पर भेजें।

   संपादक 'लेखापरीक्षा प्रकाश', 10, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002
2. कृपया लेख के साथ (i) मौलिकता प्रमाणपत्र, (ii) फोटो, (iii) नाम एवं पदनाम, (iv) कार्यरत/सेवानिवृत्त (यदि कार्यरत हैं तो अनुभाग); (v) यदि सेवानिवृत्त हैं तो, कार्यकाल के दौरान पदनाम; (vi) मूल कार्यालय का नाम और पता संपर्क संख्या के साथ (कार्यरत और सेवानिवृत्त दोनों का); (vii) वर्तमान कार्यालय का नाम, पता और संपर्क संख्या (यदि कार्यरत हैं तो); (viii) लैंडमार्क के साथ वर्तमान आवासीय पता, (ix) ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर भी संलग्न करें। बैंक खाता विवरण भी संलग्न करें।
3. यदि पत्रिका के वर्तमान अंक के लिए पर्याप्त रचनाओं की संख्या प्राप्त हो चुकी हो तो उसी रचना को अगले अंक के लिए आरक्षित कर लिया जाता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचना के प्रकाशन के संबंध में अनावश्यक पूछताछ न करें।
4. संभव हो तो संबंधित पत्र व्यवहार भी राजभाषा में करने का प्रयास करें।
5. सॉफ्ट कॉपी में रचना भेजने का पता :– **ईमेलः rajbhashaanubhag@cag.gov.in; Contact : 011-23607258**

आशा है आप अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।

आपके पत्र

महोदय,

मुख्यालय की राजभाषा पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश' के 149वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ, साज-सज्जा एवं कलेवर आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं रुचिकर एवं भावयुक्त है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक है। राजभाषा हिंदी पर प्रस्तुत लेख पठनीय एवं इसके प्रचार-प्रसार हेतु सहायक है। इसके अतिरिक्त ‘बच्चे की निजता का अधिकार', 'स्वस्थ बनें लोग अपनाकर आरोग्य', 'मीडिया, बाजार और उपभोक्तावाद का त्रिकोण', 'नौरुअन्स की उत्पत्ति', 'झरने वाली चाय' एवं 'ये मजबूरियां रचनाएं उच्चस्तरीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक महोदय को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान

(आरटीआई) प्रयागराज

★ ★ ★

महोदय,

मुख्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 149वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप सेः सुश्री सुनीता का लेख 'बच्चों का निजता का अधिकार', श्री अनुराग प्रभाकर का लेख 'समाज में नारी की स्थितिः कल और आज', श्री राजीव भाटिया का लेख 'आइये भविष्य (Bhavishya) को जाने...... श्री हरभजन सिंह की कविता 'आज की दशा', सुश्री पूनम मिश्रा की कविता 'हिन्दी', श्री शिवम सिंह 'शिवोहम' की कहानी 'झरने वाली चाय' प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोतर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

उदय प्रताप सिंह

एजी ऑडिट बेंगलूरु

★ ★ ★

महोदय,

मुख्यालय कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के 149वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थं धन्यवाद। इस अंक में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं।

इस पत्रिका के 149वें अंक में प्रकाशित रचनाओं में सुश्री

सुनीता जी द्वारा रचित "बच्चों का निजता का अधिकार", डॉ लाखा राम जी द्वारा रचित "शिक्षक समाज और राष्ट्र का वास्तविक निर्माता", श्री अनुराग प्रभाकर का लेख "समाज में नारी की स्थितिः कल और आज", श्री बी आर मंडल द्वारा रचित "नौरुअन्स की उत्पत्ति", श्री सुमित का लेख "आजकल की गर्मी" और श्री विक्रम सिंह की कविता "ये मजबूरियाँ" आदि विशेषकर प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका का संपादन, कलेवर एवं रूपांकन सराहनीय हैं। इस पत्रिका को उच्च स्तरीय एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु उपयोगी बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकार एवं इस पत्रिका का संपादक मंडल विशेष बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की अनवरत प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

"लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 149वें अंक के ई-संस्करण का लिंक इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को परिचालित किया गया है।

यह महालेखाकार के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

भवदीय,
(बाषा मोहम्मद बी)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
एजी (लेखा व हकदारी का कार्यालय),
तिरुवनंतपुरम केरल

★ ★ ★

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 149वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर शिक्षक समाज और राष्ट्र का वास्तविक निर्माता, समाज में नारी की स्थिति: कल और आज, नौरूअन्स की उत्पत्ति, आइये भविष्य को जाने, जिंदगी का सफर, फूल और कलियाँ, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी कक्ष
एजी (लेखापरीक्षा), मध्य प्रदेश भोपाल

★ ★ ★

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 149वें अंक की सॉफ्ट कॉपी हमें प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं यथा संस्मरण, लेख, कविताओं आदि का सुंदर संग्रह है, जिसमें बच्चों का निजता का अधिकार', 'समय के साथ बदलते रिश्ते', 'झरने वाली चाय', एवं 'समाज में नारी की स्थितिः कल और आज विशेषतः उल्लेखनीय हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
व. लेखा अधिकारी हिंदी अनुभाग
एजी (लेखा व हकदारी) बिहार

★ ★ ★

महोदय/महोदया,

आपकी हिन्दी पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश के 149वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"लेखापरीक्षा प्रकाश उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से 'बच्चों का निजता का अधिकारी 'समय के साथ बदलते रिश्ते', 'नौरूअन्स की उत्पत्ति' और 'ये मजबूरियां' विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष
एजी (लेखा व हकदारी), ओड़ीशा, भुवनेश्वर

★ ★ ★

महोदय,

मुख्यालय की पत्रिका लेखापरीक्षा-प्रकाश का 149 वां अंक ई -मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। "लेखापरीक्षा-प्रकाश" पत्रिका के इस अंक के प्रेषण के लिए सहर्ष धन्यवाद। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाए सदैव की भाँति पठनीय, प्रभावशाली, रोचक, प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक है। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत सार्थक एवं पत्रिका की साजसज्जा आकर्षक है।

इस पत्रिका में विशेषकर लेख के अंतर्गत श्रीमती सं.ग. श्रीमती लिखित नालवडी कृष्णराज वीडयर" एवं श्री अनुराग प्रभाकर द्वारा लिखित प्रेरक प्रसंग बहुत सुंदर है। श्री शिवम सिंह लिखित कहानी 'झरने वाली चाय पठनीय एवं रोचक है। श्री आलोक शर्मा द्वारा रचित कविता "फूल और कलियां (भाग-1) तथा सुश्री पुनम शर्मा द्वारा रचित कविता "हिंदी" प्रशंसनीय है।

पत्रिका के निरंतर श्रेष्ठ प्रकाशन एवं सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाईयां। पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)
एजी (लेखा व हकदारी) महाराष्ट्र , नागपुर

★ ★ ★

महोदय,

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश के 149वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से पास हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक व मनमोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की है। रचनाओं के मध्य छाया चित्र भी अत्यंत सार्थक एवं विषयानुकूल हैं। पत्रिका के 149वें अंक में संकलित श्री उदय प्रताप सिंह का लेख 'सरकार की राजभाषा नीति, श्री सचिन सिंह का लेख 'समय के साथ बदलते रिश्ते श्री अनुराग प्रभाकर का लेख 'समाज में नारी की स्थिति कल और आज, श्री चाँद सिंह दहिया की कविता 'जिन्दगी का सफर' एवं सुश्री पूनम वर्मा की कविता 'हिंदी' बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक हैं।

उत्कृष्ट श्रेणी के संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई तथा हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगन्धा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र प्रधान महालेखाकार महोदया की अनुमति से जारी किया गया है।

भवदीय
उप महालेखाकार (प्रशासन)
एजी (लेखापरीक्षा) पंजाब

★ ★ ★

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 149वें अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा एवं संरचना आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं विशेष रूप से सुश्री सुनीता की रचना "बच्चों का निजता का अधिकार, श्री राजीव भाटिया की रचना "आइये भविष्य को जाने", श्री अनुराग प्रभाकर की रचना "प्रेरक प्रसंग", श्री चाँद सिंह दहिया की रचना "जिंदगी का सफर", इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

यह पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहें, इसी शुभकामना सहित आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश" की उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

इसे उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदय के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
एजी (लेखापरीक्षा) बंगाल

★ ★ ★

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश के 145 146,147-148 अंकों की ई- प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के सभी अंकों में समाविष्ट रचनाएं समयोचित एवं ज्ञानवर्धक होने के साथ संग्रहणीय भी है। पत्रिका में निहित सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं समकालीन विषयों का समागम प्रशंसनीय है। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं प्रासंगिक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है जिसमे संस्मरण लेख, कविताएं कहानियों का समावेश है। पत्रिका की रुपसज्जा भी मनमोहक है।

पत्रिका के इस अंक के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। पत्रिका की निरन्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय,
मध्य प्रदेश लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर 474002

★ ★ ★

महोदय,

लेखापरीक्षा-प्रकाश पत्रिका के 149 अंक की ई-प्रति अग्रेषित करने हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ हमारे भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। सभी रचनाएँ सुरुचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद है।

विशेषकर सुश्री आरती शर्मा की 'स्वस्थ बनें लोग अपनाकर आरोग्य', श्री अनुराग प्रभाकर की 'समाज में नारी की स्थिति-कल और आज श्री राजीव भाटिया की 'आइये भविष्य को जानें तथा श्री विक्रम सिंह कृत 'ये मजबूरियाँ' अति प्रभावी हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाइयां एवं शुभकामनाएँ। सधन्यवाद

(यह निदेशक (प्रशासन) के अनुमोदन से निर्गत किया जाता है)

भवदीय,
एन. श्रीधर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
महानिदेशक (केंद्रीय) लेखापरीक्षा, चेन्नई

★ ★ ★

महोदय/महोदया

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश के 149 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एव पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत ही मनमोहक है तथा आंतरिक साज-सज्जा भी आकर्षक हैं। प्रस्तुत अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की है। विशेष रुप से पत्रिका की रचनाएँ-बच्चों का निजता का अधिकार, समाज में नारी की स्थिति कल और आज समय के साथ बदलते रिश्ते तथा आज की दशा, जिंदगी का सफर जैसी अन्य सभी रचनाएँ भी भावपूर्ण एवं सार्थक है। सरकारी की राजभाषा नीति पर विशेष लेख सराहनीय है।

लेखापरीक्षा प्रकाश का 149वां अंक देश के विभिन्न क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार करने में सहायक है। इस पत्रिका को सफल बनाने वाले सभी सदस्यों को सहर्ष धन्यवाद एव पत्रिका के अगले अंक के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ।

भवदीय
श्रीदेवी के.वी.
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै
शाखा कार्यालय, कोच्ची, गोल्डन जूबिली रोड,
कलूर, कोच्ची- 682017

★ ★ ★

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी त्रैमासिक पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 149वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है, विशेष रूप से पत्रिका का आवरण पृष्ठ । संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और ज्ञानप्रद है। रचनाओं के मध्य छाया चित्र भी अत्यंत सार्थक एवं विषयानुकूल है। श्री सचिन सिंह द्वारा रचित 'समय के साथ बदलते रिश्ते, सुश्री सुनीता द्वारा रचित 'बच्चों का निजता का अधिकार' उल्लेखनीय हैं एवं उसकी भावनाओं का सहज रूप अत्यंत प्रशंसनीय है। श्री अनुराग प्रभाकर द्वारा रचित 'समाज में नारी की स्थिति: कल और आज' विशेष रूप से पठनीय है जिसमें उन्होंने महिलाओं की स्थिति एवं उनके सशक्तिकरण की भावी आवश्यकताओं को बड़ी ही सुंदरता से उजागर किया है। श्री उदय प्रताप सिंह द्वारा रचित 'सरकार की राजभाषा नीति', श्री हरभजन सिंह द्वारा रचित कविता 'आज की दशा' तथा श्री चाँद सिंह दहिया द्वारा रचित 'जिंदगी का सफर' भी उल्लेखनीय हैं।

एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है जोकि सराहनीय हैं। निश्चय ही पत्रिका का प्रत्येक अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक अभिनंदन तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत आपकी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के उज्वल भविष्य के लिए 'अमृतवाणी' परिवार की तरफ से शुभकामनाएं।

भवदीय,
एस.एस. कन्नन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
एजी (लेखापरीक्षा) केरल

★ ★ ★

महोदय/महोदया,

मुख्यालय से प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश के 149 वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

श्री बी. आर. मण्डल, महानिदेशक द्वारा रचित 'नौरुअन्स की उत्पत्ति'; श्री अनुराग प्रभाकर, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा) द्वारा रचित 'समाज में नारी की स्थिति कल और आज'; श्री उदय प्रताप सिंह, हिंदी अधिकारी द्वारा रचित 'सरकार की राजभाषा नीति'; सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी द्वारा रचित 'हिन्दी'; श्री आलोक शर्मा (सेवानिवृत्त) द्वारा रचित 'फूल और कलियों'।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीय,
प्रभारी हिंदी अधिकारी
एजी (लेखापरीक्षा) महाराष्ट्र, नागपुर

★ ★ ★

महोदय,

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हमारी हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 149 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं संरचना आकर्षक हैं। इसमें समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय है। संपादक मण्डल द्वारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलता से किया गया है। सुनीता जी की 'बच्चों का निजता का अधिकार, आरती शर्मा जी की स्वस्थ बनें लोग अपनाकर आरोग्य, प्रदीप तिवारी जी की "मीडिया, बाजार और उपभोक्तावाद का त्रिकोण, अनुराग प्रभाकर जी की "समाज में नारी की स्थितिः कल और आज" एवं राजीव भाटिया जी की "आइए भविष्य को जाने" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका में शामिल कहानी, कविताएँ व प्रेरक प्रसंग पत्रिका की शोभा बढ़ाते हैं। हिंदी पखवाडा समारोह की झलकियाँ सुंदर व प्रेरक लगीं। पत्रिका के अंत में, "सीएजी सुर्खियों में" देखकर प्रेरणापद लगा। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि हमारी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहेगी।

भवदीय,
(नरेंद्र सिंह खगारीत)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
एजी (लेखापरीक्षा) राजस्थान, जयपुर

★ ★ ★

महोदय,

'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के एक सौ उनचासवें (149वें) अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं। 'सरकार की राजभाषा नीति', 'समय के साथ बदलते रिश्ते', 'समाज में नारी की स्थितिः कल और आज', 'जिंदगी का सफर' तथा 'फूल और कलियां आदि रचनाएं अत्यन्त सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी (हिंदी कक्ष)
एजी हरियाणा

★ ★ ★

लेख

'नवरात्रि'

श्रद्धा, आस्था और शक्ति की प्रतीक नारी के सम्मान का महापर्व

डॉ. लाखा राम
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ

सनातन संस्कृति में नवरात्रि पर्व का बहुत महत्व है। नवरात्रि का इतिहास वैदिक काल से भी पूर्व के समय से जुड़ा हुआ है। नवरात्रि का अर्थ है प्रतिपदा तिथि से लेकर नवमी तक लगातार नौ रातों का समय, जिसमें आदिशक्ति मां जगदम्बा की पूजा की जाती है। भारतीय सनातन धर्म परंपरा में एक वर्ष में चार बार नवरात्रि पर्व मनाया जाता है जो चैत्र, आषाढ, आश्विन एवं माघ मास शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होते हैं। इनमें से चैत्र एवं आश्विन माह में आने वाली नवरात्रि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। माघ एवं आषाढ़ माह में आने वाली नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि कहा जाता है, अतः इनमें किसी भी सार्वजनिक उत्सव का आयोजन नहीं किया जाता है। आश्विन माह में आने वाली नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि कहा जाता है।

भारत की गौरवमयी संस्कृति में नवरात्रि पर्व सही मायनों में नारी शक्ति का स्मरण कराता है। साथ ही समाज को नारी शक्ति का सम्मान करने के लिए प्रेरित भी करता है। भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव विशेष सम्मान प्राप्त रहा है। सनातन धर्म में मां दुर्गा को जगत का पालन करने वाली, विश्व कल्याण की प्रणेता और दुष्टों का संहार करने वाली अधिष्ठात्री देवी माना गया है। एक ओर जहां नवरात्रि पर्व के दौरान देवी दुर्गा के नौ अलग-अलग नारी रूपों की पूजा अर्चना की जाती है, वहीं विद्या एवं बुद्धि की देवी भी नारी स्वरूपा देवी सरस्वती हैं। इसी प्रकार धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी भी नारी स्वरूपा ही हैं। शिव से पहले शक्ति की पूजा की जाती है। लक्ष्मीनारायण, सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर आदि नामों में नारी को प्रथम और नर को गौण रखा गया है। हमारे सभी पौराणिक ग्रंथों में नारी को देवी शक्ति के रूप में पूजनीय माना गया है और सभी शास्त्रों तथा धर्म-ग्रंथों में नारी के सामाजिक महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहीं देवताओं का वास होता है।

भारत में नवरात्रि के नौ दिन मातृ शक्ति देवी दुर्गा के विभिन्न नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है, उनका स्मरण किया जाता है। कन्याओं को भोजन पर आमंत्रित कर उनकी पूजा करते हैं, चरण धोकर उनका स्वागत करते हैं और तिलक के पश्चात दक्षिणा तथा उपहार देकर विदा करने की सदियों पुरानी परंपरा का निर्वहन करते हैं। विभिन्न राज्यों में नवरात्रों में पूजन की क्षेत्रीय विधियां भी हैं जो वहां की संस्कृति की प्रतीक हैं। नवरात्रि को नौ शक्तियों के मिलन का पर्व भी कहा जाता है। भगवती मां दुर्गा अपने नौ अवतारों में साधकों एवं भक्तों के संकल्प को पूरा करती हैं। नवरात्रि का प्रत्येक दिन देवी के प्रत्येक अवतार का प्रतीक है। मां के नौ स्वरूप शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धीदात्री हैं।

नवरात्रि के पहले स्वरूप में मां दुर्गा पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में विराजमान हैं। शैलपुत्री 'शैल' का शाब्दिक अर्थ चट्टान है। शैलराज हिमालय की कन्या होने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा गया। यह पहली नवदुर्गा का स्वरूप है। यह मां पार्वती का पुनर्जन्म है। मां शैलपुत्री अरुणोदय में प्रकट हुई और

सूर्यप्रभा से इनका रंग नारंगी हो गया। पहले नवरात्रि को इस मंत्र का जाप अवश्य करें: या देवी सर्वभूतेषु मां शैलपुत्री रुपेण संस्थिता, नमस्तयै नमस्तयै नमस्तयै नमो नमः ।' नंदी नामक वृषभ पर सवार शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का पुष्प है। इन्हें समस्त वन्य जीव-जंतुओं की रक्षक माना जाता है।

मां दुर्गा के दूसरे स्वरूप 'ब्रह्मचारिणी' को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया है। इनकी आराधाना से अनंत फल की प्राप्ति और तप, वैराग्य, सदाचार, संयम जैसे गुणों की वृद्धि होती है। ब्रह्म का अर्थ है तप। 'ब्रह्मचारिणी' का अर्थ है तप का आचरण करने वाली एक समर्पित देवी। मां का यह स्वरूप अंतर्मन की ऊर्जा को जागृत करने का प्रतीक है। ब्रह्मचारिणी' अर्थात मां पार्वती शिव को पति रूप में पाने के लिए श्वेत वस्त्र पहने वाम हाथ में कमंडल तथा दायं हाथ में माला लेकर तप करने के लिए जाती है। कहा जाता है कि देवी ब्रह्मचारिणी अपने पूर्व जन्म में पार्वती स्वरूप में थी। उन्होंने भगवान शिव को पाने के लिए एक हजार साल तक सिर्फ फल का सेवन किया और तीन हजार साल तक शिव की तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर की। इस कड़ी तपस्या के कारण उन्हें 'ब्रह्मचारिणी कहा जाता है। दूसरे नवरात्रि को इस मंत्र का जाप अवश्य करें: 'या देवी सर्वभूतेषु मां ब्रह्मचारिणी रुपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।'

मां दुर्गा का तीसरा स्वरूप है चंद्रघंटा। शक्ति के रूप में विराजमान मां चंद्रघंटा के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्रमा है। शिव के साथ विवाह के पश्चात मां पार्वती ने चंद्रमा को अपने मस्तक पर सुशोभित किया, जिससे मां का यह स्वरूप विकसित हुआ। देवी का तीसरा स्वरूप भक्तों का कल्याण करता है। इन्हें ज्ञान की देवी भी माना गया है। बाघ पर सवार मां चंद्रघंटा के चारों तरफ अद्भुत तेज है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। स्वर्ण से आभामय मां का तीन नेत्रों और दस हाथों वाला स्वरूप है। इन दस हाथों में कमल, धनुष-बाण, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा जैसे अस्त्र-शस्त्र हैं। कंठ में सफेद पुष्पों की माला और शीष पर रत्नजडित मुकुट विराजमान है। अस्त्र-शस्त्र धारण करके मां सिंह की सवारी करती है। यह साधकों को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होने का वरदान देती हैं। कहा जाता है कि यह हर समय दुष्टों का संहार करने के लिए तत्पर रहती हैं और युद्ध से पहले उनके घंटे की आवाज ही राक्षसों को भयभीत करने के लिए काफी होती है। नवरात्रि के तीसरे दिन इस मंत्र का जाप अवश्य करें: 'या देवी सर्वभूतेषु मां चंद्रघंटा रुपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।'

चतुर्थ स्वरूप है कूष्मांडा। देवी कूष्मांडा भक्तों को रोग, शोक और विनाश से मुक्त करके आयु, यश, बल और बुद्धि प्रदान करती है। यह बाघ की सवारी करती हुई अष्टभुजाधारी, मस्तक पर रत्नजड़ित स्वर्ण मुकुट पहने उज्ज्वल स्वरूप वाली दुर्गा हैं। देवी अपनी अष्ट भुजाओं में कमंडल, कलश, कमल, सुदर्शन चक्र, गदा, धनुष-बाण और सर्वसिद्धि माला धारण किए हैं। अपनी मंद मुस्कान से ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इनका नाम कूष्मांडा पड़ा। कहा जाता है कि जब दुनिया नहीं थी तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार था। ऐसे में देवी ने अपनी हल्की हंसी से ब्रह्मांड की उत्पति की। वह सूरज के घेरे में रहती हैं। सिर्फ उन्ही के अंदर इतनी शक्ति है, जो सूरज के प्रखर ताप को सहन कर सकें। मान्यता है कि वही जीवन की शक्ति प्रदान करती हैं। कूष्मांडा देवी को कुम्हड़ा (कट्टु या पेठे) की बलि से प्रसन्न किया जाता है। देवी को लाल वस्त्र, नैवेद्य एवं श्रृंगार सामग्री भी अति प्रिय है। देवी के आशीर्वाद से भक्तों को यश की प्राप्ति होती है और दीर्घायु जीवन प्राप्त होता है।

दुर्गा का पांचवां स्वरूप है स्कंदमाता। भगवान स्कंद (कार्तिकेय) की माता होने के कारण देवी के इस स्वरूप को स्कंदमाता के नाम से जाना जाता है। यह कमल के आसन पर विराजमान हैं, इसलिए इन्हें पद्मासन देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन सिंह है। देवी का यह स्वरूप अपने भक्तों की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करता है। इन्हें कल्याणकारी शक्ति की अधिष्ठात्री कहा जाता है। मां की चार भुजाएं हैं। यह दो हाथों में कमंडल लिए हुए और एक हाथ से अपनी गोद में ब्रह्मस्वरूप सनतकुमार को थामे हुए हैं। रूप छ: सिर वाली देवी का है। देवी के इस स्वरूप की पूजा करने से भवसागर से मुक्ति पाकर मोक्ष का मार्ग सरल होता है।

दुर्गा मां का छठा स्वरूप है कात्यायनी। देवी का यह स्वरूप चतुर्भुजी है। उनके दाएं हाथ में स्वास्तिक एवं आशीर्वाद की मुद्रा है। देवी अपने भक्तों को भय से मुक्ति प्रदान करती है और भक्ति का वरदान देती है। देवी के इस स्वरूप की पूजा से विवाह में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं और विवाह के योग बनते हैं।

सातवें दिन मां कालरात्रि की उपासना का विधान है। माता कालरात्रि को काली मां भी कहा जाता है। माता कालरात्रि का रूप बहुत ही विकराल है। मां कालरात्रि का शरीर घने अंधकार की तरह एकदम काला है। बाल बिखरे हैं। गले में विद्युत की तरह चमकने वाली माला है। इनके तीन नेत्र हैं। इनसे विद्युत के समान चमकीली किरणें नि:सृत होती रहती हैं। मां की नासिका के श्वास-प्रश्वास से अग्नि की भयंकर ज्वालाएं निकलती रहती हैं। इनका वाहन गर्दभ या गधा है। देवी कालरात्रि राक्षसों का नाश करती है।

नवरात्रि के आठवे दिन दुर्गा के आठवें रूप महागौरी की उपासना की जाती है। देवी ने कठिन तपस्या करके गौर वर्ण प्राप्त किया था। देवी शुचिता, करूणा, सौम्यता के लिए जानी जाती है। नवीं शक्ति 'सिद्धिदात्री' देवी सरस्वती का स्वरूप हैं, जो श्वेत वस्त्रालंकार से युक्त सिद्धिदात्री महाज्ञान और मधुर स्वर से भक्तों को सम्मोहित करती हैं। सिद्धि का अर्थ है अलौकिक शक्ति और दात्री का आशय है देने वाली। सिद्धिदात्री सभी सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं, जो पूर्ण होती हैं।

नवरात्रि के नौवें दिन नौ कन्याओं को श्रद्धा एवं प्रेम के साथ घर पर आमंत्रित करके हलवा-पूरी, सब्जी, फल एवं चने आदि सात्विक आहार का भोग लगाया जाता है और सामर्थ्य के अनुसार उपहार एवं दक्षिणा दी जाती है। देवी का पूजन कुछ क्षेत्रीय मान्यताओं पर भी आधारित है। कई स्थानों पर भक्त महा अष्टमी को यह कार्यक्रम करते हैं। कुछ भक्त रामचरितमानस का पाठ भी करते हैं। शारदीय नवरात्रि में प्रभु श्रीराम रामेश्वरम धाम में समुद्र तट पर भगवती मां के नौ स्वरूपों की आराधना करते हैं और चार वेदों के ज्ञाता सभी ग्रहों को अपने वश में करने वाले महान विद्वान लंकापति राजा रावण को पराजित करने का

वरदान प्राप्त करते हैं। नवरात्रि के दसवें दिन राम-रावण का समर, असत्य पर सत्य, छल पर विश्वास एवं अहंकार पर परोपकार की विजय के साथ समाप्त होता है जिसे विजयदशमी या दशहरा के रूप में उत्सव मनाते हैं।

भारतीय इतिहास नारी की वीरगाथाओं से भरा पड़ा है। नारी को शक्ति तथा घर की आत्मा और प्राण माना गया है। ईश्वर ने नारी को एक जननी के रूप में सम्मान देकर धरती पर भेजा है। नारी को मां के रूप में तो ममता की मूरत कहा गया है। बेटी, बहन, कुलवधु, पत्नी और मां जैसे अलग-अलग रूपों में नारी सही मायनों में एक परिवार की आन, बान और शान होती है। यदि कहा जाए कि महिलाएं आज किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। घर-परिवार से लेकर बाहर तक की जिम्मेदारी आज महिलाएं बखूबी निभा रही हैं। चिकित्सा, विज्ञान, इंजीनियरिंग, उच्च प्रौद्योगिकी से संबंधित सभी क्षेत्रों में महिलाएं आज नेतृत्व प्रदान कर रही हैं। व्यापार, अतंरिक्ष, खेल, राजनीति इत्यादि क्षेत्रों में भी वे नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। न केवल सिविल सेवाओं में बल्कि पुलिस बल तथा सैन्य सेवाओं में भी सक्षम अधिकारी के रूप में उनका दबदबा निरंतर बढ़ रहा है। पूरी दुनिया में माता सीता, सती सावित्री, तारा, कुंती, मैत्रेयी, गार्गी, रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, ताराबाई, लक्ष्मी सहगल, पद्मावती, हाड़ी रानी, इंदिरा गांधी, राजकुमारी अमृत कौर, दुर्गाबाई देशमुख, सुषमा स्वराज, सुचेता कृपलानी, सरोजिनी नायडू, सुमित्रा महाजन, मीरा कुमार, सावित्रीबाई फुले, मेधा पाटकर, अरुणा राय, सालुमारदा थिमम्क्का, आशापूर्णा देवी, रीता फारिया, सुष्मिता सेन, विद्या बालन, शोभना चंद्रकुमार पिल्लई, अमृता प्रीतम, लता मंगेशकर, मदर टेरेसा, शकुंतला देवी, टेसी थॉमस, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, किरण मजूमदार-शॉ, इंदिरा नूई, वाणी कोला, वंदना लूथरा, चंदा कोचर, मीरा नायर, अरुंधति भट्टाचार्य, किर्थिगा रेड्डी, नेहा किरपाल, चोकिला अय्यर, बछेंद्री पाल, नीता अंबानी, सावित्री जिंदल, न्यायमूर्ति फातिमा बीबी, जस्टिस अन्ना चांडी, इंदु मल्होत्रा, किरण बेदी, कंचन चौधरी, सरला ठकराल, कैप्टन प्रेमा माथुर, नीरजा भनोट, हर्षिनी कान्हेकर, अवनि चतुर्वेदी, साइना नेहवाल, दीपिका पल्लिकल, तानिया सचदेव, मिताली राज, मैरी कॉम, विनेश फोगाट, मनु भाकर, इत्यादि अनेक भारतीय महिलाओं ने अपनी उपलब्धियों से तमाम भारतीयों को न केवल गौरवान्वित किया बल्कि यह भी साबित किया कि महिलाएं आज के जमाने में किसी से कम नहीं हैं। हम इन महान और विदुषी नारियों के व्यक्तित्व, त्याग, तपस्या और साहस की शौर्यगाथाओं से प्रेरणा लेते हैं।

युद्ध की भयानकता

चाँद सिंह दहिया
सहायक लेखा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) हरियाणा, चंडीगढ़ कार्यालय

डूबते सूरज की छाया में, जहाँ धरती की धड़कन दूर से आती चीखों की गूंज से दब जाती है। आज के युद्ध शांति के आकाश को निराशा के रंगों से रंग देते हैं। दुनिया, जो कभी सपनों का पालना हुआ करती थी, अब अपने ही विरोधाभासों के बोझ तले काँप रही है, जहाँ मानवता की सबसे बड़ी जीत उसके सबसे गहरे जख्मों से ढक गई है। युद्ध का मैदान अब कोई दूर का अखाड़ा नहीं रह गया है। यह हमारे अस्तित्व के ताने-बाने में समा गया है, जीवन को ऐसे तरीके से छूता है जिसे देखा नहीं जा सकता लेकिन गहराई से महसूस किया जा सकता है।

एक समय युद्ध तलवारों और ढालों से लड़े जाते थे, आदमी एक दूसरे का सामना करते थे, आँख से आँख मिलाते थे, दिल से दिल मिलाते थे। अब वे ड्रोन की खामोश गूँज के साथ सामने आते हैं, अदृश्य एल्गोरिदम राष्ट्रों के भाग्य को निर्धारित करते हैं। यह पिक्सेल और कोड में लड़ा जाने वाला युद्ध है, आर्थिक प्रतिबंधों और साइबर आक्रमणों की फुसफुसाहट में। फिर भी, कीमत वही है-खून बहा घर खो गए, सपने बिखर गए। पीड़ितों के चेहरे आँकड़ों की धुंध में धुंधले हो सकते हैं, लेकिन उनकी कहानियाँ किसी भी गिरने वाले बम से ज़्यादा ज़ोर से चीखती हैं।

बच्चे, अपनी कोमल उम्र के लिए बहुत बड़ी आँखों के साथ अपनी माँ के हाथों को पकड़ते हैं क्योंकि उनकी दुनिया की दीवारें ढह जाती हैं। उनकी हँसी जो कभी एक उम्मीद भरे कल की धुन थी. अब गोलियों की आवाज की लय में बदल गई है। उनकी ज़मीन की नदियाँ, जो कभी आसमान को प्रतिबिम्बित करती थीं अब उनकी मासूमियत की राख को बहा ले जाती हैं। और मिट्टी जो उपजाऊ है, अपने लोगों के दुख को गहराई से पीती है, फसलें नहीं, बल्कि कब्रें उगाती है।

इस रंगमंच में, खिलाड़ी सिर्फ सैनिक ही नहीं हैं, बल्कि राजनेता, मुनाफाखोर और कठपुतली भी हैं। वे कृत्रिम रोशनी से जगमगाते कमरों में बैठते हैं, खाइयों से बहुत दूर उनकी कलम और अनुबंध किसी भी हथियार की तरह घातक हैं। वे स्वतंत्रता या सम्मान के लिए नहीं, बल्कि सत्ता, संसाधनों और नियंत्रण के लिए युद्ध लड़ते हैं। और युवा, आशावान एवं बहादुर मोहरे आगे बढ़ते हैं, इस बात से अनजान कि वे धोखे से बने रास्तों पर चल रहे हैं।

फिर भी इस निराशा के बीच मानवता की आत्मा टिमटिमाती है, नाजुक लेकिन अडिग। मलबे में एक पिता एक अस्थायी घर बनाता है उसके हाथ कच्चे हैं लेकिन उसका संकल्प दृढ़ है। शिविरों में, एक माँ लोरी गुनगुनाती है, अपने बच्चे के सपनों के ताने-बाने में आशा के धागे बुनती है। अजनबी अपने आखिरी निवाले साझा करते हैं। उनका साझा दुख किसी भी जंजीर से ज्यादा मज़बूत बंधन बनाता है। मानव हृदय, हालांकि क्षतिग्रस्त है, एक लय के साथ धड़कता है जो विनाश के कोलाहल के आगे झुकने से इनकार करता है।

लेकिन यह भावना कब तक बनी रहेगी ? कितने और बच्चों को अपना बचपन खोना होगा? कितने और सूर्यास्त धुएं से अस्पष्ट होंगे? कवि और स्वप्नदर्शी चिल्लाते हैं, उनकी आवाज़ उदासीनता के शोर में डूब जाती है। वे हमें याद दिलाते हैं कि युद्ध, युद्ध के मैदानों पर समाप्त नहीं होते। उनकी गूँज पीछे छूट

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गए लोगों के दिलों और दिमागों में बनी रहती है। वे पीढ़ियों तक लहराते हैं. उनके निशान राष्ट्रों के भविष्य को आकार देते हैं।

दुनिया अक्सर खामोशी से देखती है, कभी-कभी क्षणिक आक्रोश में। क्या मानवता सुन्न हो गई है, या यह बस पीड़ा की भयावहता से अभिभूत है? स्क्रीन जो हमें इन दूर की भयावहताओं से जोड़ती हैं, वे हमें संवेदनहीन भी बनाती हैं, जीवन को छवियों और कहानियों को सुर्खियों में बदल देती हैं। और फिर भी, हर आंसू में, हर फुसफुसाती प्रार्थना में, बदलाव का बीज छिपा होता है।

आज के युद्धों में संधियों और युद्ध विराम से कहीं ज्यादा की ज़रूरत है; वे हिसाब-किताब की मांग करते हैं। वे एक ऐसी दुनिया की मांग करते हैं जो लाभ से ज़्यादा जीवन को महत्व देती हो। विजय से ज्यादा करुणा को महत्व देती हो। वे हमें सीमाओं और विचारधाराओं से परे देखने उस साझा मानवता को पहचानने का आग्रह करते हैं जो हम सभी को बांधती है। हर गिराए गए बम के लिए, एक पुल बनाया जाना चाहिए; हर खोए हुए जीवन के लिए, एक हज़ार लोगों को बचाना होगा।

अंत में, सवाल यह है कि क्या हम इस आह्वान पर ध्यान देंगे ? क्या हम अपने मतभेदों से ऊपर उठेंगे और शांति का चुनाव करेंगे, क्षणिक संघर्ष विराम के रूप में नहीं, बल्कि एक दृढ़ प्रतिबद्धता के रूप में ? इसका उत्तर कुछ लोगों के हाथों में नहीं, बल्कि बहुतों के दिलों में है। और शायद, एक दिन, जब सूरज डूबेगा, तो वह क्षितिज नहीं, बल्कि सोने के खेतों पर डूबेगा, और धरती राहत की सांस लेगी, अपने बच्चों को स्थायी शांति की गर्मी में झुलाएगी।

शहीद क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा - भगत सिंह के राजनीतिक गुरु

आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा)
कृषि, खाद्य एंव जल संसाधन

वीर मृत्यु से कभी भयभीत नहीं होते,
उसे हँस कर गले लगाते हैं,
फूलों की कोमल शैया समझ,
फांसी के तख़्त पर चढ़ जाते हैं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में क्रांतिकारियों का अहम योगदान भुलाया नहीं जा सकता। उन्हें अपने शौर्य, साहस, त्याग एवं बलिदान के लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा। उन्होंने नागरिकों को अंग्रेजों के खिलाफ खुलेआम विद्रोह करने और स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए हथियार उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

पंजाब के लुधियाना जिले के 'सराबा' नामक ग्राम में जन्मे (24 मई, 1896), करतार सिंह सराभा भारत के प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों में से एक थे । केवल उन्नीस वर्ष की आयु में ही उन्होंने देश के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। उनके बलिदान की शौर्य गाथा आज भी हम भारतवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है ।

प्रारंभिक जीवन

बाल्यावस्था में ही सराभा के पिता का स्वर्गवास हो गया था।

उनके दादा ने उनका लालन-पालन किया था। सराभा ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा लुधियाना में प्राप्त की थी। नवीं कक्षा पास करने के पश्चात् वे अपने चाचा के पास उड़ीसा चले गये और वहीं से हाईस्कूल की परीक्षा पास की।

बंगाल विभाजन और क्रांति का प्रभाव

1905 ई. के 'बंगाल विभाजन' के विरुद्ध क्रांतिकारी आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था, क्रांतिकारी विचारधारा उनके मन मस्तिष्क

की गहराई तक पहुँच चुकी थीं। जिससे प्रभावित होकर करतार सिंह सराभा क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित हो गए।

लाला हरदयाल का साथ

1911 ई. में सराभा अपने कुछ सम्बन्धियों के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से अमेरिका चले गये। वहीँ पर उनका सम्पर्क , ग़दर पार्टी के संस्थापक, लाला हरदयाल से हुआ, जो अमेरिका में रहते हुए भी भारत की स्वतंत्रता के लिए निरंतर संघर्ष कर रहे थे।

लाला हरदयाल

सराभा हमेशा उनके साथ रहते थे और प्रत्येक कार्य में उन्हें सहयोग देते थे। 25 मार्च, 1913 ई. में अमेरिका के ओरेगन प्रान्त में भारतीयों की एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसके मुख्य वक्ता लाला हरदयाल थे। उन्होंने सभा में भाषण देते हुए कहा था, "मुझे ऐसे युवकों की आवश्यकता है, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण दे सकें।" इस पर सर्वप्रथम करतार सिंह सराभा ने उठकर अपने आपको स्वंयसेवक के रूप में प्रस्तावित किया।

ग़दर समाचार पत्र के सम्पादन कार्य की ज़िम्मेदारी

इसी सभा में भारत की स्वतंत्रता का प्रचार करने के उद्देश्य से 'गदर' नामक एक समाचार पत्र निकालने का निश्चय किया गया। इसे कई भाषाओं में प्रकाशित किये जाने और जिन-जिन

देशों में भारतवासी रहते थे, उन सभी में इसे भेजने का निर्णय लिया गया। फलत: 1913 ई. में 'गदर' प्रकाशित हुआ। इसके पंजाबी संस्करण के संपादन का कार्य सराभा ही करते थे।

विद्रोह की योजना

1914 ई. प्रथम विश्व युद्ध' प्रारम्भ होने से अंग्रेज़ बहुत कमज़ोर हो गए। इस स्थिति का फायदा उठाते हुए 'ग़दर पार्टी' के कार्यकर्ताओं ने भारत में विद्रोह करने की योजना बनाई कि जिससे भारत को स्वतंत्रता मिलने की सम्भावना थी। अत: अमेरिका में रहने वाले चार हज़ार भारतीय इसके लिए तैयार हो गये। उन्होंने गोला-बारूद और पिस्तौलें ख़रीदीं और भारत के लिए रवाना हो गए।

रवाना होने वाले उन लोगों में से एक सराभा भी थे। लेकिन भेद खुल जाने के कारण बहुत से लोगों को भारत के समुद्री तट के किनारे पर पहुँचने से पूर्व ही बन्दी बना लिया गया। सराभा अपने साथियों के साथ किसी प्रकार से बच निकलने में सफल रहे। अब पंजाब पहुँचकर उन्होंने गुप्त रूप से विद्रोह के लिए तैयारियाँ आरम्भ कर दीं।

उन्होंने पंजाब के क्रांतिकारियों को संगठित किया और चारों ओर घूम-घूमकर फौजियों को विद्रोह करने हेतु प्रेरित किया। यदि भेद न खुलता, तो सारे भारत में एक साथ क्रांति की अग्नि की लपटों में ब्रिटिश शासन जल कर राख हो जाता।

सराभा की गिरफ्तारी

क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस को अंग्रेज़ों की बढ़ती छापेमारी का एहसास था इसलिए उन्होंने करतार सिंह सराभा को क़ाबुल चले जाने का परामर्श दिया था। अत: उन्होंने क़ाबुल के लिए प्रस्थान कर दिया। पर काबुल जाते समय रास्ते उनके मन में यह विचार आया कि इस तरह छिपकर भागने से अच्छा है कि वे देश के लिए फाँसी के फंदे पर चढ़कर अपने प्राण न्यौछावर कर दें।

क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस

ऐसा विचार आते ही वे, काबुल के रास्ते में आने वाली वजीराबाद की फौजी छावनी में चले गये और वहाँ उन्होंने फौजियों को देश की स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करते हुए एक भाषण में कहा, "अंग्रेज़ विदेशी हैं। हमें उनकी बात नहीं माननी चाहिए। हमें आपस में मिलकर अंग्रेज़ी शासन को समाप्त कर देना चाहिए।" सराभा ने गिरफ्तार होने के लिए ही ऐसा भाषण दिया था। फलत: उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस अवसर पर उन्होंने बड़े गर्व के साथ स्वीकार किया कि वे अंग्रेज़ी शासन को समाप्त करने के लिए सैनिक विद्रोह करना चाहते थे।

लाहौर षड्यंत्र के अंतर्गत मुकदमा

करतार सिंह सराभा पर अंग्रेज़ों ने शासन को पलटने का अभियोग लगाकर 'लाहौर षड़यन्त्र' के नाम से मुकदमा चलाया गया। उनके साथ अन्य 63 क्रांतिकारियों पर भी मुकदमा

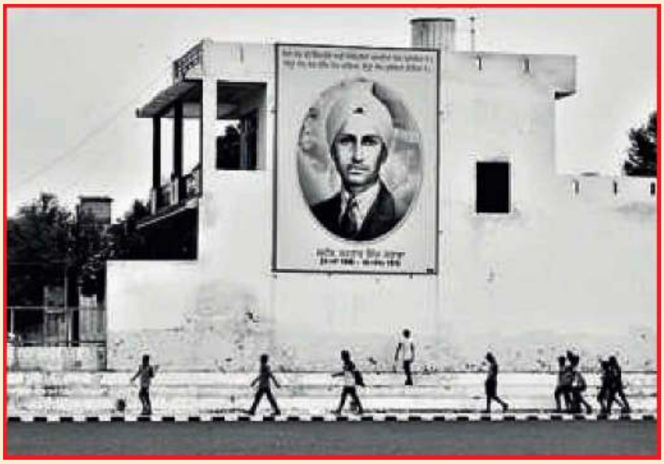

चलाया गया था। सराभा ने अदालत में अपने अपराध को स्वीकार करते हुए ये शब्द कहे, "मैं भारत में क्रांति लाने का समर्थक हूँ और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अमेरिका से यहाँ आया हूँ।

यदि मुझे मृत्युदंड दिया जायेगा, तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझूँगा, क्योंकि पुनर्जन्म के सिद्धांत के अनुसार मेरा जन्म फिर से भारत में होगा और मैं मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए काम कर सकूँगा।" जज ने उन 63 व्यक्तियों में से 24 को फाँसी की सज़ा सुनाई। जब इसके विरुद्ध अपील की गई, तो सात व्यक्तियों की फाँसी की सज़ा पूर्ववत् रखी गई थी। उन सात व्यक्तियों के नाम थे - करतार सिंह सराभा, विष्णु पिंगले, काशीराम, जगतसिंह, हरिनाम सिंह, सज्जन सिंह एवं बख्शीश सिंह। फाँसी पर झूलने से पूर्व सराभा ने यह शब्द कहे-

"हे भगवान मेरी यह प्रार्थना है कि मैं भारत में उस समय तक जन्म लेता रहूँ, जब तक कि मेरा देश स्वतंत्र न हो जाये।"

वीरगति

16 नवम्बर, 1915 ई. को सराभा हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर झूल गये। जज ने उनके मुकदमे का निर्णय सुनाते हुए कहा था, "इस युवक ने अमेरिका से लेकर हिन्दुस्तान तक अंग्रेज़ शासन को उलटने का प्रयास किया। इसे जब और जहाँ भी अवसर मिला, अंग्रेज़ों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया। इसकी अवस्था बहुत कम है, किन्तु अंग्रेज़ी शासन के लिए बड़ा भयानक है।"

जेल में दी गयी यातनाओं का भाई परमानन्द द्वारा वर्णन

भाई परमानन्द जी (भारतीय राष्ट्रवादी और प्रमुख नेता) ने सराभा के जेल के जीवन का वर्णन करते हुए लिखा, "सराभा को कोठरी में भी हथकड़ियों और बेड़ियों से युक्त रखा जाता था। उनसे सिपाही बहुत डरते थे। उन्हें जब बाहर निकाला जाता था, तो सिपाहियों की बड़ी टुकड़ी उनके आगे-पीछे चलती थी। उनके सिर पर मृत्यु सवार थी, किन्तु वे हँसते-मुस्कराते रहते थे।"

भगत सिंह के राजनीतिक गुरु

करतार सिंह सराभा, भगत सिंह के प्रेरणा स्रोत थे। भगत सिंह उनसे इतना प्रभावित थे कि वे हर समय उनकी तस्वीर अपने समीप रखते थे। करतार सिंह सराभा को 16 नवंबर 1915 को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी दे दी गई। लेकिन, उनकी शहादत ने देश में भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों की पौध तैयार कर दी थी।

सराभा भारत माँ के एक ऐसे लाल थे, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए असंख्य कष्ट सहे और यहाँ तक कि अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। ऐसे वीर सपूत का नाम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सदैव स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा।

समाज में नारी की स्थिति :
कल और आज

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110002

समाज में नारी की भूमिका का पतन:

महाभारत काल में नारी के पतन का जीवंत उदाहरण मिलता है जब युधिष्ठिर अपनी पत्नी द्रौपदी को जुए में हार जाते हैं व द्रौपदी पर दुर्योधन का अधिकार हो जाता है व द्रौपदी का अपमान करने के लिए दुर्योधन उन्हें कौरवों की सभा में बुलाते हैं। महाभारत युद्ध के बाद समाज बिखर गया, राष्ट्र राजनीतिक रूप से शून्य हो गया था और धर्म का पतन भी हो चला था। युद्ध में मारे गए पुरुषों की स्त्रियाँ विधवा होकर असहाय हो चली थीं। राजनीतिक शून्यता के कारण राज्य असुरक्षित होने लगे। असुरक्षित राज्य में अराजकता व मनमानी बढ़ गई व नारियां सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण का शिकार होने लगी तथापि यह दौर नारियों के लिए इतना बुरा नहीं था जितना मध्यकाल रहा। प्राचीन समय में पुरुष के साथ चलने वाली नारी मध्य काल में पुरुष की संपति की तरह समझी जाने लगी। धर्म और समाज के जंगली कानून ने नारी को पुरुष से नीचा और निम्न घोषित कर उसे उपभोग की वस्तु बनाकर रख दिया। नारियां मध्यकाल के सामंतवादी युग में दुर्बल होकर शोषण का शिकार होने लगीं। उसके मूल अधिकारों पर प्रतिबंध लगाकर पुरुष को हर जगह बेहतर बताकर नारी के अवचेतन में शक्तिहीन होने का एहसास जगाया गया जिसके चलते उसे आसानी से विद्याहीन, पराक्रमहीन व बलहीन कर दिया गया। समाज, देश और धर्म में नारी को अनुपयोगी बताया गया ताकि वह अपने जीवन यापन, इज्जत और आत्मरक्षा के लिए पूर्णतः पुरुष पर निर्भर हो जाए। इस तरह के भय और आतंक के माहौल के कारण हिंदुओं में भी पर्दाप्रथा, बालविवाह प्रथा और नारियों को शिक्षा से दूर रखने का चलन बढ़ गया व उत्तरोतर नारियों की स्थिति दयनीय होती चली गई। बारहवीं शताब्दी में मुहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद जब तुर्कों ने भारत में अपना स्थायी निवास बना लिया तब भारतीय संस्कृति में एक युगांतर आ गया क्योंकि तुर्कों की संस्कृति भारतीय संस्कृति की पूर्णतया विरोधी थी। उनके द्वारा लड़कियों को निरंतर पर्दे में रखना, उन्हे भोग मात्र की वस्तु समझना तथा पुरुषोचित अधिकारों से उन्हे वंचित रखना ये कुछ ऐसे मुद्दे थे जो भारतीय समाज में घुल मिल गए। तुर्क पुरुष योद्धा बहुत बड़ी संख्या में भारत आए और उनकी कुदृष्टि भारतीय कन्याओं पर पड़ी और तब तुर्कों से अपनी कन्या को बचाने के लिए बाल विवाह परंपरा का उदय हुआ। परिणामस्वरूप भारत में सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर रोक, बाल विवाह, राजस्थान के राजपूतों में मुस्लिमों की जौहर प्रथा, हिन्दू क्षत्रिय शासकों की बहुविवाह प्रथा इत्यादि कुरीतियों ने भारतीय समाज में अपनी मजबूत पैठ बना ली। महिलाओं को शोषण अत्याचार जैसी कुरीतियों से आज़ादी दिलाने के लिए तथा सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, प्रत्येक क्षेत्र में समानता का अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से जिस आंदोलन का प्रारम्भ हुआ वह नारीवाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

भारत में नारीवाद आंदोलन:

भारत में नारीवाद का विकास 19वी सदी से माना जाता है। इस सदी में महिलाओं की क्षमता, योग्यता और उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण समाज में चिंतन और विचार का विषय बन गया। भारत में नारी, अध्ययन और विमर्श का विषय न होकर पूजा की देवी के रूप में स्थापित किया गया है, किन्तु समय के साथ पितृसतात्मक समाज में महिलाओं के लिए किए जाने वाले दोयम दर्जे के व्यवहार और व्यवस्था ने इस विषय को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखने को बाध्य किया। ईस्ट इंडिया कंपनी के बंगाल और महाराष्ट्र के साथ बढ़ते व्यापार से कंपनी के कर्मचारियों का संपर्क भारतीयों के साथ बढ़ा, इसने भारतीय समाज के आचार विचार और वेषभूषा को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। उच्च वर्ग ने स्वयं को अंग्रेज़ो के समकक्ष बनाने के लिए उनकी वेश भूषा और तौर तरीकों को अपनाना शुरू किया, इससे भारत में महिलाओं के प्रति किए जाने वाले व्यवहार के प्रति उनका ध्यान आकर्षित हुआ। विदेशी शिक्षा ने इस चिंतन का दायरा विस्तृत कर दिया। उस समय प्रचलित सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बद्विवाह, बेमेल विवाह इन सामाजिक कुरीतियों को बुद्धिजीवियों ने समझा और परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया।

भारत में नारीवाद तीन चरणों में विभाजित किया गया है:

प्रथम चरण 1850-1915:

इस चरण में महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय थी। समाज में काफी कुरीतियाँ विद्यमान थी, परम्पराओं एवं धर्म के नाम पर

महिलाओं का निरंतर शोषण हो रहा था परंतु कुछ पुरुष समाज सुधारवादी विचारकों जैसे दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द, सैयद अहमद खाँ ने नारियों की स्थिति में सुधार किया व समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया।

राजा राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज की स्थापना की तथा 1829 में सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम पारित कराया, ईश्वरचंद्र विद्यासागर तथा देवेंद्र नाथ टैगोर के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, केशव चन्द्र सेन तथा विद्यासागर के प्रयासों से विवाह अधिनियम तथा संपति का अधिकार अधिनियम लागू कराए गए। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, पंडिता रमाबाई रानाडे आदि ने शिक्षा के लिए प्रयास किया।

द्वितीय चरण 1915-1947:

इस चरण में नारीवाद का द्वितीय चरण महिला सुधार की तरफ अग्रसर हुआ। गांधी जी ने समाज में नारी की भागीदारी बढ़ाई बल्कि नारी को स्वयं की शक्ति का आभास कराया। राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, सरला देवी इत्यादि महिलाओं ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान भारत के स्वंत्रता संग्राम में देकर राजनीतिक क्षेत्र में इतिहास रचा। नमक आंदोलन, खादी निर्माण, सत्याग्रह महिलाओं के प्राकृतिक स्वभाव सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहनशीलता के पर्याय बन गए।

तृतीय चरण 1947 से आज तक:

स्वतंत्र भारत में यह आंदोलन थोड़ा ठहर सा गया। आरंभिक दौर में यह मान लिया गया कि अब सब ठीक हो गया। महिलाओं

को कानूनी और संवैधानिक अधिकार प्रदान किए जाने के साथ ही उनमें समानता स्थापित हो गई। अरुणा आसफ अली 1958 में दिल्ली नगर निगम की प्रथम महापौर चुनी गई। निसंदेह महिलाओं की स्थिति में सुधार तो हुआ परंतु आज भी महिलाएं उत्पीड़न का शिकार हैं। यही कारण है कि समाज सुधारकों के अथक प्रयासों के बाद भी कन्या भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा, देह व्यापार, बालिका अपहरण, दहेज प्रथा, पति एवं ससुराल पक्ष द्वारा मारना-पीटना यहाँ तक कि उनकी हत्या तक कर देना आदि बुराइयों भारतीय समाज में अभी भी व्याप्त हैं। इस चुनौती से लड़ने के लिए धैर्य, अनुशासन, मर्यादा आदि शस्त्रों की आवश्यकता है। वर्तमान में नारीवाद दो दिशाओं का अनुसरण कर रहा है: नारीवाद में एक तरफ वे कार्यकर्ता हैं, जो नारी की समस्याओं को उजागर करके, स्त्री पुरुष प्रतिद्वंदी नहीं हैं समझकर सहभागी के रूप में समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं। वे भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं। नारीवाद की यह विचारधारा सभी मुद्दे महिला व पुरुष को एक गाड़ी के दो पहिये मानकर सुलझाना चाहती है। वहीं दूसरी विचारधारा में पुरुष और महिला एक दूसरे के सामने प्रतिद्वंदी बन कर खड़े हैं। चूंकि प्राचीन समय से ही नारियों का स्थान समाज में सम्माननीय रहा है, इसलिए -

"जब होगा स्त्री का हर घर सम्मान
तभी बनेगा हमारा भारत महान
बेटियों को दो इतनी पहचान
बड़ी होकर बने देश की शान"

नेतृत्व में
प्रभावी सम्पर्क की शक्ति

राजीव भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.-प्रथम)
राजस्थान, जयपुर

प्रभावी सम्पर्क सफल नेतृत्व की नींव है। यह वह मार्ग है जिसके माध्यम से मुखिया अपने दलों को प्रेरित, उत्साहित और साझा लक्ष्यों की ओर मार्गदर्शन करते हैं। इस डिजिटल युग में, जहाँ सूचना तेजी से प्रवाहित होती है और अपेक्षाएँ अधिक होती हैं, प्रभावी सम्पर्क करने की क्षमता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। मैं इसे विभिन्न उपविषयों में विभाजित करूंगा ताकि नेतृत्व में प्रभावी सम्पर्क के विभिन्न आयामों का अन्वेषण किया जा सके, जिसमें दल के मनोबल, निर्णय-निर्माण, संघर्ष समाधान और संगठनात्मक संस्कृति पर इसका प्रभाव सम्मिलित है।

विश्वास और संबंधों की नींव

दल के सदस्यों के साथ विश्वास और सकारात्मक संबंधों की स्थापना प्रभावी नेतृत्व के केंद्र बिन्दु है। सम्पर्क इन संबंधों को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब मुखिया खुलकर, ईमानदारी से, और निरंतर संवाद करते हैं, तो वे पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं। इससे विश्वास का निर्माण होता है और दल के सदस्य खुद को महत्वपूर्ण और सम्मानित महसूस करते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रभावी सम्पर्क मजबूत व्यक्तिगत संबंधों के विकास को सुगम बनाता है, जो समग्र सहयोग और संगठनात्मक सफलता के लिए आवश्यक हैं।

दल अपने मुखिया को उनके व्यवहार और अधिकारों के वितरण में पारदर्शी होते हुए देखता है, और इस प्रकार संगठन प्रभावी तरीके से योगदान देना चाहता है। कार्यों की स्पष्टता हमेशा बेहतर और प्रभावी प्रदर्शन की ओर ले जाती है, क्योंकि भूमिकाओं के बारे में कोई भ्रम नहीं होता। मुखिया को दल के सदस्यों से अपेक्षाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित और संवादित करनी चाहिए, ताकि संदेह का कोई मौका न हो।

दलों को प्रेरित और प्रोत्साहित करना

प्रभावी मुखिया उत्कृष्ट संचारक होते हैं जो अपने दलों को असाधारण परिणाम हासिल करने के लिए प्रेरित और

प्रोत्साहित कर सकते हैं। स्पष्ट और प्रभावशाली सम्पर्क के माध्यम से, मुखिया संगठन के दृष्टिकोण और लक्ष्यों को व्यक्त कर सकते हैं, जिससे दल के सदस्यों में उद्देश्य और जुड़ाव की भावना विकसित होती है। संगठन के लक्ष्यों और अपेक्षाओं को साझा करके, मुखिया एक साझा उद्देश्य की भावना उत्पन्न कर सकते हैं और दल के सदस्यों को उनके काम का स्वामित्व लेने के लिए सशक्त बना सकते हैं। इसके अलावा, प्रभावी सम्पर्क का उपयोग उपलब्धियों को पहचानने और उनका संपादन करने के लिए किया जा सकता है, जिससे मनोबल बढ़ता है और निरंतर उच्च प्रदर्शन को प्रोत्साहन मिलता है।

मुखियाओं को किसी काम को अच्छी तरह से पूरा करने के लिए दल के सदस्यों की सराहना करनी चाहिए और उन्हें समय-समय पर पुरस्कृत करना चाहिए। सराहना भी एक तरह का प्रभावी सम्पर्क है, जो दल के सदस्यों द्वारा अच्छा प्रदर्शन करने के लिए आभार व्यक्त करता है। साथ ही, सुधार के लिए मुखियाओं द्वारा दी गई प्रतिक्रिया भी सराहना योग्य होती है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति को सुधारात्मक कदम उठाने और आवश्यक बदलाव करने में मदद करता है, जिससे और भी बेहतर और प्रभावी प्रदर्शन सुनिश्चित किया जा सकता है।

सूचित निर्णय लेने में सहायक

सूचित निर्णय लेने के लिए प्रभावी सम्पर्क आवश्यक है। प्रासंगिक जानकारी एकत्रित और साझा करके, मुखिया यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उसके दलों के पास उचित निर्णय लेने के लिए आवश्यक ज्ञान और समझ है। उन्मुक्त और ईमानदार संचार प्रवाह विचारों और दृष्टिकोणों के आदान-प्रदान की अनुमति देते हैं, जो अधिक नवोन्मेषी और प्रभावी समाधान प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रभावी सम्पर्क गलतफहमियों और विवादों को रोकने में मदद करता है, जो तब उत्पन्न हो सकते हैं जब जानकारी अधूरी या गलत होती है। बहस और चर्चा के बाद लिए गए निर्णय आमतौर पर उपयुक्त पाए जाते हैं क्योंकि उन्हें विभिन्न लाभ-हानियों को तौलने के बाद लिया जाता है। इसके अलावा, जब किसी निर्णय को लागू करने के सभी व्यावहारिक पहलुओं पर दलों के साथ संवाद और चर्चा की जाती है, तो यह अधिक प्रभावी कार्यान्वयन की ओर ले जाता है।

विवादों का समाधान और सहमति बनाना

विवाद संगठनात्मक जीवन का एक अपरिहार्य हिस्सा है। हालांकि, प्रभावी सम्पर्क विवादों को सुलझाने और सहमति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सभी संबंधित पक्षों को सक्रिय रूप से सुनकर, मुखिया मूल मुद्दों की पहचान कर सकते हैं और आपसी लाभकारी समाधान की दिशा में काम कर सकते हैं। स्पष्ट और प्रभावी सम्पर्क से विवादों को बढ़ने और संबंधों को नुकसान पहुंचाने से भी रोका जा सकता है। इसके अलावा, प्रभावी सम्पर्क का उपयोग कठिन वार्तालापों को सुगम बनाने और संवेदनशील विषयों को सम्मानपूर्वक और रचनात्मक तरीके से संबोधित करने के लिए किया जा सकता है। यदि सभी विवादों पर पहले से चर्चा और संवाद किया जाए, तो किसी निर्णय को स्वीकार किए जाने की संभावना अधिक होती है।

संगठनात्मक संस्कृति को आकार देना

सकारात्मक संगठनात्मक संस्कृति को आकार देने और बनाए रखने के लिए प्रभावी सम्पर्क आवश्यक है। संगठन के मूल्यों और अपेक्षाओं को संप्रेषित करके, मुखिया एक साझा पहचान और उद्देश्य की भावना विकसित कर सकते हैं। उन्मुक्त और ईमानदार सम्पर्क विश्वास, सम्मान और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, प्रभावी सम्पर्क का उपयोग विविधता, समावेशन, और नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने

के लिए किया जा सकता है। मुखियाओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके दल के सदस्य अपनी चिंताओं को समय पर व्यक्त करें ताकि उनका शीघ्र समाधान किया जा सके। यदि शिकायतों को लंबित रहने दिया जाए, तो यह निर्णय लेने और कार्यान्वयन प्रक्रिया में रुचि और भागीदारी की कमी का कारण बन सकती हैं।

दल के मुखिया के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह पूरे संगठन में विचारों के मुक्त और निष्पक्ष प्रवाह के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करे। प्रारंभिक चरण में मुद्दों को संबोधित करना दल के सदस्यों के बीच सकारात्मक माहौल बनाता है और उन्हें संगठन की संरचना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा महसूस कराता है। पहले से उन्मुक्त बहस और चर्चा से अधिक संगठित और संपूर्ण समाधान तैयार किया जा सकता है। यह प्रक्रिया नए और क्रांतिकारी विचारों को जन्म दे सकती है, जो संगठन के लिए बड़े दिशा निर्धारक साबित हो सकते हैं।

मुखियाओं के लिए प्रभावी सम्पर्क के साधन

सम्पर्क लिखित या मौखिक हो सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सम्पर्क प्रभावी हो, एक मुखिया को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि संचार सरल हो और मुद्दे या विषय को इस तरह से समझाए जो आसानी से समझ आ जाये। प्रभावी संचार का एक तरीका यह है कि बहुत ही सरल शब्दों/भाषा का उपयोग किया जाए और अत्यधिक तकनीकी शब्दावली से बचा जाए। किसी बिंदु को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों या चित्रणों का उपयोग विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में काफी मदद करता है।

मुखियाओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दल के सदस्यों ने संचार को सही ढंग से समझ लिया है। इसके लिए सारांश विवरण, महत्वपूर्ण बिंदुओं की पुनरावृत्ति, और पुष्टि एवं प्रतिक्रिया प्राप्त करने के माध्यम से समझ सुनिश्चित करनी चाहिए।

निष्कर्ष:

अंत में, प्रभावी सम्पर्क एक मौलिक नेतृत्व कौशल है जो आज के जटिल और प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक वातावरण में सफलता के लिए आवश्यक है। विश्वास बनाने, दलों को प्रेरित करने, निर्णय लेने में सहायता करने, विवादों को सुलझाने और संगठनात्मक संस्कृति को आकार देने के माध्यम से, प्रभावी सम्पर्क मुखियाओं को असाधारण परिणाम प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। जैसा कि कहा जाता है, "प्रभावी सम्पर्क सफलता की कुंजी है।"

नाउरू :
दुनिया का सबसे छोटा लोकतांत्रिक राष्ट्र

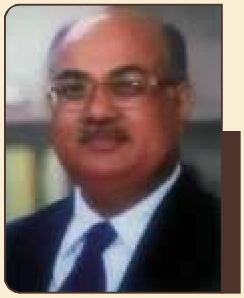

बिभाष रंजन मंडल, आईएएंडएएस
महानिदेशक (निरीक्षण) एवं
पूर्व महालेखापरीक्षक, नाउरू गणराज्य

जब मैंने मई, 2008 में नाउरू का दौरा किया तब वहां तकरीबन तीन वर्ष बिताए, तो मैंने वहां रहने के दौरान दुनिया के सबसे छोटे लोकतांत्रिक राष्ट्र के बारे में व्यापक नई जानकारी एवं अनुभव प्राप्त किया। यह इतना आकर्षक था कि इसे एक छोटे से पैराग्राफ में वर्णित नहीं किया जा सकता है। प्रवाल भित्तियाँ, शिखर, चारों ओर का समुद्र, 12 जनजातियों के लोग, उनकी किंवदंतियाँ, गीत, भाषा, संस्कृति आदि तथा ऐसे स्थान पर जीवन का अनुभव इस पृथ्वी के किसी अन्य स्थान पर नहीं किया जा सकता। इसे धरती पर स्वर्ग ही कहा जा सकता है जहां पूंजीवाद, लोकतंत्र एवं साम्यवाद एक साथ मिलते हैं तथा जो एक आदर्श समाज का निर्माण करते है। नाउरू यानी नौरो शब्द का अर्थ है, 'यूटोपिया'। प्राचीन नौरुअन मानते थे कि वे पृथ्वी के केंद्र में रह रहे हैं तथा वे ही इस धरती पर एकमात्र लोग हैं और इसके अलावा कुछ भी मौजूद नहीं है, क्योंकि नाउरू के पास कोई अन्य भूमि नहीं है!

नाउरू गणराज्य दुनिया का सबसे छोटा, एकल द्वीप, लोकतांत्रिक राष्ट्र है जिसका क्षेत्रफल केवल 21 वर्ग किमी (8.1 वर्ग मील) है तथा इसकी आबादी 11,500 है। यह मध्य प्रशांत में, अक्षांश 0' 32" दक्षिण तथा देशांतर 166' 55'' पूर्व में स्थित है, जो भूमध्य रेखा से सिर्फ 41 किमी दक्षिण में एक एकाकी द्वीप है। निकटतम द्वीप (165 समुद्री मील) किरिबाती (प्रारंभ में महासागरीय द्वीप) का बनाबा है। हांगकांग/मकाऊ से नौरू की दूरी 3000 समुद्री मील, दक्षिण-पूर्व में है। नाउरू का उच्चतम बिंदु समुद्र तल से 65 मीटर ऊपर है।

नाउरू का क्षेत्रफल 5,263 एकड़ है, इसकी संरचना अंडाकार (या आम के आकार की) है, इसकी परिधि लगभग 30 किलोमीटर है तथा यह प्रवाल भित्तियों से घिरा हुआ है, जो प्रशांत महासागर की निम्न ज्वारीय लहरों के कारण उजागर होती है। कठोर चट्टानी प्रवाल भित्ति एक संकीर्ण रेतीले समुद्र

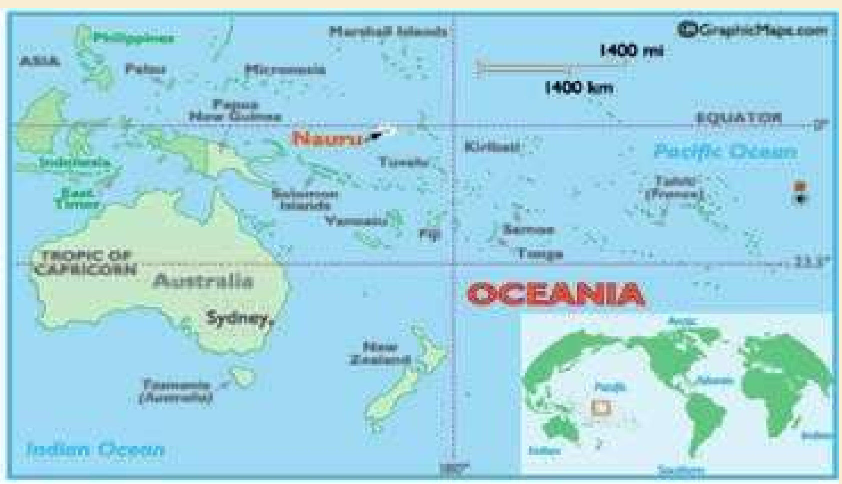

तट को घेरती है, जहाँ से जमीन थोड़ी ऊपर उठी हुई है, जिससे द्वीप में वृताकार वाला एक उपजाऊ क्षेत्र बनता है जिसकी चौड़ाई 150 से 300 गज तक है। तटीय क्षेत्र के भीतरी तरफ, एक प्रवाल चट्टान का निर्माण समुद्र तल से 40 से 100 फीट की ऊंचाई तक बढ़ जाता है, जिसका केंद्रीय पठार में विलय हो जाता है, जो कुछ स्थानों पर 200 फीट तक ऊंचा हो जाता है। पठार में व्यापक फॉस्फेट जमा है तथा फॉस्फेट के हटने से ऊबड़-खाबड़ स्थान बन जाता है जिसमें चूना-पत्थर के प्रवाल शिखर होते हैं जिनकी ऊंचाई पुरानी प्रवाल संरचना के तल से 30 से 50 फीट तक होती है।

भूवैज्ञानिक दृष्टि से, नाउरू बहुत पुराना भूभाग नहीं है। यह एक उठा हुआ प्रवाल द्वीप है। आम तौर पर इस तरह के प्रवाल द्वीप एक पट्टीनुमा भूभाग होते हैं जो लैगून की तरह घिरे होते हैं। नाउरू के मामले में, इस तरह के अधिकांश भूभाग समुद्र तल के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं क्योंकि लाखों साल पहले नाउरू मूल रूप से मध्य प्रशांत में एक अकेला ज्वालामुखी था। ऐसे ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण, प्रशांत महासागर के तल से सभी तरफ लगभग 3900 से 4,300 मीटर ऊपर भूमि उठ गई। यह ज्वालामुखीय समुद्री पर्वत लगभग 35 मिलियन वर्ष पुराना माना जाता है। आज के नाउरू के चारों ओर बहुत समृद्ध प्रवाल भित्तियाँ हैं तथा समुद्र की गहराई के कारण, जलीय जीवन की सबसे समृद्ध विविधता नाउरू के तट की गहराई में पाई जाती है।

फॉस्फेट जमा, द्वीप के मुख्य प्राकृतिक संसाधन जिस पर यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की सरकारों के मध्य समझौते के अंतर्गत ब्रिटिश फॉस्फेट आयुक्तों द्वारा काम किया गया था। द्वीप के कुल 5,263 एकड़ क्षेत्रफल में से 4,116 एकड़ को फॉस्फेट युक्त भूमि के रूप में वर्गीकृत किया गया है; शेष क्षेत्रों को नारियल भूमि, फॉस्फेट-नारियल भूमि और स्थायी आवास के लिए विनिर्दिष्ट भूमि में वर्गीकृत किया गया है। आंकड़ों से पता चलता है कि 1902 में फॉस्फेट भंडार की खोज के बाद से लेकर 1968 में नाउरू की स्वतंत्रता तक

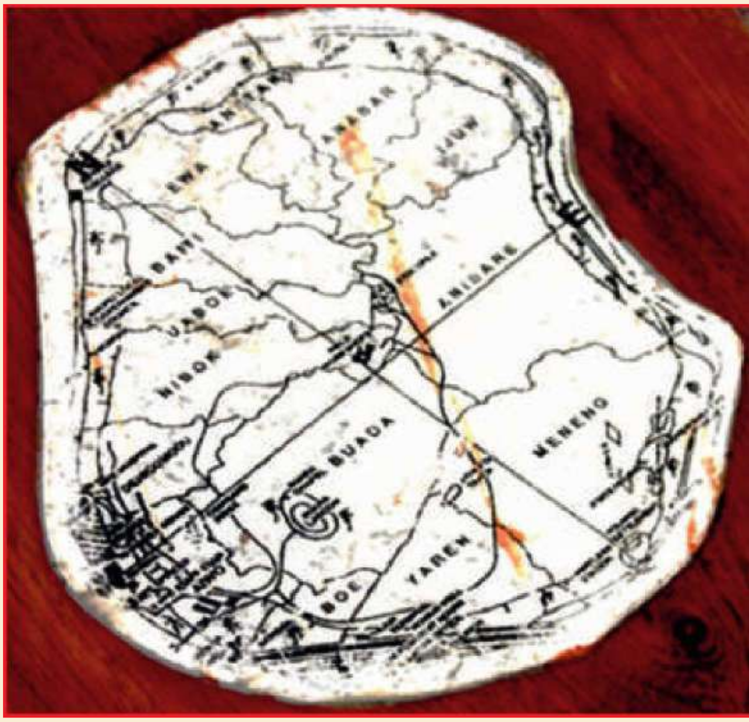

यह मेरे नौरुआन मित्र श्री रेनोस रेनिगे एजेगे का उपहार है, जो एक राजनेता एवं नौरुआन राजनीति पर टिप्पणीकार हैं. यह टोमानो लकड़ी, बहुत दुर्लभ तथा मजबूत है जिस पर फॉस्फेट रॉक मानचित्र के साथ नाउरू का मानचित्र दर्शाया गया है।

यह एक बहुत ही कीमती उपहार है, जो मुझे कभी नाउरू से मिला है और यह मेरे पास संरक्षित है। लेकिन मैं इसकी विशिष्टता के कारण यहां प्रदर्शित करना चाहता था। पॉलिश करने के बाद फॉस्फेट चट्टानें एक सुंदर वस्तु बन जाती हैं। इस रिक पर, नौरुअन जिलों को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है तथा सड़कों एवं सीमाओं के साथ मानचित्र बहुत स्पष्ट है। टोमानो की लकड़ी गहरे लाल रंग की होती है।

लगभग 25,000,000 टन फॉस्फेट निकाला गया एवं ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों को निर्यात किया गया।

नाउरू की खोज : 8 नवंबर 1798 को, नाउरू की खोज ब्रिटिश व्हेलिंग जहाज हंटर के कैप्टन जॉन फियरन ने न्यूजीलैंड से इस असामान्य मार्ग पर यात्रा करते समय की थी, जिन्होंने इस द्वीप का नाम "सुखद द्वीप" रखा था। इस द्वीप के लोग बहुत ही सुखद और मिलनसार थे तथा फ्रेंगिपानी फूलों की महक बहुत मनमोहक थी।

एकाकी द्वीप नाउरू : निम्न तालिका नाउरू तथा अन्य प्रशांत शहरों के बीच की दूरी को दर्शाती है जिससे यह पता चलता है कि इस ग्रह पर यह देश कितना अकेला है:

शहर/स्थान	समुद्री मील में दूरी	शहर/स्थान	समुद्री मील में दूरी
महासागरीय द्वीप (बानाबा, रिबाती)	165	(ट्रूक/चुक) (एफएसएम)	1,010
तरावा (किरिबाती)	370	मिडवे आइलैंड	1,970
क्वाजालीन (मार्शल द्वीप)	565	सिडनी	2,200
एनेवेटोक (मार्शल द्वीप)	765	पर्ल हार्बर	2,445
होनियारा (सोलोमन द्वीप)	779	टोक्यो	2,550
रबौल (पापुआ न्यू गिनी)	920	हांगकांग	3,000

वर्तमान किरिबाती द्वीप को पहले गिल्बर्ट द्वीप समूह के नाम से जाना जाता था तथा तुवालु को पहले एलिस द्वीप समूह के नाम से जाना जाता था।

हालाँकि नाउरू भूमध्य रेखा के करीब है, लेकिन यहाँ की जलवायु उपोष्णकटिबंधीय है, जो आर्द्र एवं शुष्क तथा अधिकतर वसंत ऋतु के साथ समुद्री हवाओं से प्रभावित होती है। शुष्क समय को पूर्वी व्यापारिक हवाओं द्वारा चिह्नित किया जाता है जो वर्ष के अधिकांश भाग में चलती रहती हैं और आमतौर पर पश्चिमी मानसून के समय के दौरान लगभग चार महीने (नवंबर से फरवरी) के लिए एक आर्द्र चक्र होता है। प्रशांत द्वीप में वार्षिक वर्षा कम होती है, औसतन लगभग 80 इंच प्रति वर्ष।

वनस्पति

द्वीप की वनस्पति बहुत समृद्ध नहीं है, सिवाय उस समय के जब नमी सबसे अधिक होती है और हर तरफ झाड-झंखाड़ ही दिखाई देता है। जहां फॉस्फेट का खनन किया गया है, वहां मूंगा शिखर धीरे-धीरे द्वितीयक वृद्धि से ढक रहे हैं। तटीय क्षेत्र में पांडनस* अथवा केतकी एवं नारियल के पेड़ पाए जाते हैं, जबकि द्वीप पर एकमात्र अन्य उपजाऊ क्षेत्र बुआडा लैगून के आसपास में नारियल, केले, अनानास, आम तथा कुछ अन्य फल एवं सब्जियां उगाई जाती हैं। हांगकांग एवं चीनी लोग निजी रूप से झील के किनारे विभिन्न सब्जियां उगा रहे हैं, जैसे पपीता, नींबू, गोभी, मिर्च आदि, इसके लिए वे आसपास के गड्ढों में उपलब्ध थोड़े से खारे पानी का उपयोग कर रहे हैं। ताइवान तकनीकी मिशन टमाटर, गोभी, मिर्च और कई अन्य सब्जियों की एक बहुत अच्छी किस्म भी उगा रहा है। लेकिन ये द्वीप के

* पांडनस अथवा केतकी - जिसके एक प्रकार को केवड़ा कहा जाता है जो सुगंध प्रदायक होता है।

पांडनस का पेड़ एवं फल

सूअरों एवं मुर्गियों को कम संख्या में द्वीप पर लाया गया है तथा ताइवान की कंपनियां अपने तकनीकी सहयोग से अधिक संख्या में सूअरों एवं मुर्गियों को लाने के लिए काम कर रही हैं। बुआडा लैगून तथा द्वीप के कुछ अन्य उत्तर-पूर्वी छोटे लैगूनों में, दूध-मछलियों एवं तिलापिया को प्रायोगिक आधार पर लाया गया है।

लिए पर्याप्त नहीं हैं। मेरे दोस्त नेल्सन के बुआडा लैगून के एक घर में केवल एक कटहल का पेड़ है।

द्वीप पर उपलब्ध लकड़ियों का कोई व्यावसायिक उपयोग नहीं है। टोमानो वृक्ष के तने और शाखाएं टेढ़ी-मेढ़ी तथा मजबूत लकड़ी होती हैं, तथा इनका उपयोग छोटे-मोटे फर्नीचर बनाने के अलावा किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जा सकता। पांडनस के पेड़ से एक पत्ता उत्पन्न होता है जिसका उपयोग घरेलू चटाई बनाने तथा अन्य घरेलू उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

नाउरू की मिट्टी अत्यधिक छिद्रयुक्त है और भूमि के किसी भी भाग में वर्षा का पानी जमा नहीं होता है। चूंकि वर्षा अनिश्चित है, इसलिए खेती केवल स्थानीय उपभोग के लिए फलों और सब्जियों की खेती तक ही सीमित है। कोई स्वदेशी जानवर नहीं हैं। पक्षी भी बहुतायत में नहीं हैं। कुत्तों को जर्मन कब्जे के समय में लाया गया था और उनमें से कुछ को पालतू बना लिया गया था या प्रादेशिक आदतों के कारण जंगल में छोड़ दिया गया था। भूमि पर बहुत सारे चूहे और अन्य छोटी संख्या में जानवर हैं। समुद्र मछलियों और अन्य जलीय जीवन से भरा है। हाल ही में

नाउरू के जिले

वर्तमान में, द्वीप 14 जिलों में विभाजित है। वे ऐवो, एनेटन, अनाबर, अनिबारे, बो, बुआडा, बैत्सी, डेनिगोमोडु (संक्षेप में, डेनिग), इवा, इजुव, मेनेंग, निबोक, उबो एवं यारेन हैं। नरुआन परंपरा के अनुसार, सभी जिले कुछ रंगों से जुड़े हुए हैं। मेनेंग एवं यारेन हरे - सदाबहार से जुड़े हुए हैं। बो लाल (हिबिस्कस) है। आइवो एवं बुआडा पीले तथा काले हैं (रॉयल बंगाल टाइगर का रंग)। डेनिगोमोडु, निबोक, उबो तथा बैत्सी काले एवं सफेद रंग से जुड़े हुए हैं। इवा, इजुव, एनेटन, अनाबर एवं अनिबारे नीले रंग से जुड़े हुए हैं। नाउरू में जमीन के हर टुकड़े का नाम नौरुआन नाम पर रखा गया है। जिलों के भीतर भी, व्यक्तिगत भूमि भागों का नाम कुछ नौरुआन शब्दों के नाम पर रखा गया है। जिलों के मूल नाम मूल स्थानीय नाम थे जिनका उपयोग जर्मन भूमि सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा किया गया था। यारेन नाउरू का राजधानी जिला है।

वर्तमान में, भूमि के भाग नाउरू भूमि समिति (एनएलसी) द्वारा तय किए जाते हैं तथा भूमि के प्रत्येक भाग के लिए नए नाम दिए जाते हैं। भूमि एवं सर्वेक्षण विभाग फॉस्फेट रॉयल्टी के वार्षिक वितरण के प्रयोजनों के लिए आधिकारिक राजपत्र में भूमि के भागों को अनुमोदित एवं अधिसूचित करता है। दोनों कार्यालय निबोक जिले में डोमानेब में स्थित हैं।

हिन्दुस्तान के गौरवः
‘गाय, गंगा और गांव’

यशवंत कुमार वर्मा
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
छत्तीसगढ़, रायपुर

भारत परंपराओं एवं संस्कृति से समृद्ध मानव मूल्यों पर आधारित एक संपन्न देश है। यहां ‘मोक्ष’ की धारणा से प्रेरित होकर कर्म किया जाना आदर्श जीवन का अंतिम उद्देश्य माना गया है। सेवा और परमार्थ की भावना भारत की जड़ है जिसकी शाखा अब विश्व के कई देशों में फैल रही है। पुरातन भारत की परंपरा रही है कि हर उस चीज, जिससे जीवन जुड़ा हुआ है को आस्था का रुप देकर सम्मान किया जाता रहा है जैसे- पर्वत, नदी, पेड़, पशु इत्यादि। यहां प्रेम, सहयोग एवं स्वास्थ्य को महत्व दिया जाता है जबकि पश्चिमी देश शक्ति तथा पूर्वी देश समृद्धि के पक्षधर हैं। भारत अपनी संस्कृति और विरासत से समझौता किए बिना विकास के मार्ग पर बढ़ना चाहता है ताकि किसी की भावना आहत न हो सके। जबकि अन्य देशों में किसी भी शर्त पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की ललक वैश्विक दृष्टि से अस्थिरता उत्पन्न करते हुए अन्य देशों के विकास में बाधक बन रही है। कहा जाता है कि ‘चढ़ाव के मार्ग में धीरे चलने में ही कुशलता है’, भारत इसी मार्ग पर धीरे ही सही पर चढ़ाव की ओर निरंतर अग्रसर है। देश के विकास में उसका इतिहास, मूल संस्कृति एवं जनमानस की अवधारणाएं मुख्य भूमिका निभाते हैं। भारत का इतिहास समृद्ध तो है ही सांस्कृतिक धरोहर भी उच्च आदर्शों से परिपूर्ण है।

'गाय'

भारत के आस्था के प्रतीकों मे से एक महत्वपूर्ण और पालतू पशु है। हिन्दू मान्यता के अनुसार पृथ्वी पर कामधेनु गाय का अवतरण देव-असुर संग्राम में अमृत मंथन के दौरान हुआ जिन्हे ऋषियों को दे दिया गया। ऋषिगण एकांत वन में ग्रामीण परिवेश से सुदूर निवास करते थे अतः उन्होने गाय से उत्पन्न हर वस्तु जैसे- दूध, गोबर एवं मूत्र को उपयोगी बनाने हेतु उसका उचित पालन एवं संरक्षण किया। गौतम बुद्ध पहले व्यक्ति थे जिन्होने सुत्तनिपात नामक धार्मिक मूलग्रंथ में गायों की सुरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। ब्राह्मण मूलग्रंथों ने बौध्द धर्म की शिक्षा को धार्मिक रंग दे दिया और गाय धीरे-धीरे आस्था के रुप में परिणत हो गयी। प्रेमचंद द्वारा रचित ‘गोदान’ से गाय की सामाजिक और धार्मिक मान्यता को स्पष्ट समझा जा सकता है। भारत में गौ सेवा से संबंधित कई आयोग एवं संगठन सक्रिय हो गए हैं। यहां कई त्यौहार गाय पर आधारित होते हैं; गौ हत्या तो गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है। गोधूली बेला (गाय के चारा ग्रास के बाद वापस घर आने का समय) को हिन्दू कर्मकांड में सर्वोत्तम मुहूर्त माना गया है। रायपुर, छत्तीसगढ़ के एक कपड़ा दुकान में एक गाय रोज विश्राम करने आती है और दुकानदार आत्मीयता के साथ उनका स्वागत करता है। यहां श्रावण मास में हरेली पर्व तथा कार्तिक मास में गोवर्धन पूजा के अवसर पर गाय का विशेष पूजन किया जाता है एवं उन्हे स्वादिष्ट पकवान का भोग कराया जाता है क्योंकि गाय को भारतीयों के इष्ट श्रीकृष्ण का प्रिय पशु माना गया है। लेकिन यह प्रथा अब केवल गांव देहात तक ही सिमट कर रह गयी है। गाय के कई नस्लें उपलब्ध होने से शहरी क्षेत्रों में यह व्यवसाय का एक प्रमुख माध्यम बन गयी है। आधुनिकता की मार इन बेजान पशुओं पर

भी पड़ी है, ग्रामीण इलाको में पशुपालन को लेकर रुचि अब पहले से बहुत कम देखी जा रही है परिणामस्वरुप ये पशु सड़कों पर लावारिस अवस्था में यत्र-तत्र भटकते हुए दुर्घटनाओं का कारण बन रहे हैं। गायों की रक्षा तथा सुरक्षा के लिए शासन-प्रशासन या धार्मिक स्तर पर कल्याणकारी योजनाओं का धरातलीय क्रियान्वयन करना आवश्यक होगा।

'गंगा'

भारत की जीवन संपोषक नदी है जो न केवल जल की मुख्य वाहिनी है बल्कि भारतीय संस्कृति के अनवरत प्रवाह का द्योतक भी है। इसमें आस्था का निर्मल स्त्रोत है जो शक्ति के रुप में मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में संबल प्रदान करती है। लगभग 2500 किमी लंबी गंगा भारत के 26 प्रतिशत भू-भाग को पल्लवित करती है। गोमुख से बंगाल की खाड़ी तक के मार्ग में गंगा किनारे बसे छोटे-बड़े शहर जैसे- हरिद्वार, कानपुर, प्रयागराज, काशी, पटना एवं कोलकाता ज्ञान और औद्योगिक केन्द्र के रुप में विकसित हो रहे हैं। मान्यता है कि भागीरथी द्वारा उद्गमित गंगा का पानी कभी दूषित नहीं होगा और न हीं कभी यह जलशून्य होगा, यह अनवरत जीव-जगत का पालन करती रहेगी, इसलिए इसे एक मॉं की संज्ञा दी गई है; इनकी शुध्दता एवं पवित्रता के कसमें जगविख्यात है। एक माता कभी कुमाता नहीं हो सकती जबकि पुत्र कुपुत्र हो सकता है और यह बात चरितार्थ

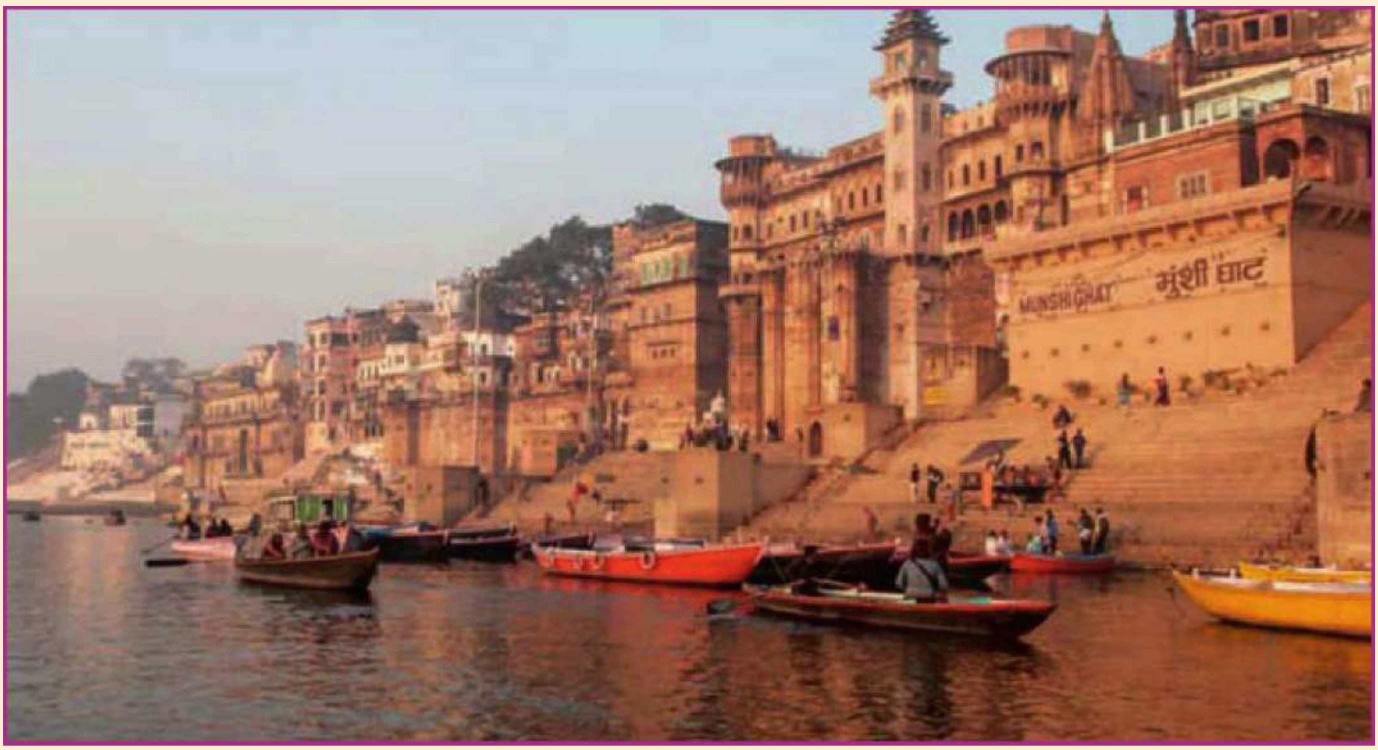

कर रहे हैं वे लोग जो गंगा को केवल एक साधारण नदी समझकर अवशेष बहा रहे हैं। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर है इसका उसी तरह संरक्षण होना चाहिए जिस तरह यहां लाल किला, ताजमहल या अन्य स्मारकों का किया जा रहा है। देश, सरकार से नहीं, संस्कार से पहचाना जाता है, इस दिशा में जनता को अपनी जिम्मेदारी एवं जवाबदेही समझकर गंगा को न केवल दूषित होने से बचाना है बल्कि गंगा से जुड़ी धारणाओँ को जीवंत बनाए रखना है।

'गांव'

सशक्त भारत की सूक्ष्म इकाई है जो भारत की पुरातन एवं प्राचीन संस्कृति को सहेजे हुए है। यह सत्य है कि वर्तमान सबसे उन्नत और विकसित होता है लेकिन जब भविष्य में पहुंचकर वर्तमान का पुनरावलोकन करते है तो वही वर्तमान पिछड़ा प्रतीत होता है। 'गांव' नींव है हिंदुस्तान की, रीढ़ की हड्डी है भारत की जहां परंपरा अभी भी श्वांस ले रही है। किसी भी देश की परंपरा उस देश के ऐतिहासिक मानव मूल्यों की मंजूषा होती है जिसमें जीवन दर्शन तथा विकास के बेशकीमती पाठ अंतः संरक्षित होते हैं। पूर्णतः झुक कर चरण स्पर्श करना, बड़ों के सामने महिलाओं का सिर पर पल्लू रखना, पड़ोसियों के सुख-दुःख में सम्मिलित होना, विधि-विधान के साथ त्योहारों या कार्यक्रम का आयोजन ऐसे कई रिवाजों का निर्वहन गांवों में अभी तक यथावत किया जा रहा है। संस्कृति का संरक्षक गांव तो है ही इसके साथ ही यहां एक अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक परिवेश सहज ही उपलब्ध हो जाता है, कहा भी गया है 'गाँव की हवा, शहर की दवा एक बराबर'। आज शहरीकरण के कारण गांवो का श्नै:-श्नै: अतिक्रमण हो रहा है। रोजगार के उद्देश्य से नवयुवकों का गांव से पलायन विचारणीय है। इस दिशा में ग्रामीण उद्योग को महत्व देना तथा कृषि के क्षेत्र में कुछ नवाचार करना प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

मनुष्यों का प्रायः यह स्वभाव होता है कि उम्र की एक दहलीज पार करने पर वह वर्तमान के प्रति उदासीन हो जाता है तथा अतीत की घटनाओं या चीजों से वह लगाव महसूस करता है। लेकिन सत्य तो शाश्वत रहता है, किसी के आंख खोलने से सबेरा नहीं होता। समय के साथ विकास भी जरुरी है परंतु अपनी मूल संस्कृति की उपेक्षा कर प्राप्त उपलब्धि फलीभूत नहीं हो पायेगी। जिस प्रकार पौधो को पल्लवित और विकसित करने के लिए उनके मूल पर पानी सींचा जाता है, तने और पत्तियों पर नहीं, उसी प्रकार राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु सांस्कृतिक धरोहर और प्रतीकों को संरक्षित करना आवश्यक होगा।

वायु प्रदूषण: सांसें उधार पर

रितेश गुप्ता
लेखाकार
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

आजकल का दौर ऐसा है कि इंसान के लिए श्वास लेना एक ऐसा महंगा शौक बन गया है, जैसे अमीरों के लिए गाड़ियों का शौक। पहले लोग पहाड़ों पर जाते थे ताजी हवा लेने, अब दिल्ली जैसे शहरों में लोग ऑक्सीजन बार में जाते हैं। फर्क बस इतना है कि पहले हवा मुफ्त थी और अब उसका भी बिल आता है।

हवा का स्वाद बदल गया

पहले लोग कहते थे, "दिल्ली की चाट का जवाब नहीं," क्योंकि मसालेदार चटपटी चाट और ठंडी हवा का मिलाजुला मजा ही कुछ और था। अब वही लोग कहते हैं, "दिल्ली की हवा का जवाब नहीं!" हां, अब हवा में चटपटा स्वाद नहीं, बल्कि धूल, कार्बन, और न जाने क्या-क्या 'स्वादिष्ट' तत्व समाहित हो गए हैं। लगता है जैसे चाय के साथ जले हुए पराठे का धुआं और पराली का मीठा मसाला भी आ गया हो।

अब तो लोग एक सांस लेते हैं और तुरंत सोचते हैं, "यह धुआँ पेट्रोल का है, या पराली का? या फिर वो फैक्ट्री का खतरनाक एक्स्ट्रा मसाला?" कभी हवा में ताजगी थी, अब तो लगता है जैसे किसी ने गाड़ी के इंजन का तेल ही उड़ा दिया हो। अब दिल्ली का स्वाद ही बदल गया है पहले चटपटी चाट का था, अब धुएं और पराली का है। और वैसे भी, अगर आप दिल्ली में ताजगी की तलाश कर रहे हैं, तो हवा से ज्यादा ऑक्सीजन बार का स्वाद अच्छा रहेगा!

पराली की धूमधाम

हर साल, ये "जश्न" बिना किसी निमंत्रण के छत से लेकर सड़क तक पहुंच जाता है। और जब हम सुबह उठते हैं तो हमारा सबसे पहला काम होता है: सूरज को ढूंढना। जी हां, वही सूरज, जो हर दिन हमें अपने चेहरे पर उष्मा देने आता है, आज वह हमें स्मॉग के बीच "खोया हुआ" मिलता है। अगर पराली जलाने का शौक चल पड़ा तो अगले साल तक हम शायद 'पराली जलाने का टूरिस्ट सीजन' भी घोषित कर देंगे जहाँ हर शहर अपने धुएं और सफेद कुहाँसे के बीच एक नया अनुभव देने का दावा करेगा। यही चलता रहा तो कुछ दिनों में पंछियों को भी आसमान में गूगल मैप की सहायता से अपना लक्ष्य ढूँढना पड़ेगा।

वाहन प्रदूषण का जिन्न

वाहन प्रदूषण, या जैसा हम उसे प्यार से कहते हैं, "आधुनिक धुंआ-धार उत्सव", अब हमारी ज़िंदगी का अहम हिस्सा बन

चुका है। दिन हो या रात, कारों, स्कूटरों और बाइकर्स का धुंआ ऐसे निकलता है जैसे किसी ने फॉग मशीन चला दी हो। अगर कभी किसी ने सोचा हो, "कितनी अच्छी हवा है आजकल!", तो यकीन मानिए, वह बेशक किसी एयर-फ्रेशनर के पास खड़ा हो। दरअसल, प्रदूषण का असर यह है कि अब लोगों को चाय की बजाय धुंए की महक से ताजगी महसूस होने लगी है। सच कहें तो प्रदूषण अब हमारे रोज़मर्रा का हिस्सा बन चुका है, और वाहनों की धुंआ-धार 'फेस्टिवल' को भी मानो हमने अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लिया हो।

ऑक्सीजन बार का जमाना

दिल्ली में वायु प्रदूषण का हाल कुछ ऐसा हो गया है कि अब लोग जिम के बजाय "ऑक्सीजन बार" में समय बिताने लगे हैं। जी हां, आपने सही सुना ! अब दिल्ली में ऑक्सीजन की कमी को पूरा करने के लिए लोग बार-बार बार में जा रहे हैं, लेकिन यह कोई शराब का बार नहीं, बल्कि एक ऐसा बार है, जहां आपको सांस लेने के लिए ताजे ऑक्सीजन के झूले मिलते हैं।

अब तो यह सीन ऐसा है, जैसे आप एक ऊँचे रेट पर मिनरल वॉटर के बोतल में ऑक्सीजन का स्वाद लें। "स्वादिष्ट ऑक्सीजन" हां, यह नाम एकदम फिट बैठता है, क्योंकि यहां आपको ताजगी का अहसास हो जाता है, जो दिल्ली की धुंआधार हवा के मुकाबले किसी जादू से कम नहीं है।

कभी सोचा था कि एक दिन ऐसा आएगा जब लोग वायु प्रदूषण से बचने के लिए हाइटेक ऑक्सीजन के बोतल और ऑक्सीजन थेरेपी के बारे में चर्चा करेंगे? नहीं, तो आज वही हो रहा है। एक तरफ गाड़ियाँ धुएं से निकलकर लहलहा रही हैं, तो दूसरी तरफ लोग ऑक्सीजन के पंप और ट्यूब लेकर बार में चुपचाप बैठकर एक गहरी सांस लेते हैं।

अब तो यह भी सुनने को मिलता है कि "ऑक्सीजन बार में पिनकोड के साथ बुकिंग करनी होती है", ताकि कोई भी ज्यादा लंबी सांस न ले। आखिरकार, दिल्ली में साँस का ही तो व्यापार हो गया है जितना ज्यादा प्रदूषण, उतनी ज्यादा मांग।

वैसे, एक बात है, ये ऑक्सीजन बार कम से कम ये तो सुनिश्चित करते हैं कि हमारी सांसें सस्ती नहीं हो गई।

उपायों की धूम

वायु प्रदूषण से बचने के लिए अब हर किसी के पास एक नया 'उपाय' है। पहले लोग कहते थे, "स्वच्छ हवा के लिए कुछ करना होगा!" अब वही लोग कहते हैं, "स्वच्छ हवा? अरे भाई, जो सांस लेने लायक बची है, वहीं बहुत है!" अब अगर आप दिल्ली में रहते हैं तो हर जगह उपाय ही उपाय हैं। किसी ने कहा, "ऑक्सीजन बार खोल लो!" एक और ने कहा, "मास्क पहन लो!" और किसी ने बताया, "ऑक्सीजन सिलेंडर अपने बैग में रख लो !" अब बैग में सिलेंडर रखने से ज्यादा तो कार में 'एयर प्योरिफायर' लगाने का ट्रेंड चल पड़ा है। हां, सही सुना, जो एयर प्योरिफायर घर में काम नहीं करता, वह कार में सुपरहीरो बन जाता है। अगर आप धूल से बच नहीं सकते तो क्यों न उसे अपनाया जाए? जब दिल्ली में धूल आपकी दोस्त बन जाए, तो फिर उसे गले लगाकर कहिए, "हां, तुम मेरी जीवन का हिस्सा हो!" धूल से लड़ने के बजाय अगर उसे गले लगा लिया, तो कम से कम आप यह महसूस करेंगे कि अब कुछ भी नया नहीं, सब कुछ एक साथ है।

भारतीय ग्रामीण एवं शहरी जीवन

संदीप
कनिष्ठ अनुवादक
सीएजी मुख्यालय

कहा जाता है कि अगर पैसा कमाना हो तो शहर चले जाओ और अगर सुकून चाहते हो तो गांव में बस जाओ। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह कथन सही नजर आता है। भारत को गांवों का देश कहा जाता है क्योंकि भारत की ज्यादातर जनसख्या गांवों में निवास करती है। अगर भारत का अच्छी तरह से अध्ययन करना है तो गांवों को अच्छी तरह समझना जरूरी है।

ग्राम्य जीवन:

गांव का जीवन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने के तरीके को संदर्भित करता है, आमतौर पर गांव में लोग एक-दूसरे के करीब रहते हैं। गांव आमतौर पर शहरों से दूर स्थित होते हैं और उनकी जीवन शैली सरल होती है, शहरों की तुलना में कम आराम और सुख-सुविधाएं होती हैं। गांवों में लोग आमतौर पर कृषि , पशुपालन एवं मछली पकड़ने जैसे आजीविका के अन्य पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रहते हैं। गांव का जीवन आम तौर पर शहरी जीवन से ज़्यादा शांतिपूर्ण और सुकून भरा माना जाता है। गांवों में लोग सादा जीवन जीते हैं, उनमें सामुदायिक भावना होती है और वे एक-दूसरे से ज़्यादा जुड़े होते हैं। वे प्रकृति से भी ज़्यादा जुड़े होते हैं, क्योंकि वे हरियाली से घिरे होते हैं और उन्हें ताज़ी हवा एवं साफ पानी मिलता है। गाँव आम तौर पर छोटे, घनिष्ठ रूप से जुड़े समुदायों का घर होते हैं, जहाँ लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं और एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं। समुदाय की यह मज़बूत भावना गाँव के जीवन के मुख्य लाभों में से एक है, क्योंकि यह सुरक्षा और अपनेपन की भावना प्रदान करती है। गांवों में जीवन सामान्य रूप से शहरों की तुलना में अधिक किफायती होता है, क्योंकि वहां रहने की लागत आम तौर पर कम होती है। गांवों में लोगों के पास आम तौर पर छोटे घर और बगीचे होते हैं, और समुदाय अधिक आत्मनिर्भर होता है, जहां लोग अपना भोजन खुद उगाते हैं और एक-दूसरे के साथ व्यापार करते हैं। गांव में जीवन के कई फायदे होने के बावजूद, कुछ नुकसान भी हैं। गांव शहरों की तुलना में कम विकसित होते हैं, और इसलिए उनमें कई ऐसी सुख-सुविधाएं नहीं होती हैं, जो शहरवासियों के लिए सामान्य बात है, जैसे अस्पताल, स्कूल और सुपरमार्केट। इससे गांव में जीवन और भी मुश्किल हो सकता है, खासकर विकलांग या गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों के लिए।

ग्राम्य जीवन की प्रमुख विशेषताएँ

1. **छोटे और घनिष्ठ रूप से जुड़े समुदाय:**

   गांवों में आमतौर पर छोटे समुदाय होते हैं जहां लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं और एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं।

2. **पारंपरिक और सरल जीवनशैली:**

   गांव का जीवन सरल जीवनशैली से युक्त होता है, जहां शहरों की तुलना में सुख-सुविधाएं कम होती हैं।

3. **कृषि और पारंपरिक आजीविका पर निर्भरता:**

   गांवों में लोग आमतौर पर कृषि और अन्य पारंपरिक आजीविका जैसे पशुपालन और मछली पकड़ने पर निर्भर रहते हैं।

4. **मजबूत सांस्कृतिक विरासत:**

गांव की विरासत सांस्कृतिक रूप से धनी होती है और गांव के लोग पारंपरिक नैतिक मूल्यों को मानते हैं।

5. **जीवनयापन की वहनीय लागत:**

गांव आमतौर पर शहरों की तुलना में अधिक वहनीय होते हैं, क्योंकि वहां जीवनयापन की लागत सामान्यतः कम होती है।

6. **शांतिपूर्ण और सुकून भरा माहौल:**

गांव का जीवन आमतौर पर शहरी जीवन से ज़्यादा शांतिपूर्ण और सुकून भरा माना जाता है। गांवों में लोगों की ज़िंदगी की रफ़्तार धीमी होती है और वे प्रकृति से ज़्यादा जुड़े होते हैं।

7. **समुदाय की मज़बूत भावना:**

गाँव आम तौर पर छोटे, घनिष्ठ रूप से जुड़े समुदायों के घर होते हैं, जहाँ लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं और एक-दूसरे का ख़्याल रखते हैं। भावनात्मक रूप से मजबूत समुदाय गाँव के जीवन के मुख्य लाभों में से एक है, क्योंकि यह सुरक्षा और अपनेपन की अनुभूति प्रदान करती है।

8. **रहने की किफायती लागत:**

गाँव शहरों की तुलना में ज़्यादा किफ़ायती होते हैं, क्योंकि वहाँ रहने की लागत आम तौर पर कम होती है। गाँवों में लोगों के घर और बगीचे आम तौर पर छोटे होते हैं, और समुदाय ज़्यादा आत्मनिर्भर होता है, जहाँ लोग अन्न , फल और सब्जियाँ खुद उगाते हैं और एक-दूसरे के साथ व्यापार करते हैं।

9. **प्रकृति से निकटता:**

गांव आमतौर पर हरियाली से घिरे होते हैं और वहां ताज़ी हवा और साफ पानी की सुविधा होती है। यह उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकता है जो बाहरी गतिविधियों का आनंद लेते हैं और अधिक प्राकृतिक वातावरण में रहना चाहते हैं।

गांव के जीवन की परिसीमाएँ:

1. **सीमित सुविधाएं और सुख-सुविधाएं:**

गांव आमतौर पर शहरों की तुलना में कम विकसित होते हैं, और इसलिए उनमें कई सुख-सुविधाओं का अभाव होता है, जिन्हें शहरवासी सामान्य मानते हैं, जैसे अस्पताल, स्कूल और सुपरमार्केट।

2. **रोजगार के सीमित अवसर:**

गांवों में रोजगार के अवसर सीमित होते हैं, क्योंकि अधिकांश लोग कृषि और अन्य पारंपरिक आजीविका पर निर्भर रहते हैं। यह उन लोगों के लिए नुकसानदायक हो सकता है जो अलग करियर अपनाना चाहते हैं या उच्च वेतन वाली नौकरियों की तलाश में हैं।

3. **स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुंच:**

गांवों में आधुनिक स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं तक पहुंच का अभाव हो सकता है, इसलिए लोगों को चिकित्सा उपचार प्राप्त करने के लिए पास के कस्बों या शहरों की यात्रा करनी पड़ सकती है।

4. **आधुनिक प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक सीमित पहुंच:**

गांवों में शहरों की तरह हाई-स्पीड इंटरनेट और प्रौद्योगिकी तक पहुंच नहीं हो सकती है। यह उन लोगों के लिए नुकसानदेह हो सकता है जो कार्य या संचार के लिए प्रौद्योगिकी पर निर्भर हैं।

शहरी जीवन:

शहरी जीवन का तात्पर्य शहरी क्षेत्रों में रहने के तौर-तरीकों से है, आम तौर पर बड़े समुदायों में जहाँ लोग एक-दूसरे के बहुत करीब रहते हैं। शहरों की विशेषता तेज़-तर्रार और आधुनिक जीवन शैली है, जहाँ निवासियों के लिए कई तरह की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। शहरों में लोग आम तौर पर कई तरह की आजीविका पर निर्भर रहते हैं, जिसमें सफ़ेदपोश नौकरियाँ, छोटे व्यवसाय और सेवा उद्योग शामिल हैं। शहरी जीवन को आम तौर पर गांव के जीवन से ज़्यादा रोमांचक और गतिशील माना जाता है। शहरों में अलग-अलग तरह के लोग और संस्कृतियाँ रहती हैं और यह विविधता शहरी जीवन के मुख्य लाभों में से एक है। शहरों में अस्पताल, स्कूल और सुपरमार्केट जैसी कई तरह की सुविधाएँ और सुख-सुविधाएँ भी होती हैं, जो शहर में जीवन को गांव के जीवन से ज़्यादा सुविधाजनक बनाती हैं। शहर गांवों की तुलना में ज़्यादा विकसित होते हैं, और इसका मतलब है कि वहाँ नौकरी के ज़्यादा अवसर उपलब्ध हैं। शहरों में रहने वाले लोगों के पास आमतौर पर करियर के ज़्यादा विकल्प होते हैं और वे गांवों के लोगों की तुलना में ज़्यादा वेतन कमा सकते हैं। यही एक मुख्य कारण है कि बहुत से लोग शहरों में जाना पसंद करते हैं।

शहरी जीवन के कई फ़ायदे होने के बावजूद, कुछ नुकसान भी हैं। शहर गाँवों की तुलना में ज़्यादा महंगे होते हैं, और इससे कम आय वाले लोगों के लिए शहर में जीवन ज़्यादा मुश्किल हो सकता है। शहर गाँवों की तुलना में ज़्यादा प्रदूषित और भीड़भाड़ वाले होते हैं, जिससे शहर में जीवन ज़्यादा तनावपूर्ण हो सकता है।

शहरी जीवन की मुख्य विशेषताएँ

1. **तेज गति और आधुनिक जीवनशैली:**

शहरों की विशेषता तेज गति और आधुनिक जीवनशैली है, जहां निवासियों के लिए अनेक प्रकार की सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं।

2. **विविध प्रकार के लोग और संस्कृतियाँ:**

शहर विविध प्रकार के लोगों और संस्कृतियों का घर होते हैं।

3. **नौकरी के अवसरों की व्यापक श्रृंखला:**

शहर गांवों की तुलना में अधिक विकसित होते हैं, और इसका मतलब है कि वहां नौकरी के अधिक अवसर उपलब्ध हैं।

4. **सुविधाओं और सुख-सुविधाओं तक सुविधाजनक पहुंच:**

शहरों में आमतौर पर कई प्रकार की सुख-सुविधाएं होती हैं, जैसे चिकित्सा सुविधाएं, अस्पताल, स्कूल, शॉपिंग मॉल और सुपरमार्केट, जो शहर में जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाते हैं।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

5. **जीवनयापन की उच्च लागत:**

शहर गांवों की तुलना में अधिक महंगे होते हैं, जहां आवास, परिवहन और अन्य आवश्यकताओं की लागत अधिक होती है।

6. **भीड़-भाड़ और प्रदूषित वातावरण:**

शहर गांवों की तुलना में अधिक प्रदूषित और भीड़-भाड़ वाले होते हैं, जिससे शहर में जीवन अधिक तनावपूर्ण हो जाता है।

7. **निरंतर ध्वनि प्रदूषण:**

शहरों में शोर अधिक रहता है, लगातार यातायात और अन्य ध्वनि प्रदूषण होता है, जो नींद और दैनिक गतिविधियों में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

8. **सांस्कृतिक विविधता:**

शहर विविध प्रकार के लोगों और संस्कृतियों का घर होते हैं, जो उन लोगों के लिए लाभदायक हो सकता है जो विभिन्न संस्कृतियों या जीवन-शैली का आनंद लेना पसंद करते हैं।

9. **मनोरंजन और गतिविधियों तक पहुंच:**

शहरों में मनोरंजन और मनोरंजक गतिविधियों की व्यापक रेंज उपलब्ध होती है, जैसे कि थिएटर, संग्रहालय और खेल टीमें।

10. **शिक्षा तक पहुंच:**

शहरों में गांवों की तुलना में अधिक विश्वविद्यालय और कॉलेज होते हैं, जो शिक्षा के अधिक व्यापक अवसर प्रदान करते हैं।

शहरी जीवन की परिसीमाएँ:

1. **जीवनयापन की उच्च लागत:**

शहर गांवों की तुलना में अधिक महंगे होते हैं, जहां आवास, परिवहन और अन्य आवश्यकताओं की लागत अधिक होती है।

2. **भीड़-भाड़ और प्रदूषित वातावरण:**

शहरों में वायु प्रदूषण अधिक होता है और गांवों की तुलना में भीड़भाड़ अधिक होती है, जिससे शहर में जीवन अधिक तनावपूर्ण हो जाता है।

3. **समुदाय और गोपनीयता का अभाव:**

शहर गुमनाम और अवैयक्तिक हो सकते हैं, जिससे समुदाय और गोपनीयता की भावना विकसित करना अधिक कठिन हो जाता है

4. **यातायात और भीड़भाड़:**

शहरों में गांवों की तुलना में अधिक यातायात और भीड़भाड़ होती है, जिससे घूमना-फिरना अधिक कठिन हो जाता है।

5. **ध्वनि प्रदूषण:**

शहरों में शोर अधिक रहता है, लगातार यातायात और अन्य कारणों से ध्वनि प्रदूषण होता रहता है, जो नींद और दैनिक गतिविधियों में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

अंत में हम कह सकते हैं कि गांव का जीवन और शहर का जीवन जीने के दो अलग-अलग तरीके हैं जिनके अपने फायदे और नुकसान हैं। गांव का जीवन आम तौर पर अधिक शांतिपूर्ण और आरामदेह माना जाता है, जिसमें जीवन की गति धीमी होती है और समुदाय की भावना अधिक मजबूत होती है। शहरी जीवन आम तौर पर अधिक रोमांचक और गतिशील माना जाता है, जिसमें नौकरी के अवसरों और सुख-सुविधाओं की व्यापक रेंज होती है। हालाँकि, यह अधिक तनावपूर्ण और महंगा भी हो सकता है।

अंततः, गांव के जीवन और शहर के जीवन के बीच चुनाव व्यक्ति की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं पर निर्भर करता है।

2023 आई.सी.सी. पुरुष क्रिकेट विश्व कप – एक आर्थिक दृष्टिकोण

आनन्द नाग
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
रक्षा सेवाएँ,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

भारत, जो कि लगभग 142 करोड़ लोगों का घर है, ने पिछले साल, बारह वर्षों के अंतराल के बाद आई.सी.सी. पुरुष क्रिकेट विश्व कप के 13वें संस्करण की मेज़बानी की। 5 अक्टूबर को शुरू हुआ यह विश्व कप लगातार 46 दिनों तक चला और इसमें कुल 48 मैच खेले गए जो भारत के दस प्रमुख शहरों जैसे नई दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद, बेंगलुरु, हैदराबाद, कोलकाता और पुणे में खेले गए। क्रिकेट के साथ भारत का संबंध सिर्फ एक खेल होने तक ही सीमित नहीं है; कई लोगों के लिए यह खेल धर्म के समान है। बड़े मैचों के दौरान सड़कें बिल्कुल खाली हो जाती हैं, लोग इन मैचों में अपने पसंदीदा क्रिकेटरों के बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं। यह क्रिकेट के प्रति इस देश के उत्साह और जुनून का प्रमाण है। विश्व कप की मेज़बानी ने खेल के प्रति इस प्रेम को और प्रगाढ़ कर दिया है। विश्व कप के आयोजन की खुशी और उत्साह के साथ - साथ, इस विशाल प्रतियोगिता के आयोजन ने भारत के बुनियादी ढांचे का विकास, सांस्कृतिक आदान - प्रदान और अर्थव्यवस्था की उन्नति को भी पर्याप्त लाभ पहुँचाया है।

विश्व कप की मेज़बानी से देश के बुनियादी ढांचे विकास परियोजनाओं, सांस्कृतिक विरासत और निश्चित रूप से आर्थिक विकास पर दूरगामी प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, विश्व कप की मेज़बानी ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया है। इस विशाल प्रतियोगिता को आयोजित करते समय बुनियादी ढांचे में बहुत सारा पैसा निवेश करने की आवश्यकता थी। आयोजन स्थलों और मेज़बान शहरों को विकसित करने पर बहुत सारा पैसा खर्च करना पड़ता है। सभी मेज़बान शहरों ने अपनी विकास परियोजनाओं पर तेजी से काम किया, जिससे बेहतर सड़कें, बेहतर सार्वजनिक परिवहन और सार्वजनिक स्थानों को बेहतर बनाया गया। इस तरह की प्रगति जो विश्व कप के कारण अधिक तेज गति से हुई, हमारे समाज पर एक स्थायी प्रभाव भी डालती है, जिससे आगे चलकर इन शहरों के निवासियों को लाभ होगा।

सांस्कृतिक आदान - प्रदान अतुलनीय था। दुनिया भर से प्रशंसक अपने रीति - रिवाजों, परंपराओं और कहानियों को लेकर जश्न मनाने के लिए हमारे देश में भारी संख्या में एकत्रित

हुए। संस्कृतियों के इस मेल ने भाईचारे को बढ़ावा दिया और भारत के अन्य देशो के साथ वैश्विक संबंधों को और अधिक मज़बूत किया। इससे न केवल लोगों के बीच काफी सद्भावना पैदा हुई, बल्कि एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में भारत की क्षमता भी सामने आई और जिसका लाभ आने वाले वर्षों में आतिथ्य क्षेत्र और भारत की अर्थव्यवस्था को अवश्य मिलने वाला है।

सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी के अनुसार क्रिकेट विश्व कप ने भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग ₹22,000 करोड़ का योगदान किया है। इस विशाल राशि ने देश की जी डी पी में उल्लेखनीय वृद्धि की है और इससे हमारे अर्थव्यवस्था के कुछ प्रमुख क्षेत्र जिन्हें भारी बढ़ावा मिला कुछ इस प्रकार है:

यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र:

इस प्रतियोगिता ने भारत और विदेश दोनों से लाखों आगंतुकों को आकर्षित किया, जिससे यात्रा और आतिथ्य दोनों उद्योगों को बहुत बढ़ावा मिला। रेलवे और विमानन उद्योग दोनों ने अपनी टिकटों की बिक्री में भारी वृद्धि दर्ज की क्योंकि प्रशंसक मैच देखने के लिए भारी संख्याओं में आयोजन स्थलों पर पहुँचे। भारतीय विमानन क्षेत्र में देश की अग्रणी कंपनी इंडिगो ने अकेले अक्टूबर और नवंबर 2023 की बुकिंग में पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 20% की वृद्धि दर्ज की है। कई होटलों, रिसॉर्ट्स और गेस्ट हाउसों ने अपने ग्राहकों को क्रिकेट-थीम वाले पैकेज और अनुभव प्रदान करने के लिए नवाचार किया। फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एफ आई सी सी आई) की एक रिपोर्ट के अनुसार, यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र ने क्रिकेट मैच देखने के लिए आयोजन स्थलों पर आने वाले प्रशंसकों की सेवा से लगभग ₹7,000 करोड़ कमाए।

मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र:

क्रिकेट विश्व कप दुनिया में सबसे लोकप्रिय और देखे जाने वाले खेल आयोजनों में से एक है, जिससे भारत को आसानी से महत्वपूर्ण दर्शक संख्या प्राप्त हुई। इससे मीडिया और मनोरंजन उद्योग को भी बढ़ावा मिला, क्योंकि ब्रॉडकास्टर्स और विज्ञापनदाता बड़े दर्शकों तक पहुंचने के लिए बड़ी - बड़ी रकम खर्च करते रहे। आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार मीडिया और मनोरंजन उद्योग ने ₹4,500 करोड़ के अनुमानित राजस्व के साथ महत्वपूर्ण लाभ दर्ज किया।

डिजिटल मीडिया क्षेत्र:

क्रिकेट विश्व कप में डिजिटल व्यवसाय का विस्फोट देखा गया, जिसमें सोशल मीडिया प्रशंसकों के संपर्क के केंद्र के रूप में उभरा। ट्विटर, इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफ़ॉर्म

वास्तविक समय के अपडेट, चर्चाओं और बड़ी मात्रा में उपयोगकर्ता-जनित सामग्री तैयार करने से बिल्कुल भरे हुए थे, जिसने टूर्नामेंट की ऑनलाइन उपस्थिति को भी विशाल मात्रा में बढ़ावा दिया। क्रिकेट विश्व कप ने डिजिटल सामग्री वितरण में भी नवाचार को बढ़ावा दिया, क्योंकि प्रसारकों और मीडिया संगठनों ने दर्शकों और समर्थकों के अनुभव को बढ़ाने के लिए नई-नई प्रोद्यौगिकी का प्रयोग किया। डिजिटल दर्शकों की बढ़ती प्राथमिकताओं को पूरा करते हुए मैचों की लाइव स्ट्रीमिंग, आभासी वास्तविक अनुभव और वैयक्तिकृत सामग्री अनुशंसाएं आम हो गईं।

खुदरा क्षेत्र:

क्रिकेट विश्व कप ने खुदरा बिक्री को भी बढ़ावा दिया, क्योंकि प्रशंसक क्रिकेट और टूर्नामेंट दोनों से संबंधित यादगार वस्तुएं, कपड़े और अन्य सामान खरीदते थे। विशेषज्ञों के अनुसार, क्रिकेट विश्व कप 2023 ने खुदरा बिक्री को ₹2,500 करोड़ तक बढ़ा दिया और इससे कई छोटे व्यवसायों और व्यापारियों को बहुत फायदा हुआ।

खाद्य और पेय पदार्थ क्षेत्र:

क्रिकेट विश्व कप ने भोजन और पेय पदार्थों की बिक्री को बढ़ावा दिया, क्योंकि मैच देखने के दौरान प्रशंसक अपनी मनोरंजन में वृद्धि के लिए अपनी मनपसंद भोजन और जलपान का भी सेवन करते रहे। मैच के दिनों में, रेस्तरां, कैफे और बार, विशेष रूप से लाइव स्क्रीनिंग सुविधाओं वाले मनोरंजन स्थलों में ग्राहकों की संख्या में वृद्धि देखी गई। कुछ प्रमुख भोजनालयों ने भारत के मैचों के दौरान दर्शकों की संख्या में 40-50% की वृद्धि दर्ज की। अर्थशास्त्रियों और विश्लेषकों का अनुमान है कि क्रिकेट विश्व कप 2023 के दौरान अकेले खाद्य और पेय उद्योग ने लगभग ₹1,500 करोड़ कमाए।

दुर्भाग्य से, भारत क्रिकेट विश्व कप 2023 नहीं जीत सका और फाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हारकर उपविजेता हुआ। किन्तु, 2023 क्रिकेट विश्व कप भारत की आर्थिक वृद्धि और वैश्विक लोकप्रियता का बहुत बड़ा प्रमाण है। इस प्रतियोगिता ने न केवल पर्याप्त आर्थिक लाभ अर्जित किया, बल्कि दुनिया के समक्ष भारत की महान संस्कृति और आतिथ्य को प्रदर्शित करने के लिए एक अतुल्य मंच के रूप में भी काम किया है। आगे चलकर 2023 क्रिकेट विश्व कप को भारत की आर्थिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण क्षण के रूप में याद किया जाएगा। वर्तमान समय में खेल मानव - जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। अतः यह भी उतना ही आवश्यक है कि हमारा देश अपने आप को और अधिक सक्षम बनाए ताकि क्रिकेट की तरह खेल जगत की अन्य बड़ी - बड़ी प्रतियोगिताओं जैसे फुटबॉल विश्व कप और ओलम्पिक गेम्स की भी मेज़बानी कर सके जिसके परिणामस्वरूप देश के समग्र विकास को और अधिक बढ़ावा मिल सके।

मानक देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी

उदय प्रताप सिंह
हिंदी अधिकारी
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
कर्नाटक, बेंगलूरु-560001

हिंदी संघ सरकार की राजभाषा है और सदियों से भारत की संपर्क भाषा भी रही है। हिंदी ने पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। इसकी इसी खूबी के कारण संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने तथा अनेक राज्यों द्वारा हिंदी को अपनी राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान करने के बाद यह देखा गया है कि सामान्य जन ही नहीं बल्कि शिक्षित लोग, छात्र, अध्यापक, पत्रकार, एवं प्रबुद्ध वर्ग भी हिंदी लिपि वर्तनी का मनमाने ढंग से व्यवहार करते हैं। ऐसे में हिंदीतर भाषियों को यह स्थिति बहुत अटपटी लगती थी। इस स्थिति से निपटने और हिंदी लेखन में एकरूपता लाने के लिए हिंदी भाषा के विविध पक्षों जैसे उच्चारण, लिपि, वर्तनी, विराम चिह्नों के प्रयोग आदि को मानक रूप देना आवश्यक समझा गया।

सन् 1966 में तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय ने मानक देवनागरी वर्णमाला प्रकाशित की, जिसमें प्रत्येक वर्ण का मानक रूप निर्धारित किया गया। इसके साथ ही देवनागरी में अन्य भारतीय भाषाओं की जिन विशिष्ट ध्वनियों के लिए लिपि चिह्न नहीं थे उनके लिए नए लिपि चिह्नों का भी निर्धारण किया गया। सन् 1967 में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई। इसी क्रम में सन् 1983 में देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण पुस्तिका में मानक हिंदी वर्णमाला, मानक हिंदी वर्तनी तथा परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला को एक साथ प्रकाशित किया गया।

मानक हिंदी वर्णमाला

मानक हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं, जिनमें से 13 स्वर हैं और 35 व्यंजन तथा 4 संयुक्त व्यंजन हैं। मानक हिंदी वर्णमाला का स्वरूप निम्नलिखित है-

1. **स्वर:** अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अ:
2. **व्यंजन:**

क ख ग घ ङ	कंठ्य
च छ ज झ ञ	तालव्य
ट ठ ड ढ (ड़ ढ़) ण	मूर्धन्य
त थ द ध न	दंत्य
प फ ब भ म	ओष्ठ्य
य र ल व	अंतस्थ
श ष स ह	ऊष्म

संयुक्त व्यंजन: क्ष (क् + ष), त्र (त् + र),
ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र)

अनुस्वार- अं

विसर्ग- अ:

अनुनासिक चिह्न (चंद्रविंदु) - अँ

आगत ध्वनियाँ- ऑ ख़ ग़ ज़ फ़

टिप्पणी- अरबी फारसी से हिंदी में पाँच ध्वनियाँ आई हैं, क़, ख़, ग़, ज़, फ़। इनमें से दो ध्वनियाँ क़ और ग़ उच्चारण के स्तर पर हिंदी में परिवर्तित हो गई हैं। ख़ ध्वनि भी लगभग हिंदी में खपने की प्रक्रिया में है। शेष दो ध्वनियाँ ज़ और फ़ अंग्रेज़ी के कारण अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से जुड़े कार्मिकों को हिंदी शब्दकोशों में वर्णों के क्रम का ज्ञान होना आवश्यक है। वर्ण क्रम की जानकारी होने पर ही हिंदी शब्दकोशों का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है। हिंदी शब्दकोशों में वर्णों का क्रम इस प्रकार होता है-

स्वर: अं अँ अः अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन: क क्ष ख ग घ ङ.
च छ ज ज्ञ झ ञ
ट ठ ड ड़ ढ ढ़ ण
त त्र थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व
श श्र ष स ह

संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप निम्न प्रकार है:

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण- कोई भी भाषा सरल या कठिन नहीं होती है। भाषा को सरल या कठिन बनाने के लिए दो तत्व प्रमुख रूप से उत्तरदायी होते हैं, उसका व्याकरण और उसकी लिपि। लिपि के दो पक्ष होते हैं, लिपि का एक पक्ष है उसके सामान्य और विशिष्ट स्वरों के प्रत्येक वर्ण की संरचना, उनका स्पष्ट आकार, लिखावट में सरलता आदि। लिपि का दूसरा पक्ष है वर्तनी। एक ही ध्वनि को प्रकट करने के लिए विविध वर्णों का प्रयोग वर्तनी को जटिल बना देता है और यह लिपि का एक सामान्य दोष माना जाता है। वर्तनी संबंधी नियम तालिका में वर्णित है:

1. संयुक्त वर्ण

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन

ख, ग, घ, च, ज, झ, ञ, ण, त, थ, ध, न, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष

इन खड़ी पाई वाले 22 व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर बनाना है। जैसे:-

इन व्यंजनों में 'क' और 'फ' अपवाद हैं। इनमें खड़ी पाई होने के बावजूद भी पाई के बाद के चिह्न को हटाया जाता है न कि खड़ी पाई को। यहाँ पर एक बात गौर करने वाली है और वह यह है कि यही वे दो व्यंजन हैं जिनमें खड़ी पाई वर्ण के मध्य में आती है, अन्य सभी व्यंजनों में खड़ी पाई दाहिनीं तरफ ही आती है और कदाचित् इसीलिए ये दोनों व्यंजन अपवाद हैं। इनसे बनने वाले संयुक्त वर्ण पक्का, चक्का, धक्का, दफ़्तर आदि तद्नुसार लिखे जाते हैं।

व्यंजन	संयुक्त रूप	व्यंजन	संयुक्त रूप	व्यंजन	संयुक्त रूप	व्यंजन	संयुक्त रूप
ख	ख्याति	ण	कण्ठ	प	प्याला	ल	उल्लास
ग	लग्न	त	सत्य	ब	ब्याज	व	व्यापार
घ	विघ्न	थ	पथ्य	भ	अभ्यास	श	विश्व
च	कच्चा	ध	ध्वनि	म	अम्ल	ष	पुष्प
ज	ज्योति	न	अन्न	य	शय्या	स	स्वामी

(ख) अन्य व्यंजन

ङ., छ, ट, ठ, ड, ढ, द एवं ह

इन आठ वर्णों से बनने वाले संयुक्त वर्ण हल चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ। जैसे वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या,

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

ब्रह्मा आदि। ये वर्ण अक्षर के नीचे अक्षर लिखकर न लिखे जाएँ।

(ग) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत रहेंगे।

1. (र + व्यं) धर्म, कर्म, अर्थ, कार्रवाई, कार्यवाही, वर्तनी आदि में 'र' स्वर विहीन है।

2. (व्यं+र) क्रम, भ्रम, द्रव्य, ह्रास, प्रचलन, प्रयास आदि में 'र' स्वर युक्त है लेकिन जिस व्यंजन के साथ यह मात्रा लगाई जा रही है वह व्यंजन स्वर विहीन है।

3. राष्ट्र, ट्रक, ड्रम, ड्रामा, ट्रेन, ट्राली आदि में 'र' स्वर युक्त है और 'ट' और 'ड' स्वर विहीन है। ये मात्रा केवल 'ट' और 'ड' में ही इस प्रकार लगाई जाती है।

(घ) 'श्र' और 'त्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा।

(ङ) हल चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ इ की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा न कि पूरे युग्म से पूर्व, यथा- बुद्धिमान, द्वितीय, कुट्टिम, शुद्धिपत्र आदि।

2. विभक्ति चिह्न (परसर्ग)

(क) हिंदी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में पृथक लिखे जाएँ, जैसे- राम ने, रावण को, लक्ष्मण ने मेघनाद को आदि।

(ख) सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न मिलाकार लिखे जाएँ, जैसे- मैंने, उसने, उसको, हमको, उससे, उसपर आदि।

(ग) सर्वनाम के साथ यदि दो विभक्ति चिह्न हों तो पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाए, जैसे उसके लिए, उसमें से आदि।

(घ) सर्वनाम ऐर विभक्ति के बीच 'ही', 'तक' आदि का उपयोग हो तो विभक्ति को पृथक लिखा जाए, जैसे- आप ही के लिए, मुझ तक को आदि।

3. क्रियापद

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक-पृथक लिखी जाएँ, जैसे- जा सकता है, पढ़ा करता है, बैठा रहता है, पिया करता है, जाया करता है, किया करता था, खेला करेगा, घूमा करेगा, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

4. हाइफ़न

हाइफ़न का प्रयोग लेखन में स्पष्टता के लिए किया जाता है।

(क) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफ़न रखा जाए, जैसे- राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती, देख-रेख, चाल-चलन, हँसी-मजाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना, खेलना-कूदना आदि।

(ख) सा, जैसा आदि से पूर्व हाइफ़न रखा जाए, जैसे- मुझ-सा, मोहन-जैसा, चाकू-सा तीखा।

(ग) तत्पुरुष समास में हाइफ़न का प्रयोग केवल वहीं किया जाए जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो अन्यथा नहीं। सामान्यतः तत्पुरुष समास में हाइफ़न लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे- रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि। लेकिन जहाँ भ्रम की संभावना हो जैसे- अ-नख (बिना नख का), अनख (क्रोध), अ-नति (नम्रता का अभाव), अनति (थोड़ा), अ-परस (जिसे किसी ने न छुआ हो), अपरस (एक चर्म रोग), भू-तत्व (पृथ्वी तत्व), भूतत्व (भूत होने का भाव) आदि वहाँ हाइफ़न लगाना आवश्यक है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न-भिन्न शब्द हैं।

5. अव्यय

तक, साथ, आदि अव्यय सदैव पृथक लिखे जाएं, जैसे आपके साथ, यहाँ तक।

इसी नियम को कुछ और उदाहरण देकर स्पष्ट करना आवश्यक है। हिंदी में आह, ओह, अहा, ही, तो, सो, न, जब, तक, कब, कहाँ, सदा, क्या, श्री, जी, तक, भर, मात्र, साथ, कि, किंतु, मगर, लेकिन, चाहे, या, अथवा, तथा, यथा और आदि अनेक प्रकार से भावों का बोध कराने वाले अव्यय हैं। कुछ अव्ययों के आगे विभक्ति चिह्न भी आते हैं, जैसे- आप ही के लिए, मुझ तक को, आपके साथ, गज कपड़ा, देश भर, रात भर, दिन भर, वह इतना भर कर दे, मुझे जाने तो दो, काम भी नहीं बना, पचास रुपये मात्र आदि। सम्मानार्थक श्री और जी, अव्यय भी पृथक लिखे जाएं, जैसे- श्री श्रीराम, कन्हैयालाल जी, महात्मा जी, श्री राम मोहन शर्मा आदि।

समस्त पदों में प्रति मात्र, यथा आदि अव्यय पृथक न लिखे जाएँ, जैसे- प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित आदि। यह सर्वविदित है कि समास होने पर समस्त पद एक माना जाता है। अतः उन्हें एक साथ लिखा जाना ही संगत है।

6. श्रुतिमूलक य और व

(क) जहाँ श्रुतिमूलक य और व का प्रयोग विकल्प स्वरुप में होता है वहाँ न किया जाए, अर्थात् किए-किये, नयी-नई, हुआ-हुवा आदि में पहले स्वरात्मक रूप का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और सभी स्थितियों में लागू होगा, जैसे- दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली आदि।

(ख) जहाँ श्रुतिमूलक य व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो, वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, जैसे- स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि।

7. अनुस्वार तथा अनुनासिक-चिह्न (चंद्रविंदु)

हिंदी में अनुस्वार पर विचार करने से पहले हम यह जान लें कि देवनागरी लिपि व्यवस्था में व्यंजनों के पाँच वर्ग हैं- कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग एवं पवर्ग। कवर्ग में क, ख, ग, घ तथा ङ व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं, इनमें ङ नासिक्य व्यंजन है। इसी प्रकार चवर्ग में च, छ, ज, झ तथा ञ व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं, इनमें ञ नासिक्य व्यंजन है। टवर्ग में ट, ठ, ड, ढ, और ण व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं, इनमें ण नासिक्य व्यंजन है। तवर्ग में त, थ, द, ध, और न व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं, इनमें न नासिक्य व्यंजन है तथा पवर्ग में प, फ, ब, भ और म व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं, इनमें म नासिक्य व्यंजन है। इस प्रकार ड., ञ, ण, न और म नासिक्य व्यंजन ध्वनियाँ हैं।

जिन व्यंजनों के साथ अन्य व्यंजनों के गुच्छ बनते हैं, उन्हें दो प्रकार से लिखा जाता है- आधे नासिक्य व्यंजन के साथ अथवा अनुस्वार (या बिंदी) के साथ निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए।

अड्.क = अंक, चञ्चल = चंचल, कण्टक = कंटक, सन्त = संत, कम्पन = कंपन मानक देवनागरी लिपि एवं वर्तनी में ऐसे शब्दों के अनुस्वार के साथ लिखने की व्यवस्था दी गई है।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि अनुस्वार का प्रयोग समवर्गीय नासिक्य व्यंजन गुच्छों में होता है अर्थात् नासिक्य व्यंजन के बाद का व्यंजन उसी वर्ग का ही होना चाहिए। अब हम य, र, ल, व, श, स, ह, क्ष, त्र, एवं ज्ञ को किस वर्ग के साथ रखेंगे। इन ध्वनियों के उच्चारण स्थान पर विचार करने से ज्ञात होता है कि य और श (चवर्ग) ह, क्ष, ल और ज्ञ (कवर्ग), स और त्र (तवर्ग) और व (पवर्ग) के साथ जाता है। र ध्वनि के साथ कोई नासिक्य व्यंजन गुच्छ नहीं बनाता।

(क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्गों में से कोई वर्ण आए तो एकरूपता और मुद्रण तथा लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए, जैसे- गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक आदि में पंचमाक्षर के वाद उसी वर्ग के वर्ण आगे आते हैं, अतः पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होगा। यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग को कोई वर्ण आए, अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे- अन्य, अन्न, सम्मेलन, सम्मति, चिन्मय, उन्मुख आदि।

(ख) कई बार चंद्रविन्दु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, जैसे- हंस (पक्षी) और हँस (हँसना), अंगना (सुंदर नारी) और अँगना (आंगन), चांद (गंजा सिर) और चाँद (चंद्रमा) आदि। अतः ऐसे भ्रम से बचने के लिए चंद्रविन्दु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए।

8. विदेशी ध्वनियाँ

(क) अरबी-फारसी के वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और हिंदी ध्वनियों में प्रचलित हो चुके हैं और उनका रूपांतरित रूप हिंदी में मान्य है, जैसे- कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ न लिखा जाए)। पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहाँ उनके प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएं, जैसे- खाना-ख़ाना, राज-राज़, फन-फ़न आदि। अरबी-फारसी की मुख्यतः पाँच ध्वनियाँ (क़, ख़, ग़, ज़ और फ़) हिंदी में आई हैं जिनमें से दो (क़ और ग़) हिंदी उच्चारण (क और ग) में परिवर्तित हो गई हैं, 'ख़' ध्वनि भी लगभग खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो ध्वनियाँ (ज़ और फ़) अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

(ख) अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत्त ओ ध्वनि का प्रयोग होता है उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर ऑ की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए जैसे- डॉक्टर, कॉफी, हॉकी, कॉलेज आदि। जहां तक अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से नए शब्द ग्रहण करने और उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध ,है अगस्त-सितंबर 1962 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा वैज्ञानिक शब्दावली पर आयोजित भाषाविदों की संगोष्ठी में अंतरराष्ट्रीय शब्दावली के देवनागरी लिप्यंतरण के संबंध में की गई सिफारिश उल्लेखनीय है। उसमें यह कहा गया है की अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण इतना कठिन नहीं होना चाहिए कि उसके लिए वर्तमान देवनागरी वर्णों में अनेक नए संकेत-चिह्न लगाने पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिक से अधिक निकट होना चाहिए। उसमें भारतीय शिक्षित समाज में प्रचलित उच्चारण संबंधित थोड़े-बहुत परिवर्तन किया जा सकते हैं। अन्य भाषाओं के शब्दों के संबंध में भी यही नियम लागू होने चाहिए।

(ग) हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। समाज में दोनों रूपों की एक सी मान्यता है। फिलहाल उनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई है। कुछ उदाहरण हैं- गरदन-गर्दन, गरमी-गर्मी, बरफ-बर्फ, बिलकुल-बिल्कुल, सरदी-सर्दी, कुरसी- कुर्सी, भरती-भर्ती, फुरसत-फुर्सत, वापिस-वापस, बरतन-बर्तन, दोबारा-दुबारा आदि।

9. हल चिह्न

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में समान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए। परंतु जिन शब्दों के प्रयोग में हिंदी में हल चिह्न लुप्त हो चुके हैं, उनमें उसको फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए, जैसे महान् विद्वान् आदि में।

10. स्वर परिवर्तन

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। अतः ब्रह्मा को ब्रम्हा, चिह्न को चिन्ह, उऋण को उरिण में बदलना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार ग्रहीत, द्रष्टव्य, प्रदार्शनी, अत्याधिक, अनाधिकार आदि अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इनके स्थान पर क्रमशः गृहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनधिकार ही लिखना चाहिए। जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है, जैसे अर्द्ध-अर्ध, उज्ज्वल-उज्जवल, तत्त्व-तत्व आदि।

11. विसर्ग

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है वे यदि तत्सम रूप में प्रयोग हो तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए, जैसे दुखःनुभूति में। यदि शब्द के तद्भव रूप में: का लोप हो चुका है तो उसे रूप में: के बिना भी काम चल जाएगा जैसे दुख सुख की साथी ए ओ का प्रयोग हिंदी में आ तो मात्राएं दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करती हैं जिनकी भिन्नता निम्न शब्दों में देखी जा सकती है जैसे पैसा बैंक कैसा जैसा ऐनक है तथा और नौकर औरत चौपाल आदमी आए और आओ सर के अनुसार ही उच्चारण होता है लेकिन गवैया नया भैया मैया तथा कौवा, चौवन, पौवा आदि इन शब्दों में ऐ मात्रा के लिए अय व अइ तथा औ के लिए अव व अउ ध्वनि उच्चारित होती है लेकिन लिपि स्तर पर गवय्या, कव्वा आदि के रूप मे संशोधन करने की आवश्यकता नहीं है।

12. पूर्वकालिक प्रत्यय

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' को क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे, दौड़कर, जाकर, खा-पीकर, थक-हारकर आदि।

13. कुछ अन्य नियम

1. हिंदी लिखते समय शिरोरेखा का प्रयोग करना चाहिए।
2. पूर्णविराम को छोड़कर शेष विराम चिह्न अंग्रेजी वाले ही प्रयोग करना उपयुक्त है।
3. कोलन के चिह्न को ही विसर्ग के लिए प्रयोग किया जाए।
4. पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग करना चाहिए।
5. पूर्ण विराम (।)
6. अर्ध विराम (;)
7. अल्प विराम (,)
8. प्रश्न चिह्न (?)
9. विस्मयादिबोधक तथा संबोधन (!)
10. उद्धरण (" ")
11. कोष्ठक ( ) [ ]
12. योजक (-)
13. निदेशक (डैश) (---)
14. विवरण चिह्न (:-)
15. हंस पद (^)

संदर्भ सूची-

1. कार्यशाला संदर्शिका (केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)
2. हिंदी कार्यशाला सहायिका-ठाकुर दास, जनवाणी प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली
3. बृहत् हिंदी कोश, कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय एवं मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कहानी

निर्वासन

मुनीष भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रत्यक्ष कर अनुभाग)
कार्या. महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय)
चंडीगढ़

शहर के एक कोने में, एक पुराना मकान था, जो समय की मार झेल रहा था। उस मकान का मालिक, रमेश, कैंसर से पीड़ित था। जब वह युवा था, तब उसके सपने ऊँचे थे, लेकिन जीवन की परिस्थितियाँ कुछ और ही थीं।

"काश, मैं भी अपने सपनों को जी पाता," रमेश ने खिड़की से बाहर देखते हुए कहा। उसकी आवाज में एक थकान थी, जो वर्षों की लड़ाई से आई थी।

उसका विवाह मीना से हुआ, जो उसके सुख-दुख की साथी बनी। लेकिन मीना के मन में हमेशा एक अनकहा असंतोष था। वह रमेश से प्यार करती थी, लेकिन उसके मन में अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का भी बोझ था। शादी के शुरुआती साल सुखद बीते, और जब रमेश को कैंसर हुआ, तो मीना उसकी सेवा में लग गई। लेकिन भीतर-ही-भीतर वह महसूस करती थी कि उसकी अपनी ज़िंदगी कहीं गुम हो गई है। वह रमेश का पूरा ध्यान रखती, लेकिन उसके मन में कभी-कभी यह विचार भी आता कि वह अपनी इच्छाओं का त्याग कर चुकी है। वह हर दिन रमेश के लिए नए हौसले के साथ खड़ी रहती, उसकी देखभाल करती और उसे उम्मीद दिलाती। उसके लिए रमेश सिर्फ एक ज़िम्मेदारी नहीं था, बल्कि उसका जीवन था।

रमेश का बड़ा बेटा, आदित्य, जो एक वकील था, पिता की हालत देखकर बेहद चिंतित था। वह संपत्ति को लेकर सतर्क था, वह चाहता था कि घर की स्थिति संगठित रहे और सबकी जरूरतें पूरी हों। वह रमेश के इलाज के लिए हर संभव प्रयास कर रहा था और अपने छोटे भाई और माँ की जिम्मेदारियों को भी संभालने की कोशिश कर रहा था। आदित्य ने एक दिन माँ से कहा।

"माँ, मुझे पिता और इस परिवार की सबसे ज्यादा चिंता है। मैं बस चाहता हूँ कि हम सब सही निर्णय लें और एकजुट रहें। पिता की तबीयत बिगड़ती जा रही है, और मैं चाहता हूँ कि उनके जाने के बाद भी हम सब साथ रहें। हमें अभी से कानूनी कागजात की तैयारी करनी होगी," आदित्य ने कहा।

"पर बेटा, तुम्हारे पिता अभी हमारे साथ हैं," मीना ने आहत स्वर में उत्तर दिया।

"माँ, मैं सिर्फ भविष्य की चिंता कर रहा हूँ। हमें संपत्ति को सुरक्षित रखना होगा, नहीं तो बाद में विवाद होंगे," आदित्य ने तर्क दिया। वहीं, उसका छोटा भाई रोहित, जो मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा था, और हर संभव प्रयास करता था कि उनके साथ अधिक से अधिक समय बिता सके।

"पापा, मैं आपके लिए नई दवाइयाँ लेकर आया हूँ," रोहित ने उत्साह से कहा।

"बेटा, मैं नहीं चाहता कि तुम मेरी बीमारी में इतना उलझ जाओ," रमेश ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"पापा, आप मेरी प्रेरणा हैं। मुझे डॉक्टर बनना है ताकि किसी और को आपकी तरह तकलीफ न सहनी पड़े," रोहित की आँखों में सच्चा समर्पण था।

रमेश की बूढ़ी माँ, जो पहले ही अपनी उम्र और असमर्थता से जूझ रही थी, सबसे ज्यादा चिंतित थी। उसे डर था कि जब रमेश

इस दुनिया से चला जाएगा, तो उसकी देखभाल कौन करेगा?

इधर, रमेश का भाई मन में कहीं यह उम्मीद लगाए बैठे थे कि बड़े भाई के गुजरने के बाद उन्हें कुछ और हिस्सा मिल सकता है। रमेश के भाई सुरेश ने अपनी पत्नी से कहा, "अब सही वक्त आ गया है कि हम भी कुछ हिस्सा माँगें। आखिर हम भी परिवार का हिस्सा हैं।"

"हाँ, लेकिन मीना बहुत समझदार है। वह इतनी आसानी से तुम्हें कुछ नहीं देने वाली," सुरेश की पत्नी ने फुसफुसाकर कहा।

मीना का भाई, रवि, जो अपनी बहन की सुरक्षा और भविष्य को लेकर चिंतित था, हमेशा यही चाहता था कि वह आर्थिक रूप से सुरक्षित रहे।

"दीदी, देखो, तुम्हें अब अपने भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। यह घर तुम्हारे नाम होना चाहिए," रवि ने मीना को समझाने की कोशिश की।

"रवि, अभी इस बारे में बात करना सही नहीं है। रमेश..." मीना ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

"दीदी, मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ। जब जीजाजी नहीं रहेंगे, तब तुम्हें और बच्चों को मजबूत रहना होगा," रवि ने ज़ोर देकर कहा।

इन सब के बीच, रमेश चुपचाप बिस्तर पर पड़ा यह सब देखता-सुनता रहता। उसकी आँखों में अब कोई शिकायत नहीं थी, कोई उम्मीद नहीं थी। उसने महसूस कर लिया था कि वह सिर्फ एक शरीर भर था, जिसे सब अपनी-अपनी जरूरतों और स्वार्थ के अनुसार देख रहे थे। अगले कुछ दिनों तक रमेश चुपचाप सब देखता रहा। उसकी हालत और बिगड़ती जा रही थी, लेकिन घर में बस संपत्ति और भविष्य की योजनाओं की चर्चा हो रही थी। और फिर एक रात, रमेश चला गया— चुपचाप, बिना किसी को बताए, बिना कोई हलचल किए। उसके प्राण पखेरू उड़ गए। सुबह जब उसकी मृत्यु का समाचार फैला, तो घर में मातम कम और संपत्ति को लेकर चर्चाएं अधिक होने लगीं।

"अब हमें देखना होगा कि पिता ने वसीयत में क्या लिखा है," आदित्य ने सख्त लहजे में कहा।

"क्या तुम सबको पिता के जाने का कोई दुख नहीं?" रोहित ने तड़पकर कहा। मीना ने सिर झुका लिया, लेकिन उसकी आँखों में आँसू थे। वह जानती थी कि रमेश के बिना उसका जीवन अधूरा था।

बूढ़ी माँ बस आँसुओं में डूबी रह गई। "मेरा बेटा चला गया, अब कौन मेरा सहारा बनेगा?"

तभी पास के कमरे से रमेश की पुरानी डायरी मिली। जिसमें एक आखिरी संदेश लिखा था:

"जब मैं जिंदा था, तब मैं एक जिम्मेदारी था। अब जब मैं चला गया, तो मैं एक संपत्ति हूँ। क्या किसी को यह एहसास होगा कि मैं भी कभी जीना चाहता था? बस कुछ प्यार, कुछ अपनापन चाहता था। लेकिन शायद यह चाहना भी मेरा अपराध था..." रोहित ने डायरी के पन्नों को कसकर पकड़ लिया, उसकी आँखें भर आईं। घर में सबके अपने-अपने स्वार्थ थे, लेकिन शायद रमेश की आत्मा कहीं दूर, शांति में थी— सभी बंधनों से मुक्त, सभी दावों से परे।

हामिद का चिमटा

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

भूमिका – मुंशी प्रेमचंद की कहानी, "ईदगाह" जो सर्वप्रथम "चाँद" पत्रिका में सन 1938 ई० में प्रकाशित हुई थी, में बाल मनोविज्ञान और मुस्लिम ग्रामीण जीवन का बहुत समर्थ चित्रण किया गया है। प्रस्तुत रचना में लेखक ने उसी कहानी को आधार बना कर उस घटनाक्रम को आगे बताया है। दोनों कहानियों के कालखंड में लगभग 85 वर्षों का अंतर है परंतु लेखक ने इसे 26 वर्षों में समेटने का प्रयास किया है। जोकि यहाँ कहानी का उद्देश्य मानवीय मूल्यों में इस कालखंड में आई गिरावट की विवेचना करना है। यहाँ कहानी का घटना तत्व गौड़ है। एक ही रिश्ते का महत्व अलग अलग कालखंड में किस प्रकार परिवर्तित होता है, यह इस कहानी में चित्रित करने का प्रयास किया गया है। जिस हामिद को छब्बीस बरस पहले अपनी जिस दादी की उँगलियों की इतनी फिक्र थी कि वह उनमें चूल्हे की हल्की सी जलन भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था वही हामिद अपनी दादी को चिमटे के पैकेट फाड़ने मात्र से ही इतना क्रोधित हो जाता है कि ऊंची आवाज़ में उनसे अनाप शनाप बोल जाता है। अपने बेटे को जवानी में खो चुकी हामिद की दादी अपने पोते को ही अपना सर्वस्व मानती है। उस दादी का हृदय इस बेअदबी को सहन नहीं कर पाता। कहानी की तारतम्यता बनाए रखने हेतु मूल कहानी के एक दो संवादों को ज्यों का त्यों प्रयोग किया गया है। जिन पाठकों ने मूल कहानी पढ़ी है, आशा है वे पाठक इसे अवश्य पसंद करेंगे। उनकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत रहेगा।

थक गया है हामिद, सोना चाहता है पर निगोड़ी नींद भी जाने आज कहाँ छिप के बैठ गई है। थकावट के बावजूद नहीं आती। तो क्या झूठ कहते हैं लोग कि जितना ज्यादा थकावट होती है , उतनी ज्यादा और गहरी नींद आती है। पर आज! नींद आती ही नहीं... कई बार करवटें बदल चुका है, मोबाइल तो घंटों से देखा तक नहीं।एक बार देखा भी तो अफ्शां ऑनलाइन दिख गई फिर जाने क्यों मन ही नहीं हुआ मोबाइल देखने का।

हाँ, नूरे नहीं मिला, बल्कि कोई पुराना दोस्त नहीं मिला था हालांकि आस पड़ोस और दूर की रिश्तेदारियों के लोग मिले थे मेले में । शायद इसी लिए ऐसी उम्मतों (उत्सवों) को मेला कहते हैं, क्योंकि जमाने से भूले भटके लोगों से मिलना हो जाता है – हामिद जाने क्या क्या सोचने लगता है। सोचा तो ये भी याद आया कि लौटते समय कोई तो मिला था जिसने शायद उसे पहचान लिया होगा जब वह स्टेशन से घर आ रहा था। मगर ये क्या, कार की बंद खिड़की से सिर्फ उसका हाथ हिलाया जाना दिखा और फिर उसका अक्स गायब हो गया। कोई दुआ सलाम नहीं। यही गनीमत रही कि छब्बीस सालों बाद कम से कम पहचाना तो सही। यह भी यकीन नहीं कि जो मिला वह नूरे था या महमूद था या मोहसिन या फिर उनके अक्स.....कौन जाने। हामिद ने उठकर घड़ी देखी। पौने दो बज रहे थे। अभी भी काफी रात बाकी थी।

वह उठकर टहलने लगा। दूसरे कमरे में सो रही दादी के खर्राटों की आवाज़ आ रही थी। कमरे में पहुँच कर उसने दादी को पुरनज़र देखा। सोता हुआ इंसान फरिश्ता लगता है न! मगर उसकी दादी तो फरिश्ता ही हैं। उसे दादी से इस तरह बदतमीजी नहीं करनी चाहिए थी । उसने गौर किया कि दादी का तकिया कुछ नम लग रहा है। अब उसे लगने लगा कि कहीं न कहीं उससे

कुछ नहीं बल्कि बहुत ज्यादा गलत हो गया है। एक चिमटे की ही बात थी, अफ्शां को तो अमेज़न से भी मंगा कर दिलाया जा सकता था। मगर दादी भी तो कम नहीं है, जहाँ उसके हाथ में कोई नई चीज देखी, फट से मुँह खोलकर मांग लिया। जैसे कोई संकोच वह मांगने में नहीं करती थीं वैसे ही देने में कोई संकोच नहीं – हामिद को याद आया कि बचपन से उनकी यही आदत थी। तभी जब एक दिन पड़ोस वाली कम्मो चाची ने जब उनसे एक बार कुछ देर के लिए चिमटा मांगा तो उन्होने तुरंत दे दिया। और चिमटा ऐसा गया कि आजतक नहीं लौटा। दादी ने खुद ही यह राज खोला।

अब हामिद को गुस्सा आने लगा था। दादी को खुद पता था कि वह चिमटा उनका पोता खास उनके लिए लाया था। फिर भी उन्होने वह चिमटा चाची को दे दिया। एक पल भी मेरा ख्याल नहीं आया कि वह चिमटा उनका पोता उनके लिए लाया था। कैसे लाया था यह सोचते सोचते अब उसकी पलकें गीली होने लगीं।

कौन तो थी जिसके कपड़े सिलने में दादी को कुल जमा आठ पैसे मिले थे, ओह .... याद आया शायद बुआ फहीमन थी। उन दिनों हालात ऐसे थे कि त्यौहारों का आना अदालतों के सम्मन के आने जैसे लगता था। जैसे सम्मन आने से घर की इज्जत सवालों के घेरे में आ जाती थी वैसे ही त्यौहारों का आना किसी घर की पोल खोलने के लिए काफी था। हालांकि हामिद की दादी के घर की न तो कोई पोल थी और न कुछ खुलासे जैसी कोई बात थी क्योंकि रुपए तो दूर की बात थी, आने और अधन्ने भी विरले ही नमूदार हुआ करते थे तो त्यौहार उनके दिलों में सिर्फ एक कसक सी पैदा करते थे। जिंदगी में कुछ था तो बस दर्द था, गरीबी थी, दु:ख था और कई अगर और मगर थे और उनके एहसासात थे। वे एहसास भी अब होने बंद हो गए थे। वह तो सचमुच यह मानने लगा था कि उसके अब्बा परदेस में खूब ढेर सारा रुपया कमाने गए हैं और अम्मी, तो बस कुछ दिनों में वापिस आने वाली हैं खुदा के घर से। दुख, पीड़ा, गरीबी और व्यथा के इन एहसासों को भूलकर दादी और पोते के दिन 'मजे में' कट रहे थे, जीवन एक नदी के प्रवाह की तरह बह रहा था, बस ये त्यौहार ही बीच में धारा मे फेंके गए कंकड़ की तरह प्रवाह में खलल पैदा कर देते थे। ये उन एहसासों को दोबारा याद दिला देते थे जिन्हें भूल कर हामिद अपनी दादी के साथ एक सुखमय जीवन जी रहा था।

आज छब्बीस बरस बाद भी त्यौहारों का आना चौंका देता है। वजहें जरूर बदल गईं हैं। मगर त्यौहार मनाने की असली वजह हामिद के परिवार के पास न पहले थी और न ही अब है। आज हामिद विदेश की एक कंपनी में बड़े ओहदे पर पहुँच चुका है। कंपनी में उसके साथ काम करने वाली बड़े शहरों में पली बढ़ी कानवेंट एजुकेटेड जमींदार की लड़की अफ्शां उसकी बेगम है जिसने आज तक कभी भी गाँव नहीं देखा है। रसोई तो नहीं पर 'माडुलर किचन' में शौकिया कभी कभी दिख जाती है जब "कुक" उसके शौहर हामिद की मनपसंद दम-बिरयानी बनाता है। उसकी सखी गुलनार कुछ दिन पहले ही अपने खाविंद के दादा के घर से हो कर आई है और तब से अफ्शां को पता चला कि चीनी मिलों मे नहीं तैयार होती है बल्कि खेतों से निकलती है और एक हरी घास फूस जैसी दिखने वाली सब्जियाँ सोया, मेथी और पालक में अच्छा खासा फर्क होता है। वह तो यह जानकर भी हैरान रह गई थी जब उसे पता चला कि आलू पेड़ों पर नहीं बल्कि जमीन के नीचे उगता है। उत्साह और कौतूहल में एक बार तो उसने हामिद से उसके गाँव जाकर वहाँ का माहौल देखने की भी जिद कर डाली। मगर हामिद ने यह कहकर उसके उत्साह पर पानी फेर दिया कि गाँव में एसी नहीं होता जो उसके पसीने को सुखा सके। और उसे "फ्रेश" होने के लिए घर से बाहर भी जाना पड़ सकता है। वह भी "बेड टी" के बगैर। इतना ही सुनकर तो वह काँप उठी। कौन जाएगा अब गाँव! छोड़ो यार। अपन यहीं ठीक हैं। मगर फिर चिमटा कैसे आएगा। अफ्शां सोच में पड़ गई। "चिंता मत करो" हमीद ने उसे दिलासा दिया "मैं ले आऊँगा, कई दिनों से मुझे दादी बुला रही हैं। कहती हैं, इस बार ईद तुम्हारे साथ मनाउंगी"। "हाँ, जरूर ले आना, मैं भी देखना चाहती हूँ कि आखिर लोहे के भारी भरकम चिमटे

कैसे होते थे?" अफ्शां अब आश्वस्त हुई।

दादी उसे देख कर बच्चों की तरह हुलसने लगीं। रोना धोना बंद करने के बाद चटपट चूल्हा फूंकने लगीं। पोता शहर में रहता है। "गन्ने का रस तो तू पिएगा नहीं, शहर का हो गया है न, चाय पीने लगा है, पहले पल्लू पकड़ के पीछे पीछे लगा रहता था, अब तो कई बार बुलाने पर भी नहीं आता है ....." अपने पोपले मुंह से जाने क्या क्या बड़बड़ाते हुए पाइप से दादी चूल्हे की आंच तेज़ करने लगीं।

दादी के कृत्रिम क्रोध का रस लेता हुआ हामिद विदेश में स्थित अपने क्लाईंट से "बिजनेस चैट" कर रहा है। अचानक बेचैन हुआ हामिद खटिया से उठ खड़ा हुआ और कमरे से बाहर दालान को पार कर ऊपर आकाश में जाने क्या देखने लगा। "दादी, यहाँ सिग्नल नहीं आता क्या?" हामिद के स्वर में झुंझलाहट थी। "नल?" दादी ने चाय का कप रखते हुए जवाब दिया "नल तो कब से लगवा दिया प्रधान ने, ईद-बक़रीद पर पानी भी आता है, परसों आएगा, ईद जो है"। इस बार हामिद निरुत्तर होकर मुस्कुराने लगा।

शाम को टहलते हुए हामिद ने आसपास के इलाके का जायजा लिया। पड़ोसियों से पूछने पर पता चला कि ईदगाह की जगह नहीं बदली, बल्कि और बड़ी हो गई है, गरीब गुरबा लोगों के आस-पास की दुकानों को हटाकर, तकरीबन कुछेक एकड़ जगह निकाली गई तब जाकर पार्किंग के लिए जगह बन पाई। इस प्रकार अतिक्रमण भी साफ हो गया और सरकार को तहबाजारी भी मिलने लगी जिसके बारे में कहा जाता था कि उससे सरकार गरीबों का विकास करेगी और उन्हें रहने के लिए जगह देगी। वहाँ से फिर उन गरीबों को अतिक्रमण हटाने के नाम पर हटाया जाएगा और फिर कोई मॉल वगैरह बनेगा जिससे उगाहे गए टैक्स से गरीबों का "विकास" होगा और फिर उन्हें तीसरी जगह.....और ये सिलसिला चलता रहेगा। हामिद ने फिर सोचा। छब्बीस सालों में जैसे एक युग बदल गया। सारे जाने पहचाने चेहरे जुदा हो गए। पुराने दोस्तों महमूद, नूरे आदि के बारे में पता करने की कोशिश की पर कुछ खास पता नहीं चला। कि तभी कंधे पर किसी ने जोरदार धौल जमाई - "क्यों बे हामिदवा! हमीं से पूछता है कि नूरे कहाँ रहता था, गोकि पहचानना भी छोड़ दिया आने के साथ साथ"। हामिद ने पलट कर देखा तो दरमियाने कद का एक खूबसूरत नौजवान जिसके चेहरे पे थोड़ी देर पहले वाली गंभीरता गायब हो चुकी थी और उसकी जगह मसखरेपन ने ले ली थी। हामिद ने उसे थोड़ा गुस्से और ज्यादा गौर से देखा तो चौंका - "अरे, अभी इसी से तो मैंने इस इलाके के कुछ पूर्व निवासियों के बारे मे पूछा था और इसने मुझे घूरते हुए "......नहीं" मे जवाब दिया था। और अब ये यहाँ .....? हामिद ने और पास से देखा तो उसका गुस्सा उड़नछू हो चुका था और उसकी जगह शरारत ने ले ली थी ..... "अबे तू ....! ये काला कोट पहन कर अब कौन सा खेल खेल रहा है तू, अब भी नहीं सुधरा नूरे !

नूरे - "जनाब, खादिम को नूर मुहम्मद कहते हैं और फिलहाल मैं मुल्क की आला अदालत के मुकदमे देखता हूँ । यहाँ एक

लोकल ऑफिस भी खोल लिया है ताकि जब छुट्टियों में आऊँ तो काम काज न छूटे। तू बता, इतने दिनों बाद दोस्तों की न सही, दादी की याद कैसे आ गई? और है कहाँ तू आजकल"?

हामिद – "…. यार सब कुछ तू यहीं पूछेगा क्या खड़े खड़े"?

नूरे उर्फ नूर मुहम्मद – "नहीं, बिलकुल नहीं, चल मैं तुझे अपने ऑफिस में बैठाता हूँ न! वहीं जी भरकर बातें कर लेना और मैं अपना काम भी….!"

और इस तरह दोनों दोस्तों ने एक दूसरे खूब जी भर कर बातें की। नूरे को पता चला कि जब हामिद की दसवीं की परीक्षा का केंद्र दूसरे कस्बे में पड़ा तो उसकी दादी के मायके एक रिश्तेदार से जानपहचान निकल आई। हामिद से बातचीत करके जब उन्हें यह इत्मीनान हुआ कि हामिद की तालीम सरकारी वजीफे से हो रही है और वह अपनी तालीम के इंतजामात के लिए अपनी दादी पर बोझ नहीं है तो उन्होने दसवीं के बाद की पढ़ाई के लिए उसे अपने शहर आने का न्यौता दिया जिसे उसने दादी की इजाजत से कबूल कर लिया। इसके बाद कैसे उसकी आगे की तालीम पूरी हुई और कैसे उसकी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी होने से पहले ही एक विदेशी कंपनी ने नौकरी के लिए बुला लिया, आज भी उसे सपना लगता है । इधर हामिद ने नूरे के ठाट बात देखकर यह तो अंदाजा लगा लिया कि नूरे अब नूर मुहम्मद है। दो नामों के इस सफर को तफसील से नूरे, माफी चाहूँगा, नूर मुहम्मद साहब ने किस तरह पूरा किया – ये मैं नूर की जबानी सुनाने लगा तो जमाने बीत जाएंगे, बस आप यूं समझें कि नूरे मियां, पहले ही एक खाते पीते घर से ताल्लुक रखते थे, बाद में उन्होने अपने शौक 'वकालत' पढ़ने और करने का इरादा किया और घरवालों की मुखालफत के बावजूद इलाहाबाद का रास्ता पकड़ लिया। फिर एक दिन हुआ यूं कि एक दिन काले कोट में अपने किसी मुवक्किल के चार पहिये वाहन से घर वापस लौटे। घरवाले समझ गए कि नूरे मियां ने उनका पैसा और अपना वक़्त ज़ाया नहीं किया तो वे भी खुश हो गए। आज उनकी वकालत लाखों में चलती है।

उसी मुलाक़ात में पता चला कि डा. महमूद का दवाखाना कस्बे के आखिरी छोर पर उस ओर है जहाँ से गाँव की हद खत्म और कब्रिस्तान की हद शुरू होती है जबकि मोहसिन तबादले से पहले शहर की कोतवाली का मुखिया लगा था, अभी शायद राजधानी में तैनाती है। पीने पिलाने के उसी दौर में ईदगाह जाने का कार्यक्रम बना। मगर दिक्कत यह थी कि नूरे को उसी दिन अपने किसी मुवक्किल के पास थोड़ी देर के लिए जाना था अतः यह तय हुआ कि वह उससे सीधे ईदगाह में ही मिलेगा।

ईद के रोज़ दादी ने हामिद को सुबह जल्दी उठा दिया। हामिद ने देखा कि दादी सुबह सुबह तैयार होकर धोबन, नाइन, मेहतरानी और चूड़ीहारिन के हिस्सों की सेवइयाँ तैयार कर रही हैं। और ऐसा करते हुए बार बार आबिद का नाम लेते हुए रो रही हैं। हामिद तसल्ली देता है – रो मत दादी, अब्बू नहीं है तो क्या हुआ, मैं तो हूँ । अब से ईद पर हमारे घर से कोई खाली नहीं जाएगा। सबको ईदी मिलेगी" …. कहते हुए हामिद अपनी दादी को अपनी बाहों मे भर लेता है और उन्हें दिलासा देता है। दादी को अचानक से कोई काम याद आ गया है और वह "छोड़ मुझे …." कहते हुए दालान में आ जाती हैं जहाँ कोई उन्हें आवाज़ दे रहा था। यह मनिहारिन थी – "क्यों आबिद की अम्मी! कहती थी कि पोते को आने दे, मैं ये दूँगी, वो दूँगी" आँखें नचाते हुए मनिहारिन ताना दे रही थी "अब क्या हुआ, बाहर क्यों नहीं निकलती?" "हाँ, हाँ तो मैंने कब मना किया है…." पान चबाते हुए दादी मुसकाईं "जरा ईद की नमाज़ तो होने दे…." अब मनिहारिन आश्वस्त हुई – "ठीक ठीक है….. भूल मत जाना अपना वादा!" कहते हुए तेज कदमों से गली में गायब हो गई।

करीब पाँच एकड़ में ईदगाह का मैदान फैला हुआ था तो करीब दो एकड़ में पार्किंग की जगह निकाली गई थी। इन्सानों से ज्यादा तरह की हर रूप रंग की गाडियाँ मौजूद थीं। कहना चाहिए कि इन्सानों से ज्यादा गाड़ियों के प्रकार थे। हाँ, मगर ये नहीं था कि आप बाइक हों पर कार का मुखौटा ओढ़ कर कार की तरह दिख रहे हों जैसे कि अमूमन इन्सानों की फितरत हुआ करती है।

मेले मे हामिद को कोई नई बात महसूस न हुई। युवावस्था तक का अपने जीवन में वह इतनी बातें और तमाशे देख सुन चुका था कि अब कोई बात उसे हैरतअंगेज न लगती थी। सबसे बड़ा हैरतअंगेज कारनामा उसे यह लगता था कि उसके जैसे मातृ पितृ विहीन छोटे से गांव के बालक का विदेशी कंपनी में नौकरी पा जाना। छब्बीस बरस पहले उस ईद के और आज के मेले में उसे कोई फर्क न दिखता। वही झूले, वही ठेले, भीड़-भाड़, वही तमाशे और नुमाइशें और वही ईदगाह! मगर नहीं, ईद की नमाज हर बरस अदा की जाती है, तरीका वही, तहजीब वही और दुआएँ भी वही। मगर ऐसा क्या है इनमे जो हर बार, और हर बरस देखने से भी जी नहीं भरता है। पता नहीं ऐसी कौन सी गैबी नियामत है जो इन्हें देखने से महसूस होती है। दादी कहती थीं, ईद पर अल्लाह सबकी दुआएँ कबूल करता है। शायद उस ईद पर मेरी और दादी की दुआ कबूल हो गई होगी तभी तो आज मैं कहाँ से कहाँ चला आया – हामिद सोचता है। दोस्तों को खोजा पर पता चला कि कोई कहीं फंसा है और 'कल' पक्का मिलने का वादा कर रहा है तो कोई अपने बाल बच्चों को लेकर दूर किसी शहर में बसा है और बाद में घर आकर मिलने का वादा कर रहा है। नूरे भी कमबख्त जाने कहाँ मर रहा है।

हामिद को अभी तक याद है कि उन दिनों जब उसका मीठा खाने को मन होता था और भूख भी लगी होती थी तो उसके यही दोस्त उसे दिखा दिखा के मिठाई खाते थे। आज वो चाहे तो हलवाई की पूरी दुकान खरीद सकता है मगर कौन देखेगा और किसे पता चलेगा! उसे ललचा कर रेवड़ी खाने वाला मोहसिन, आज दुबई में कहीं नौकरी कर रहा है। मेले मे उसे कई खिलौने वाले मिले और उन खिलौनों को लेने की इच्छा रखने वाले बच्चे भी मिले। बच्चे खिलौनों के लिए ऐसे मचल रहे थे मानो उनके प्राण उसी खिलौनों में बस रहे हों पर उनके माँ बाप उन खिलौने वालों से ऐसे दूर भाग रहे थे मानो वह कोई साहूकार हो उनसे अपना पैसा वापस लेने आ रहा हो। बच्चों से खिलौनों की बुराइयाँ बताई जा रही हैं। उनकी नश्वरता का ज्ञान दिया जा रहा है मगर बच्चे भी एक हठयोगी की तरह अपनी टेक पर अड़े हैं। ऐसे ही एक दुखी और रूआँसे बच्चे को जो छब्बीस बरस पहले के हामिद की तरह लगता था, उसे हामिद ने अपने पास बुलाया और पूछा – "आजा बेटे, इधर आ ... हमारा राजा बेटा! क्या लेगा हमारा राजा!" "आप"? माँ की आँखों में कई सवाल थे! पिता ने भी बच्चे को गोद में दुबका लिया, हालांकि बच्चा अभी भी आशा भरी निगाहों से हामिद की तरफ देखे जा रहा था। इतनी देर में हामिद ने खिलौने वाले से बैटरी की मोटर और मिट्टी का सिपाही, दोनों खरीद कर बच्चे को पकड़ा भी दिया। माँ – बाप का कमजोर विरोध हामिद के जोरदार आग्रह और बच्चे की जिद के आगे दबकर रह गया। इस सबाब के काम के बाद अब हामिद का मन थोड़ा थोड़ा मेले मे जमने लगा पर थोड़ी देर बाद फिर उचट गया। अब उसकी आँखें किसी बर्तन वाली दुकान को खोजने मे लगी थीं। दूर तक लोगों का हुजूम था, इन्सानों और खेल तमाशों का शोर शराबा था, दुकानें हर मेल की थीं, उनमे

ग्राहक भी थे पर नहीं थे तो बस हामिद के दोस्त, उनकी बातें और ...... चिमटे और बर्तनवालों की दुकानें। मेले में घूमते घूमते वह थक जरूर गया था पर उसने भी सोच रखा था कि बिना चिमटा खरीदे नहीं जाएगा। इसीलिए उसने चलना जारी रखा और अंततः उसे एक बर्तनवाली दुकान दिख ही गई। खुशी के मारे उसकी थकावट काफ़ूर हो गई। तेज़ कदमों से उसने दुकान तक का फासला तय किया। दुकान पूरी सुनसान थी। दुकानदार शायद कहीं गया था, हामिद ने ऊंची आवाज़ में आवाज़ दी – "…….कोई है?" दूसरी आवाज़ में जमीन से पहले एक सर और बाद मे पूरा शरीर प्रकट हुआ। "मक्खी मारते मारते थक गया तो जरा आँख लग गई….." यह बात उस नाटे कद के दोहरे बदन वाले दुकानदार ने बिना किसी झिझक के कहा। "क्या दिखाऊँ साहब ……?" अब वह दुकानदार धंधे में लौट चुका था। "चिमटा …..!" बिना किसी लाग लपेट के हामिद ने शीघ्रता से कहा।

दुकान में ज्यादा चिमटे उपलब्ध नहीं थे पर जितने भी थे हामिद को उन्हीं में से एक चिमटा लेना था। उसने एक चिमटा पसन्द किया। यह फौलाद का था और साथ ही हल्का भी। "कितने हुए?" पूछने पर दुकानदार ने छ: सौ बताए। वैसे तो हामिद ऐसे सौ चिमटे वहीं खड़े खड़े खरीद सकता था पर उसने पाया कि सहसा उसके अंदर का गाँव वाला पुराना हामिद जाग गया, "ठीक ठीक लगा लो …..!" ठीक उसी अंदाज़ में ये अलफाज बोले गए जिस तरह आज से छब्बीस बरस पहले किसी बालक ने उसी जगह बोले थे। फर्क यह था कि इस यह कहने वाला हामिद डरा नहीं, बल्कि चेहरे पर मसखरेपन का भाव लेकर वहीं डटा रहा। "क्यों मज़ाक कर रहे हो साहिब? सुबह से बिक्री नहीं हुई और तुम अलग से आ गए टाइम खराब करने!" दुकानदार को लगा जैसे हामिद को टाइम पास करना है। इस बार हामिद ने संजीदगी से कहा – "तीन सौ में देना हो तो बोलो….." कहते हुए उसने जेब से रुपए निकाल भी लिए । इस बार दुकानदार मना न कर सका।

विजयी भाव से चिमटे के साथ हामिद घर में दाखिल हुआ तब दादी रसोई में उसके लिए उसकी मनपसंद बिरयानी और मुसल्लम बना रही थीं। चिमटे को मेज पर रखकर वह हाथ-मुँह धोने गुसलखाने चला गया। कुछ देर बाद जब गुसलखाने से निकला तो उसने चिमटे को अपनी जगह से नदारद पाया । इधर उधर देखते हुए मुसल्लम की खुशबू उसके नथुनों से टकराई तो चिमटे का ख्याल हवा हो गया और अचानक उसे याद आया कि उसने सुबह से दो गोंद के लड्डुओं के सिवाय कुछ नहीं खाया है। "जल्दी से खाना लगाइए दादी, पेट में चूहे….."! वाक्य अधूरा ही रह गया था हामिद का, जिस क्षण उसने दादी के हाथों में चिमटा देखा। और तभी उसे चिमटे का पैकेट भी फर्श पर तुड़ी मुड़ी हालत में मिल दिख गया।

"आपने बिना पूछे चिमटे को छुआ कैसे? मुझसे बिना पूछे

आपने चिमटे का पैकेट भी फाड़ दिया? आखिर क्यों?" हामिद के मुँह से ये लफ़्ज़ बेसाख्ता निकल गए। वास्तव ये अलफाज ऊंची आवाज़ में भी निकले थे जिसका अंदाज़ा हामिद को नहीं था।

मगर दादी को हो गया था "हामिद! ऐसा मैंने क्या कर दिया?" वास्तव में दादी को समझ में नहीं आया था कि उन्होने किया क्या था।

"हाँ हाँ , आपसे ही कह रहा हूँ। आपने मेरी इजाजत के बगैर चिमटे को हाथ लगाने की जुर्रत कैसे की? आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं जो कुछ भी कमाऊँ या लाऊं, वह सिर्फ आप के लिए ही हो? मेरे साथ और कोई नहीं है क्या? आखिर मुझे पालने पोसने की और कितनी कीमत वसूलेंगीं आप? बरसों पहले एक चिमटा लाया भी था तो वह आपकी सखावत (दानशीलता) की भेंट चढ़ गया। पता है अपने कितने अरमानों का खून करके मैं चिमटा लाया था आपके लिए? मैं चीजें जमा करता रहूँ और आप लुटाती रहें, आप वाहवाही में जान भी ले लें मेरी, मैं उफ तक न करूंगा पर......." हामिद का विस्फोट जारी था।

"हाँ , सही कहा बेटा तूने, तेरे तो बहुत पूछने वाले हैं पर मेरा तेरे सिवा है ही कौन....! पालने की कीमत तू क्या देगा बेटा जो तेरा बाप नहीं दे सका .....! मैं तो ममता ही लुटाती आई आज तक तुझ पर .....!" बोलते बोलते दादी का गला रुँध गया। भावातिरेक में उनसे बोला नहीं गया तो उनकी आवाज़ सिसकियों में बदल गई। अब ज्यादा देर तक वे वहाँ न ठहर सकीं, हालांकि दोनों हाथों में अपना दुपट्टा अपने मुँह को दबाकर रुलाई को रोकने की असफल कोशिश करती हुई दादी कमरे से बाहर जाते जाते यह कहने से खुद को न रोक सकीं "तेरे पसंद की बिरयानी और मुसल्लम बनाया था, बेटा खा जरूर लेना ....."

पौ फट चुकी थी। रात भर ये सारी बाते सोचता रहा हामिद। माँ बाप के जाने की तो उसे याद ही नहीं। जबसे होश संभाला तब से अपनी दादी को ही देखा। दादी ने उसे जमाने की जालिम नज़रों से कैसे बचा के रखा था, ये आज उसकी समझ में आ रहा था जब इतने दिनों बाद गाँव वापस आने पर सभी उससे नज़रें चुराते से लग रहे थे। इन सभी ने क्या किया था आज तक उसके लिए! सिर्फ चिढ़ाने, तरसाने और रुलाने के सिवाय। जब भी ऐसा होता तो वो रूआँसा होकर अपनी दादी के पास आता और सारा गुस्सा उस पर उतारते हुए चिल्लाता – "आप तो कह रही थीं कि अबकी रमजान से पहले अब्बू आ जाएंगे! क्यों झूठ बोलती हैं आप? आखिर कब आएंगे अब्बू? महमूद मुझे धमकाता है, मोहसिन मुझे दिखा दिखा कर मिठाई खाता है, जब मेरे अब्बू आएंगे तो मैं भी उसे दिखा कर मिठाई खाऊँगा। पर कब आएंगे अब्बू? अम्मी तो तो चलो अल्ला मियां के पास गई हैं। उनको तो जब अल्ला मियां की इजाजत मिलेगी तब आएंगीं पर अब्बू तो किसी इजाजत के मोहताज नहीं!"

ऐसे न जाने कितने सवालात थे जिनके जवाब दादी उसे देती थीं और वह उनकी गोद में सो जाता था। पर अब क्या हुआ दादी को? दादी के पास मेरे एक भी सवाल के जवाब नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। दादी ने अब तक मेरे सभी सवालों के जवाब दिए हैं तो आगे भी देंगी। हामिद सोच रहा है।

सुबह हो चुकी है, लगता है दादी देर से सोई हैं इसलिए अभी तक नहीं उठीं। मैं ही चाय बनाकर उन्हें उठाऊंगा। हामिद ने चाय बनाई और दादी के सिरहाने स्टूल पर रख दिया। अब दादी को आवाज़ दी उसने – दादी उठिए! दादी! ओ दादी! उठिए, अभी तक नाराज़ हैं क्या हमसे? इस बार हामिद ने दादी को हाथ पकड़ कर उठाना चाहा मगर.........! ये क्या, उनका हाथ तो बिलकुल ठंडा और बेजान था।

दादी .....! इस बार सबसे ज़ोर से चिल्लाया था हामिद।

दादी हामिद को उसके चिमटे के साथ छोड़ कर हमेशा के लिए जा चुकी थीं। चिमटा अपने पैकेट में पैक होकर उनके सिरहाने पड़ा हुआ था।

कविता

दोस्ती के रंग

सुमित जांगड़ा
लेखाकार
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

दोस्तों का महासंग्राम, ये अनोखा किस्सा है,
हर किरदार में मसाला, हर एक रंग अलग-सा है।

'सलाहाचार्य' वो गुरु, हर बात में ज्ञान बांटे,
खुद का नहीं पता कुछ पर,
दूसरों को समझाए घंटों तक हांके।

'ज्ञान की गंगा' बहाए हर पल,
दुनिया का हर रहस्य बताए,
अमेजन के जंगल से लेकर,
दवाईयों का विज्ञान समझाए।

आपको बताएगा, कैसे जीवन संवारना चाहिए,
पर खुद की उलझनों को हरदम टालना चाहिए।

रिश्तों का हो मसला या करियर की हो बात,
ऐसे समझाए जैसे हो ज्ञान का गहन खजाना साथ।

आप अगर उसकी मान कर मुसीबत में फँस गए,
तो कहेगा, "यार, मैंने तो पहले ही चेताया था,
तुम क्यों नहीं समझ पाए?"

अगर घूमने फिरने का जब भी बने प्लान हमारा,
'मैं लिख के देता हूँ कोई नहीं जाएगा' यहीं है उसका नारा।

'आलसी महाशय' का आलम है बड़ा निराला,
कल पर सब कुछ टाल दे,
काम में जी न लगाए मेरा दोस्त लाला।

घूमने फिरने बुलाओ, तो बोले "अरे मन नहीं है यार,"
घर बैठे-बैठे यू-ट्यूब में दुनिया घूमे,
यही बस उसका संसार।

फिल्मों का ऐसा शौक़ीन है जैसे
चलती फिरती सिनेमा की दुकान।
हर सीन याद, बॉलीवुड हो या हॉलीवुड,
फिल्मों की करो बात तो वही दे दे ज्ञान।

गिटार बजाने का शौक, पर स्टेज पे आए ठंडा पसीना।
अंदर ही अंदर वो रॉकस्टार बने,
पर सामने माइक आते ही हो जाए मुश्किल जीना।

मेरे 'हेरा फेरी' दोस्त का सपना है करोड़पति बनना,
हर दिन नए शेयर खरीदना,
"21 दिन में हो जाएगा पैसा डबल,
बस तुम मेरी बात मानना!"

हेरा फेरी के अक्षय कुमार की तरह
वो नई-नई स्कीम लाता हर बार,
बस थोड़ा इंतज़ार करो,
इसमें पैसा लगाते ही बन जाओगे तुम मालदार!

दूसरों को मोटिवेट करना,
"मेहनत का फल मीठा होता है," वो सबको समझाए,
लेकिन जब खुद को करना हो कोई काम,
तो हमेशा बहाने बनाए।

मेरे दोस्त की बातें, बड़ी हैं दिलचस्प,
दूसरों को झाड़ पर चढ़ाने में है वो मास्टर,
"तू कर ले ये, तू कर ले वो,"
ऐसी बातों का है उसके पास थोक में भंडार।

यही है, दोस्तों संग जिंदगी का मजा,
बिना इनके ज़िंदगी बेरंग, और धुंधली, फीकी-सी सजा।

नववर्ष है

बाल बिहारी प्रजापति
लेखापाल
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)-2,
महाराष्ट्र, नागपूर

नवयुग है, नवयौवन है... नववर्ष है,
संघर्षों की बेला में चलना है,
ऊँचाई पर चढ़कर आगे बढ़ना है,
नवकर्म है, नवचेतन है... नववर्ष है।

नववर्ष में नवश्रृंगार करें,
नवबल से दुष्टों का संहार करें
नवमन में सत्कर्मों का संचार करें,
नवकार्यों से नवसंधान करें,
नवहम हैं नवसब हैं... नववर्ष है।

इस श्रृष्टि का कण-कण पावन है,
हर मन पावन है, हर दिन पावन है,
इस पावनता में हम सब मिलकर
इस राष्ट्र का गुणगान करें,
नवमान है, नवस्वाभिमान है... नववर्ष है।

बदलता वक़्त

विवेक शर्मा
आंकड़े प्रविष्ट संचालक,गोपनीय विभाग
कार्या. महालेखाकार (ले. एवं हक.)
महालेखाकार भवन, कौलागढ़,
उत्तराखण्ड, देहरादून

अच्छी थी पगडंडी अपनी
सड़को पर तो जाम बहुत है
फुर्र हो गई फुर्सत अब तो
सबके पास काम बहुत है
नहीं जरुरत बुजुर्गों की अब
हर बच्चा बुद्धिमान बहुत है
उजड़ गए सब बाग बगीचे
दो गमलो में शान बहुत है
मट्ठा, दही नहीं खाते हैं
कहते हैं जुकाम बहुत है
पीते हैं जब चाय तब कही
कहते है आराम बहुत है
बंद हो गई चिट्ठी पत्री
व्हाट्सएप पर पैगाम बहुत हैं
झुके-झुके स्कूली बच्चे
बस्तों मे सामान बहुत है
नहीं बचे कोई सम्बन्धी
अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है
सुविधाओं का ढेर लगा है यार
पर इंसान परेशान बहुत है।

पतझड़ की ऋतु है आई

कुमारी प्रियंका
कनिष्ठ अनुवादक (राजभाषा)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. व हक़.)-2,
महाराष्ट्र, नागपुर

पतझड़ की ऋतु है आई
वसंत लिए पास है आई
सनसनाती हवाओं के झरोखों से
पेड़ों के पत्ते झड़ने को आई।

पतझड़ की ऋतु है आई
नील, धवल, स्फटिक-सा नभ साथ है लाई
कमल-कुमुदिनियों भरे
ताल-तल्लियों का मौसम है आई।

पतझड़ की ऋतु है आई
फूलों की खुशबू साथ है लाई
पौधों की डालियाँ कलियों से लदी
भौरो के लिए बहार है लाई।

पतझड़ की ऋतु है आई
त्योहारों की उमंग साथ है लाई
क्या दशहरा, नवरात्रि, दीपावली
घरों, बाजारों व गलियों में धूम है छाई।

पतझड़ की ऋतु है आई
वसंत लिए पास है आई
पके, पुराने व पीले पत्तों की जगह
नए पत्तों के साथ एक नई उम्मीद है लाई।

मेरे देश की बेटी

रविन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक),
हरियाणा, चंडीगढ़

मैं निःशब्द हूँ उस मासूम डाक्टर बेटी के दर्द-सागर अथाह से !

जिसे माता पिता दूर नहीं करते थे, एक पल भी अपनी निगाह से

छत्तीस घंटे की ड्यूटी के बाद, सोई थी वह आरामगाह में

हाय! इतनी छोटी उम्र में, पहुंचा दी गयी मौत की पनाह में

काश! जान की बाजी लगा बचा लेता गर कोई वहां आता

खुद ना रोक पाता दरिंदों को, तो जो हुआ दुनिया को तो बतलाता

अव तो यही उधेड़-बुन है कि हैवानों से बदला कैसे लिया जाए

वही दहशत, चीखें, दर्द बलात्कारियों को कई गुना करके दिया जाए

कर दो उन जानवरों को, जनता की अदालत के हवाले

ताकि एक अंतिम क्रूर सबक, हर बलात्कारी हमेशा के लिए पा-ले

आज नवजात बच्चियों तक को नहीं छोड़ रहे निर्दयता से मारा है

कितनी हैरानी की बात है ऊपर से नीचे तक हर इंसान बेचारा है?

ऐसी सज़ा दो सभी पत्थर दिल दरिंदों को कि उनकी आत्मा कांप जाए

ताकि जब ईश्वर के सामने हों, इनकी नीयत परमात्मा भी भांप जाए

बेटी पढाओ बेटी बचाओ का नारा अब बदल देना चाहिए

अब बेटों को "बेटियों की इज्जत करो" ये सबक देना चाहिए

पुराने दिन

हरिओम कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
कार्या. महानिदेशक लेखापरीक्षा (आयुध निर्माणियाँ)
कोलकाता

"कोयल की कूक, कौए की काएं,
याद पुराने दिन कुछ आएं,
गांव की सुबह, शाम सुहानी,
याद जिन्हें कर हम पछताएं,

वो भी क्या दिन थे, आलम क्या था,
थोड़े में सबका गुजारा होता था,
सुबह, दोपहर थी, शाम थी, रात थी,
प्यार, परिवार, पड़ोसी की भी बात थी,

पांच सौ का नोट तो ईद का चाँद था,
सौ का भी नोट यदा-कदा दिखता था,
दस रुपए में सब्जी झोली भर थी,
आलू, मटर, गोभी, परवल, टमाटर थी,

तोरई, घीया तो टाटी पे इतराती थी,
कद्दू झोपड़ियों पे बैठ मुस्कुराता था,
मिर्ची छबीली कहीं पे भी उग आती थी,
गाजर, मूली सब के हाते में लहराता था,

खेत, खलिहानों में फसलें लहलहाती थीं,
नदी, कुआं, नाहर, पोखड़ सबकी प्यास बुझाती थी,
डाली पे इमली, टिकोला हाय कितना ललचाता था,
बेर, जामुन, आंवला भला किसको नहीं हर्षाता था,

मुर्गे की बांग से सवेरा होता था,
शाम को दुवरे पे घूरा जलता था,

ताई, मां, काकी संग खाना पकाती थी,
दादी मां बैठ ढेरों किस्से सुनाती थी,

मास्टर जी बरगद, पीपल के नीचे पढ़ाते थे,
किताबी शिक्षा के संग नैतिक ज्ञान बताते थे,
डाकिया सबका चहेता, जाना-पहचाना चेहरा था,
बरफ, सोनपापड़ी वाला लगता कितना अच्छा था,

पर्व, त्योहारों पे मेला लगा करता था,
बच्चे, बूढ़े सारे साथ जाया करते थे,
औरतें घूंघट डाले सज के निकलती थीं,
बैलगाड़ी, टमटम पे चढ़ के पहुंचती थीं,

रेडियो युवा, सयाने, बूढ़ों का भी यार था,
मनमोहक गाने और सुनाता समाचार था,
थोड़ी से देर से पर टीवी भी फिर आई थी,
साथ रामायण-महाभारत अपने लाई थी,

सारी परेशानी, उलझन, मिल-जुल के हल होते थे,
सारे ही गांववासी इक-दूजे के बल होते थे,
कोई ना अनजाना था,सब में रिश्तेदारी थी,
सुख-दुख में, हंसी-खुशी में पूरी भागीदारी थी,

कच्ची सड़कें थीं, कच्चे-पक्के थे मकां सबके,
पर मन के सच्चे थे सब, दिल में था ईमां सबके,
जाने क्या हवा बही, ये प्यारे बंधन टूट गए,
हम आएं शहर, सुहाने दिन सब पीछे छूट गए"

प्रेरक प्रसंग

अस्तित्व

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

बहुत समय पहले की बात है। एक घने और विस्तृत जंगल में तीन बहुत बड़े पहाड़ थे। उस जंगल का अपना कोई नाम न था, ये पहाड़ ही उस जंगल की पहचान थे।

एक बार इंद्रदेव उस जंगल में पधारे। जब उन्हें पता चला कि इस स्थान का कोई नाम नहीं है। उन्होंने तीनों पहाड़ों से कहा कि वे इस जगह का नामकरण उनमें से किसी एक के नाम पर ही करेंगे।

इसके साथ ही उन्होंने तीनों से एक-एक वरदान मांगने को कहा और कहा कि एक साल बाद वे पुनः आकर देखेंगे। जिसका प्रभाव सबसे अधिक होगा, उसी के नाम पर इस स्थान को जाना जाएगा।

इंद्रदेव की बात सुनकर पहले पर्वत ने कहा कि प्रभु, मुझे इतना बड़ा कर दीजिए कि मैं हर दिशा से सबको दिखूं।

इंद्रदेव ने तत्काल उसे विशाल बना दिया।

दूसरे पर्वत ने कहा कि प्रभु, मुझे हरियाली से भर दीजिए, हर तरह के पेड़- पौधे मेरी सीमा में लगें।

इंद्रदेव ने उसे तुरंत ही हरा-भरा कर दिया।

इसके बाद तीसरे पहाड़ की बारी आई। उसने वरदान मांगा कि प्रभु, मुझे समाप्त कर दीजिए, एकदम समतल कर दीजिए, ताकि लोग मुझ पर बस सकें।

इंद्रदेव ने उसे तुरंत ही उसे समतल कर दिया।

तीनों को वरदान देकर इंद्रदेव स्वर्गलोक चले गए। एक साल के बाद इंद्रदेव वापस उस स्थान पर आए।

उन्होंने देखा कि सबसे बड़ा पहाड़ सूखा पड़ा है।

दूसरा पहाड़ अपनी हरियाली के कारण ढेरों जानवरों और पक्षियों का घर बन चुका है।

इसी के साथ जब उन्होंने तीसरे पहाड़ की तरफ देखा, तो पाया कि वहां इंसानों की पूरी बस्ती बस चुकी है। सभी लोग उस स्थान पर बहुत सुखी हैं और आनंद मंगल में जीवन बिता रहे हैं। हर तरफ उल्लास है, जीवन के रंग बिखरे हैं, मानो धरती पर स्वर्ग उतर आया है।

बहुत ही स्वाभाविक बात है कि इंद्रदेव ने उस तीसरे पहाड़ के नाम पर ही उस स्थान का नामकरण कर दिया। वह पहाड़ अब कहीं नहीं था, पर स्वयं को मिटाकर वह लोगों के जीवन में उतर आया था। एकमात्र राह है।

दूसरों के अस्तित्व की रक्षा करने के लिए खुद के अस्तित्व को मिटा देने वाले ही महान बनते हैं व इस धरती पर पूजे जाते हैं।

ऐसे जज्बे वाले लोगों को हमेशा दूसरों के दिल में जगह मिलती है।

विश्वास

एक बार एक व्यक्ति रेगिस्तान में कहीं भटक गया ।उसके पास खाने-पीने की जो थोड़ी बहुत चीजें थीं, वो जल्द ही ख़त्म हो गयीं थीं। वह मन ही मन मान चुका था कि अगले कुछ घण्टों में अगर उसे कहीं से पानी नहीं मिला तो उसकी मौत निश्चित है।

पर कहीं न कहीं उसे ईश्वर पर यकीन था कि कुछ चमत्कार होगा और उसे पानी मिल जाएगा।

तभी उसे एक झोपड़ी दिखाई दी। उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ।

पहले भी वह मृगतृष्णा और भ्रम के कारण धोखा खा चुका था। पर बेचारे के पास यकीन करने के अलावा कोई चारा भी तो न था।

आखिर यह उसकी आखिरी उम्मीद जो थी। वह अपनी बची खुची ताकत से झोपड़ी की तरफ चलने लगा। जैसे-जैसे वह करीब पहुँचता, उसकी उम्मीद बढती जाती और इस बार भाग्य भी उसके साथ था।

सचमुच वहाँ एक झोपड़ी थी।

पर यह क्या? झोपड़ी तो वीरान पड़ी थी। मानो सालों से कोई वहाँ भटका न हो। फिर भी पानी की उम्मीद में वह व्यक्ति झोपड़ी के अन्दर घुसा।

अन्दर का नजारा देख उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। वहाँ एक हैण्ड पम्प लगा था।

वह व्यक्ति एक नई उर्जा से भर गया। पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसता वह तेजी से हैण्ड पम्प को चलाने लगा।

लेकिन हैण्ड पम्प तो कब का सूख चुका था।

वह व्यक्ति निराश हो गया, उसे लगा कि अब उसे मरने से कोई नहीं बचा सकता। वह निढाल होकर वहीं गिर पड़ा।

तभी उसे झोपड़ी की छत से बंधी पानी से भरी एक बोतल दिखाई दी। वह किसी तरह उसकी तरफ लपका और उसे खोलकर पीने ही वाला था कि...

तभी उसे बोतल से चिपका एक कागज़ दिखा उस पर लिखा था– "इस पानी का प्रयोग हैण्ड पम्प चलाने के लिए करो और वापिस बोतल भरकर रखना ना भूलना।"

यह एक अजीब सी स्थिति थी। उस व्यक्ति को समझ नहीं आ रहा था कि वह पानी पिये या उसे हैण्ड पम्प में डालकर चालू करे।

उसके मन में तमाम सवाल उठने लगे, अगर पानी डालने पर भी पम्प नहीं चला तो। अगर यहाँ लिखी बात झूठी हुई। और क्या पता जमीन के नीचे का पानी भी सूख चुका हो तो लेकिन क्या पता पम्प चल ही पड़े, क्या पता यहाँ लिखी बात सच हो,

वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे?

फिर कुछ सोचने के बाद उसने बोतल खोली और कांपते हाथों से पानी पम्प में डालने लगा।

पानी डालकर उसने भगवान से प्रार्थना की और पम्प चलाने लगा। एक, दो, तीन और हैण्ड पम्प से ठण्डा-ठण्डा पानी निकलने लगा।

वह पानी किसी अमृत से कम नहीं था। उस व्यक्ति ने जी भरकर पानी पिया, उसकी जान में जान आ गयी। दिमाग काम करने लगा।

उसने बोतल में फिर से पानी भर दिया और उसे छत से बांध दिया। जब वो ऐसा कर रहा था, तभी उसे अपने सामने एक और शीशे की बोतल दिखी।

खोला तो उसमें एक पेंसिल और एक नक्शा पड़ा हुआ था, जिसमें रेगिस्तान से निकलने का रास्ता था।

उस व्यक्ति ने रास्ता याद कर लिया और नक़्शे वाली बोतल को वापस वहीँ रख दिया।

इसके बाद वह अपनी बोतलों में (जो पहले से ही उसके पास थीं) पानी भरकर वहाँ से जाने लगा।

कुछ आगे बढ़कर उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा। फिर कुछ सोचकर वापिस उस झोपड़ी में गया, और पानी से भरी बोतल पर चिपके कागज़ को उतारकर उस पर कुछ लिखने लगा।

उसने लिखा – "मेरा यकीन करिए यह हैण्ड पम्प काम करता है।"

मुख्यालय समाचार

मुख्यालय समाचार

(अवधि अक्टूबर-दिसम्बर, 2024)

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

1. पद भार ग्रहण

➢ **श्री के. संजय मूर्ति द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के रूप में पदभार ग्रहण**

श्री के. संजय मूर्ति ने दिनांक 21.11.2024 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का पदभार ग्रहण किया। वे हिमाचल प्रदेश कैडर (1989 बैच) के भारतीय प्रशासनिक

सेवा के अधिकारी हैं। श्री मूर्ति, श्री गिरीश चंद्र मुर्मू का स्थान लेंगे, जो दिनांक 20.11.2024 को कार्यमुक्त हुए। इससे पूर्व, श्री मूर्ति शिक्षा मंत्रालय में उच्च शिक्षा विभाग के सचिव थे। उन्होंने आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव और राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम के सीईओ और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में संयुक्त सचिव के रूप में भी कार्य किया।

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में श्री मूर्ति को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के बाद श्री मूर्ति सीएजी कार्यालय गए, जहां भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने उनका स्वागत किया।

केंद्र में अपने कार्यकाल से पूर्व श्री मूर्ति हिमाचल प्रदेश सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं। उन्हें प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में व्यापक अनुभव है।

2. सम्मेलन

- **देश के सभी राज्यों के वित्त सचिवों की प्रथम बैठक नई दिल्ली में आयोजित**
- **राज्य वित्त सचिवों के सम्मेलन को सीएजी का सम्बोधन**

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने 8 अक्टूबर 2024 को नई दिल्ली में पहला राज्य वित्त सचिव सम्मेलन आयोजित किया। इसके तत्वावधान में आयोजित इस अपनी तरह की पहली बैठक में भारत सरकार के सचिव (व्यय), राज्यों के अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव (वित्त), भारतीय रिजर्व बैंक के प्रतिनिधि, केन्द्र और वित्त मंत्रालय, भारत सरकार की गठित लेखा सेवाएं, राज्यों के लेखा एवं हकदारी कार्यों को संपादित करने वाले राज्य महालेखाकार तथा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के वरिष्ठ प्रबंधन और अधिकारी शामिल हुए।

भारत का सीएजी संघीय राजकोषीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा संघ और राज्य सरकारों के बीच एक साझा सूत्र के रूप में कार्य करता है। सीएजी न केवल संघ और राज्य सरकारों और उसकी संस्थाओं का सर्वोच्च सार्वजनिक क्षेत्र का लेखापरीक्षक है, बल्कि राज्यों के खातों को संकलित करने और संबंधित विधानसभाओं में उनके वार्षिक खातों को प्रस्तुत करने का कार्य भी इसका है। सम्मेलन का उद्देश्य हितधारकों तक सीएजी की पहुंच को संस्थागत बनाना तथा पारदर्शी और जवाबदेह वित्तीय रिपोर्टिंग और इसके सुधारों को मजबूत करने सहित सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन के मुद्दों को हल करने के लिए राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के साथ संचार को मजबूत करना है।

तत्कालीन सीएजी श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने अपने उद्घाटन भाषण में सभी राज्यों और केंद्र सरकार के लिए वस्तु शीर्षों के अलग-अलग स्तर पर व्यय के सामंजस्य की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया, एक ऐसा मामला जिसने पिछले कुछ समय से कई हितधारकों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण परिणाम होगा। उन्होंने हितधारकों से आग्रह किया कि वे राज्यों में मासिक खातों को अंतिम रूप देने की तारीख को अगले महीने की 25 तारीख की मौजूदा समय सीमा से अगले महीने की 10 तारीख तक बदलने के लिए मिलकर काम करें। उन्होंने कहा कि सीएजी सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन ढांचे को मजबूत और टिकाऊ बनाने के लिए हितधारकों, विशेष रूप से केंद्र और राज्य सरकारों के साथ बातचीत जारी रखेगा। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि

वित्तीय प्रबंधन अनुप्रयोगों, जैसे कि केंद्रीय पीएफएमएस, राज्य आईएफएमएस, आरबीआई के ई-कुबेर आदि में सुधारों को मजबूत और समय पर रिपोर्टिंग के लिए राज्यों में सीएजी के लेखांकन अनुप्रयोग के साथ निकटता से जोड़ने की आवश्यकता है।

उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सरकारी लेखा) श्री जयंत सिन्हा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इस सम्मेलन को वित्तीय कैलेंडर में वार्षिक कार्यक्रम बनाने का निर्णय लिया गया है। इससे सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन के व्यापक मुद्दे पर राज्य सरकारों और राजकोषीय क्षेत्र से संबंधित हितधारकों के साथ बातचीत करने का अवसर मिलेगा।

सम्मेलन में राज्यों के वित्त, राजकोषीय मापदंडों, राजकोषीय सूचना के संग्रह, राज्यों में व्यय के प्राथमिक स्तर पर व्यय वर्गीकरण के सामंजस्य, राज्यों के मासिक खातों को अग्रिम रूप से, अधिमानतः अगले महीने की 10 तारीख तक बंद करने और राज्यों को दिए गए अनुदानों के विरुद्ध उपयोग प्रमाण-पत्रों से संबंधित प्रथाओं की समीक्षा से संबंधित कई विषयों पर विचार-विमर्श किया गया।

सम्मेलन में विचार-विमर्श और आम राय से सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रथाओं को मजबूत बनाने और बनाए रखने में काफी मदद मिलेगी, जिसमें समय पर और गुणवत्तापूर्ण वित्तीय रिपोर्टिंग और राज्यों में तुलनात्मक राजकोषीय जानकारी शामिल है, ताकि विवेकपूर्ण निर्णय लिया जा सके।

3. उद्घाटन

- **रांची में सीएजी खेल परिसर एवं ऑडिट भवन-2 का उद्घाटन**
- **खेल परिसर का प्रबंधन संभालने के लिए एक विशेष ट्रस्ट की आवश्यकता: सीएजी**

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने रांची में क्रमशः ₹ 18.23 करोड़ और ₹ 35.78 करोड़ की लागत से निर्मित एकीकृत 'सीएजी खेल परिसर' और 'ऑडिट भवन-II' का उद्घाटन किया। सीएजी ने खेल परिसर के भीतर एक क्रिकेट स्टेडियम की आधारशिला भी रखी।

उद्घाटन समारोह में बोलते हुए श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने खेल परिसर के प्रबंधन के लिए एक विशेष ट्रस्ट के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें आईएएडी, खेल समुदाय, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम और राज्य सरकार के अधिकारी शामिल होंगे। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपने निर्धारित कार्य के अतिरिक्त इस ट्रस्ट के लिए स्वयंसेवा भी करें। सीएजी ने एक फुटबॉल मैच और एक हॉकी मैच को हरी झंडी दिखाकर खेल परिसर के उद्घाटन

की घोषणा की तथा भाग लेने वाली टीमों के कप्तानों और मैच अधिकारियों को स्मृति चिन्ह भी प्रदान किए।

खेल परिसर में एक फुटबॉल स्टेडियम, एक हॉकी स्टेडियम और एक प्रस्तावित क्रिकेट स्टेडियम शामिल है। यह परिसर स्थानीय और राष्ट्रीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के अलावा भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग (आईए एवं एडी) के कर्मचारियों और उनके परिवारों के बीच खेल और शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। यह देश में खेल के बुनियादी ढांचे में सुधार पर सरकार के जोर के साथ तालमेल बिठाता है, खासकर झारखंड जैसे आदिवासी राज्य में।

ऑडिट भवन-द्वितीय में विभाग के 3 केंद्रीय कार्यालय होंगे - महानिदेशक (लेखापरीक्षा) इस्पात, रांची; महानिदेशक (कोयला), कोलकाता, शाखा रांची; और प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा केंद्रीय) लखनऊ, शाखा रांची। ये कार्यालय वर्तमान में सीमित स्थान वाले परिसरों में स्थित हैं और नए भवन से कर्मचारियों के लिए कार्य स्थितियों में उल्लेखनीय सुधार होगा। कार्यालय परिसर में सौर पैनल, वर्षा जल संचयन और ऊर्जा कुशल प्रकाश व्यवस्था जैसी पर्यावरण अनुकूल सुविधाएं होंगी। यह उद्घाटन, इस परियोजना को वास्तविकता बनाने के लिए सीएजी के दृष्टिकोण और प्रतिबद्धता के अलावा कार्यकुशलता में सुधार के लिए विभाग के निरंतर प्रयासों को दर्शाता है।

4. चौथे ऑडिट दिवस का आयोजन

- **लोकसभा अध्यक्ष द्वारा 16 नवंबर 2024 को सीएजी के चौथे ऑडिट दिवस का उद्घाटन**
- **वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और शासन को बेहतर बनाने में लेखापरीक्षा एक मार्गदर्शक शक्ति है: अध्यक्ष**
- **लेखापरीक्षा का उभरती प्रौद्योगिकियों के साथ सक्रिय जुड़ाव है: सीएजी**

लोक सभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला ने आज यहाँ 16 नवंबर 2024 को चौथे ऑडिट दिवस समारोह का उद्घाटन किया। ऑडिट दिवस 1860 में भारत के पहले महालेखापरीक्षक की ऐतिहासिक नियुक्ति का प्रतीक है। इस कार्यक्रम में भारत में वित्तीय निगरानी सुनिश्चित करने और सुशासन को बढ़ावा देने में संस्था के योगदान के 164 वर्ष पूरे होने का स्मरण किया गया।

अध्यक्ष ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) और संपूर्ण लेखापरीक्षा समुदाय को शासन में जवाबदेही और पारदर्शिता को मजबूत करने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई दी। अध्यक्ष ने सीएजी की समृद्ध विरासत की सराहना की तथा विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान के रूप में इसके विकास पर प्रकाश डाला, जो अपनी विशिष्टता और विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है।

अध्यक्ष ने इस बात पर जोर दिया कि पिछले कुछ वर्षों में लेखापरीक्षा में काफी बदलाव आया है और यह वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और शासन में सुधार लाने में एक मार्गदर्शक शक्ति बन गई है। उन्होंने सार्वजनिक धन के उपयोग का मूल्यांकन करने तथा स्थानीय शासन और सामाजिक कार्यक्रमों का लेखा-परीक्षण करके सामाजिक-आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में सीएजी की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।

सीएजी के वैश्विक कद को स्वीकार करते हुए, अध्यक्ष ने संस्था को एएसओएसएआई (2024-27) की अध्यक्षता संभालने और 16वीं एएसओएसएआई सभा की सफल मेजबानी के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारत की लेखापरीक्षा पद्धतियां विश्वभर में एक मानक बन गई हैं और भारत की लेखापरीक्षा पद्धतियों का अध्ययन करने और उन्हें अपनाने के लिए 50 से अधिक देशों के लोक अधिकारियों और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों ने भारत का दौरा किया है।

अध्यक्ष ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहित उभरती प्रौद्योगिकियों को सक्रियता से अपनाने के लिए सीएजी की प्रशंसा की, जिससे इसकी लेखापरीक्षा प्रक्रियाएं मजबूत हुई हैं और पारदर्शिता बढ़ी है। उन्होंने लेखापरीक्षा रिपोर्टों की जांच करने, रचनात्मक चर्चा को बढ़ावा देने और वित्तीय जवाबदेही सुनिश्चित करने में विपक्षी वरिष्ठ सदस्यों की अध्यक्षता वाली संसदीय समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

अध्यक्ष ने वर्तमान नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, श्री गिरीश चंद्र मुर्मू के प्रति आभार व्यक्त किया तथा पूर्व नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षकों, लेखापरीक्षा अधिकारियों और कर्मचारियों के योगदान की सराहना की जिन्होंने इस संस्था को अद्वितीय बनाया है। उन्होंने राष्ट्र को सुशासन और विकसित भारत की ओर ले जाने में उनके निरंतर प्रयासों के महत्व को रेखांकित किया। अध्यक्ष ने पुनः कहा कि सीएजी का कार्य लोकतंत्र के लिए अपरिहार्य है और यह वैश्विक स्तर पर शासन पद्धतियों में उत्कृष्टता को प्रेरित करता रहेगा।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने संस्था की विरासत और दृष्टिकोण के बारे में बात की। उन्होंने सीएजी के अपने मिशन के प्रति समर्पण और सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के अवसर के रूप में ऑडिट दिवस के महत्व पर जोर दिया। श्री मुर्मू ने संस्था द्वारा की गई प्रगति को रेखांकित किया तथा सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन को बढ़ाने तथा जवाबदेही में सुधार लाने के उद्देश्य से की गई प्रमुख पहलों पर प्रकाश डाला।

श्री मुर्मू ने आगे बताया कि संस्था सामाजिक प्रासंगिकता के लेखापरीक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है जिसका लोगों के जीवन और आजीविका पर असर पड़ता है। उन्होंने संस्थागत तंत्र का उल्लेख किया, जिसे लेखापरीक्षा प्रक्रिया के माध्यम से लेखापरीक्षा प्रयासों को समन्वित करने के लिए स्थापित किया गया था।

सीएजी ने राजकोट में स्थानीय शासन की लेखापरीक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (आईसीएएल) की स्थापना के बारे में भी बताया तथा इसे स्थानीय शासन लेखापरीक्षा के लिए क्षमता निर्माण बढ़ाने में एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। यह पहल जमीनी स्तर पर शासन को मजबूत करने और सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के बीच वैश्विक ज्ञान साझाकरण और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए सीएजी की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

अंतर्राष्ट्रीय पटल पर, सीएजी ने वैश्विक लेखापरीक्षा मंचों पर संस्था के नेतृत्व पर प्रकाश डाला, तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन, रासायनिक हथियार निषेध संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी तथा खाद्य एवं कृषि संगठन जैसे कई प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के लिए बाह्य लेखापरीक्षक के रूप में इसकी भूमिका का उल्लेख किया। उन्होंने 2024-2027 के कार्यकाल के लिए एशियाई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (एएसओएसएआई) की अध्यक्षता संभालने से प्राप्त महत्वपूर्ण उपलब्धि का उल्लेख किया।

श्री मुर्मू ने लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने लेखापरीक्षा प्रक्रिया स्वचालन के लिए संपूर्ण उद्यम-व्यापी आईटी प्रणाली का उल्लेख किया, जिसे एक आईएएडी एक प्रणाली (ओआईओएस) कहा जाता है। उन्होंने उभरते परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों के साथ संस्थान की सक्रिय भागीदारी को रेखांकित किया। उन्होंने डेटा प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र पर भी गर्व व्यक्त किया, जो एक मार्गदर्शन केंद्र और अग्रणी अनुसंधान सुविधा दोनों के रूप में कार्य करता है, साथ ही वैश्विक स्तर पर सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के साथ क्षमता निर्माण पहल के माध्यम से सीएजी की वैश्विक मान्यता को प्रदर्शित करता है।

अपने 41,000 कर्मचारियों की ताकत को मान्यता देते हुए, भारत का सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान एसएआई-भारत (साई इंडिया) सार्वजनिक लेखापरीक्षा और लेखांकन में नवाचार और उत्कृष्टता के लिए अपने पुरस्कारों के माध्यम से उत्कृष्ट योगदान का जश्न मना रहा है, तथा अपने मिशन को विश्वास और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा रहा है।

अध्यक्ष महोदय और नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक दोनों ने राष्ट्र निर्माण और शासन में इस संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका को दोहराया।

- **ऑडिट दिवस पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, श्री गिरीश चंद्र मुर्मू द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ**

चौथे लेखापरीक्षा दिवस के महत्वपूर्ण अवसर पर इस प्रतिष्ठित सभा में आप सभी का स्वागत करना मेरे लिए बड़े सौभाग्य और सम्मान की बात है।

अपनी उपस्थिति से आज हमें अनुग्रहित करने के लिए हमारे मुख्य अतिथि, माननीय लोकसभा अध्यक्ष का मैं हार्दिक से आभार व्यक्त करता हूँ। महोदय, अपना समय निकालकर हुमसे जुड़ने के लिए हम आपके आभारी हैं।

प्रत्येक वर्ष 16 नवंबर को मनाया जाने वाला लेखापरीक्षा दिवस, 1860 में भारत के पहले महालेखापरीक्षक की नियुक्ति की याद दिलाता है, जो प्रभावी वित्तीय निगरानी की स्थापना में मील का पत्थर है। यह समारोह भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग की ऐतिहासिक उत्पत्ति और पिछले 164 वर्षों में सुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही में इसके योगदान पर प्रकाश डालता है। यह पहल सार्वजनिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा और जवाबदेही में उत्कृष्टता के लिए हमारे अथक प्रयास को मूर्त रूप देती हैं, तथा निष्ठा और सेवा के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के हमारे अटूट संकल्प को प्रतिबिंबित करती हैं। यह, शासन की संवैधानिक

योजना में भारत के सीएजी की भूमिका के बारे में जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से हमारे हितधारकों के साथ जुड़ने का भी एक अवसर है ।

पिछले कुछ वर्षों में, हमारा एक प्रयास शासन से जुड़े लोगों को समय पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करना रहा है। यह मानते हुए कि लेखांकन और लेखापरीक्षा सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन के आधार हैं, हमने लेखाओं की प्रस्तुति में समयबद्धता सुनिश्चित की है और देश में सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में सुधार के समग्र उद्देश्य के साथ राज्य वित्त पर रिपोर्टिंग की गुणवत्ता को मजबूत किया है। मुझे आपको यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारे निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप, अब हम कई राज्यों में 25 तारीख के लक्ष्य के मुकाबले अगले महीने की 10 तारीख तक मासिक लेखा प्रस्तुत कर रहे हैं।

लेखापरीक्षा पक्ष पर, हमने सामाजिक प्रासंगिकता के विषयों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया है, जिनका लोगों के जीवन और आजीविका, लाभों और संसाधनों तक उनकी पहुंच, तथा समानता और स्थिरता के मुद्दों पर प्रभाव पड़ता है। चूंकि ये विषय सभी राज्यों में समान हैं, इसलिए हमने सभी राज्यों में समन्वित तरीके से इन विषयों की लेखापरीक्षा के लिए एक समान दृष्टिकोण अपनाने की रणनीति विकसित की है। तकनीकी जानकारी के नियमित आदान-प्रदान को सुगम बनाने तथा वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए अन्य संपर्क बिन्दुओं और तंत्रों को विकसित करने के लिए योजना स्तर से ही लेखापरीक्षा प्रयासों को समन्वित करने के लिए एक संस्थागत तंत्र स्थापित किया गया है। पहले से किए गए कुछ क्षैतिज लेखापरीक्षा में अस्पताल प्रबंधन, स्थानीय सरकारें और अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हैं। नीली अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में क्षैतिज लेखापरीक्षा चल रही है और आने वाले वर्षों में सार्वजनिक प्रासंगिकता के कई और विषयों की लेखापरीक्षा की योजना बनाई गई है।

इस गतिशील तकनीकी परिदृश्य में, चूंकि सरकारें सेवाएं प्रदान करने के लिए तेजी से कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) और उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर रही हैं, इसलिए गोपनीयता के उल्लंघन, एल्गोरिदम संबंधी पूर्वाग्रहों से लेकर सामाजिक बहिष्कार तक कई जोखिम हैं। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि एक संस्था के रूप में हम इन घटनाक्रमों से गहराई से परिचित हैं और ऐसे परिदृश्य में लेखापरीक्षा और लेखांकन प्रथाओं की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए उभरते तकनीकी रुझानों के साथ करीबी रूप से जुड़े हुए हैं। हमारा डेटा प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र, न केवल डेटा विश्लेषण पर क्षेत्रीय कार्यालयों को मार्गदर्शन प्रदान करता है, बल्कि भविष्य के लिए डेटा विश्लेषण के लिए एक अग्रणी अनुसंधान और विकास केंद्र के रूप में भी कार्य करता है। माननीय महोदय, हमें इस बात पर बहुत गर्व है कि आज हमारे पास लेखापरीक्षा प्रक्रिया स्वचालन के लिए एक आद्योपांत उद्यम-व्यापी आईटी प्रणाली है, जिसे एक आईएएडी एक प्रणाली (ओआईओएस) कहा जाता है। इस गौरवशाली सभा को यह बताते हुए मुझे बहुत गर्व हो रहा है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हमारी कुशलता को विश्व स्तर पर मान्यता मिली है और हम बहुपक्षीय मंचों पर सूचना प्रौद्योगिकी लेखापरीक्षा में क्षमता निर्माण सहायता प्रदान कर रहे हैं और साथ ही जमैका जैसे सुदूरवर्ती क्षेत्रों में स्थित कई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों को द्विपक्षीय स्तर पर भी सहायता प्रदान कर रहे हैं।

लेखापरीक्षा और लेखांकन प्रथाओं को मजबूत करने के प्रयास में, सीएजी संस्था के सभी कार्यालयों को नए तरीकों से सोचने और नई तकनीकों के साथ प्रयोग करके बदलते तकनीकी और प्रशासन वातावरण के अनुकूल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे कार्यप्रणाली में

रचनात्मकता, परिचालन में मितव्ययिता को बढ़ावा देने और कार्यों के बेहतर निष्पादन में मदद मिलती है। हर साल, हम कार्यालयों में सफलतापूर्वक अपनाई गई कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं और नवाचारों को एक संग्रह में प्रकाशित करते हैं, जिसका शीर्षक है "उत्प्रेरक... सुशासन की खोज में"। इससे न केवल पूरे संगठन में समान अच्छी प्रथाओं को अपनाने में बढ़ावा मिलता है, बल्कि हमारे हितधारकों के समक्ष हमारी क्षमता का प्रदर्शन भी होता है तथा हमारे कार्य के प्रति उनका विश्वास और भरोसा भी बढ़ता है।

पिछले कुछ वर्षों में संस्था का एक अन्य केंद्र-बिन्दु क्षेत्र स्थानीय सरकारों के शासन के तीसरे स्तर की लेखापरीक्षा रहा है। मेरे विचार में, शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए यह महत्वपूर्ण है। पहले कदम के रूप में, हमने स्थानीय निकायों को लक्षित हस्तांतरण की सफलता की सीमा का आकलन करने के लिए 74वें संविधान संशोधन अधिनियम के कार्यान्वयन पर राज्यों में क्षैतिज लेखापरीक्षा करने का निर्णय लिया; और अब तक इस विषय पर 18 राज्य विधानमंडलों के समक्ष लेखापरीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की जा चुकी हैं। इसके अतिरिक्त, इन 18 राज्यों की रिपोर्टों से प्राप्त प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्षों और अनुशंसाओं को एक संग्रह के रूप में संकलित किया गया है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि, 18 जुलाई, 2024 को राजकोट, गुजरात में एक अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र, अंतरराष्ट्रीय स्थानीय शासन लेखापरीक्षा केंद्र (आईसीएएल) का उद्घाटन किया गया। यह स्थानीय सरकार के लेखापरीक्षकों की क्षमता निर्माण और स्वतंत्रता को बढ़ाने के लिए अपनी तरह का पहला प्रशिक्षण संस्थान है, जिसका उद्देश्य स्थानीय सरकारों के वित्तीय निष्पादन, सेवा वितरण और डेटा रिपोर्टिंग में सुधार करना है। आईसीएएल अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्रों, आईसीआईएसए और आईसीईडी के साथ भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (एसएआई इंडिया) के सफल ट्रैक रिकॉर्ड पर आधारित है। यह स्थानीय शासन लेखापरीक्षा को बढ़ाने और सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के बीच वैश्विक ज्ञान साझाकरण और सहयोग को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाता है। कार्यशालाओं और कर्मचारी की अदला-बदली (पीयर एक्सचेंज) के माध्यम से, इस प्रशिक्षण केंद्र का उद्देश्य सर्वोत्तम पद्धतियों और प्रभावी लेखापरीक्षा दिशानिर्देशों को साझा करना है, तथा सतत विकास और आर्थिक वृद्धि में स्थानीय शासन की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करना है।

हम अपने हितधारकों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए अनुकूलित दृष्टिकोण अभिकल्पित (टेलर मेड अप्रोच डिजाइन) करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। हाल ही में, हमने शिक्षा, ऊर्जा और केन्द्रीय लोक क्षेत्रक उपक्रम (सीपीएसई) जैसे अन्य क्षेत्रों पर भी लेखापरीक्षा अभियुक्तियाँ और अनुशंसाओं का सारांश प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि ये मूल्यवर्धित उत्पाद नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों, अनुसंधान विद्वानों और पाठकों के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में काम करेंगे, रचनात्मक कार्रवाई को बढ़ावा देंगे और शासन के वातावरण में सुधार करेंगे।

सीएजी का संगठन ज्ञान आधारित संगठन है, और हमारे कर्मचारी हमारी सबसे बड़ी संपत्ति हैं। हमारे पास भारत और विदेशों में 41,000 से अधिक लोगों का एक मजबूत कार्यबल है। काम में उत्कृष्टता को मान्यता देने और पुरस्कृत करने के लिए, हमने सार्वजनिक लेखापरीक्षा और लेखांकन में नवाचार और उत्कृष्टता के लिए सीएजी पुरस्कार की स्थापना की है। ये पुरस्कार उन टीमों को दिए जाते हैं जिन्होंने विशिष्ट परियोजनाओं में उल्लेखनीय नवाचार और उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया है; साथ ही उन कार्यालयों को भी

जिन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। ये पुरस्कार आज (16-11-2024) प्रदान किए जाएंगे।

माननीय महोदय, आज मुझे अंतरराष्ट्रीय संगठनों की लेखापरीक्षा में हमारी भूमिका से संबंधित कुछ उल्लेखनीय घटनाक्रमों को साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। भारत के सीएजी को विश्व स्वास्थ्य संगठन और रासायनिक हथियार निषेध संगठन के लिए बाह्य लेखापरीक्षक के रूप में फिर से चुना गया है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान में, हम अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन, अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी और खाद्य एवं कृषि संगठन के भी बाह्य लेखापरीक्षक हैं। ये नियुक्तियां न केवल अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच हमारी स्थिति को दर्शाती हैं, बल्कि लेखापरीक्षा पद्धतियों में व्यावसायिकता और अखंडता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने और महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संगठनों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को भी उजागर करती हैं।

बहुपक्षीय लेखापरीक्षा मंचों में अग्रणी भूमिका निभाने और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की लेखापरीक्षा करने के अतिरिक्त, हमने अन्य सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों (एसएआई) के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने की नीति को भी जोरदार तरीके से अपनाया है। हमने अब 25 से अधिक राज्य लेखा संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं और इससे अन्य देशों के हमारे लेखापरीक्षा समुदाय के साथ सार्वजनिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा के क्षेत्र में विचारों, अनुभवों और सर्वोत्तम पद्धतियों का आदान-प्रदान हुआ है।

माननीय अध्यक्ष जी , हमने अंतरराष्ट्रीय ऑडिटिंग बिरादरी में भारत की उपस्थिति के मामले में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की, जब भारत के सीएजी ने 2024-27 के कार्यकाल के लिए एशियन ऑर्गनाइजेशन ऑफ सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशंस (एएसओएसएआई) का अध्यक्ष पद ग्रहण किया। हमने नई दिल्ली में 21 से 27 सितंबर 2024 तक 16वीं एएसओएसएआई विधानसभा और संबंधित कार्यक्रमों की मेजबानी की। भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन किए गए इस कार्यक्रम में एएसओएसएआई सदस्य देशों के लगभग 200 प्रतिनिधियों और आईएनटीओएसएआई और आईडीआई जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसने एशिया भर के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों को एकजुट होने, अंतर्दृष्टि साझा करने और एएसओएसएआई की रणनीतिक दिशाओं को आकार देने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

जैसा कि कहा जाता है, "अपने इतिहास को संरक्षित करके, हम अपने अतीत का सम्मान करते हैं, अपने वर्तमान को समझते हैं, और अपने भविष्य को प्रेरित करते हैं।" मुझे यह घोषणा करते हुए गर्व और कृतज्ञता का अनुभव हो रहा है कि इस वर्ष एसएआई इंडिया ने शिमला में एक अद्वितीय संग्रहालय - 'द चैडविक हाउस: नेविगेटिंग ऑडिट हेरिटेज' की स्थापना की है। यह सीएजी संस्था तथा इसकी समृद्ध विरासत और राष्ट्र के शासन में इसके योगदान के संरक्षण और सम्मान में मील का पत्थर है। संग्रहालय की दस अलग-अलग सुव्यवस्थित गैलरी आगंतुकों को संस्थान और इसके इतिहास की व्यापक समझ प्रदान करती हैं और यह ज्ञान का भंडार है तथा लेखापरीक्षकों की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

माननीय अध्यक्ष जी, सीएजी संगठन राष्ट्र की सेवा के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। उच्च गुणवत्ता वाले लेखांकन और सार्वजनिक लेखापरीक्षा के साथ, हम इस देश के नागरिकों के लाभ के लिए सुशासन, समावेशी विकास और सतत विकास के लिए विश्वसनीयता के साथ काम करना जारी रखेंगे।

मैं एक बार फिर माननीय लोकसभा अध्यक्ष और अन्य विशिष्ट अतिथियों का चौथे लेखापरीक्षा दिवस में स्वागत करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

5. सेवानिवृत्ति

- **श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू, भारत के सीएजी के पद से सेवानिवृत**

दिनांक 20.11.2024 को श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू, भारत के सीएजी के पद से सेवानिवृत हो गए। उन्होने 8 अगस्त 2020 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पद का कार्यभार ग्रहण किया।

इससे पूर्व श्री मुर्मू जम्मू एवं कश्मीर संघ राज्य क्षेत्र के पहले उपराज्यपाल थे। जम्मू एवं कश्मीर में कार्यभार ग्रहण करने से पहले श्री मुर्मू ने भारत सरकार में विभिन्न पदों पर कार्य किया जैसे व्यय विभाग के सचिव, वित्तीय सेवा विभाग और राजस्व विभाग में विशेष और अतिरिक्त सचिव, तथा व्यय विभाग में संयुक्त सचिव। केन्द्र में अपने कार्यकाल से पहले, श्री मुर्मू ने गुजरात राज्य सरकार में महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। उनको प्रशासनिक, आर्थिक और अवसंरचना के क्षेत्रों में व्यापक अनुभव प्राप्त है। श्री मुर्मू उत्कल विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोतर हैं। उन्होंने बर्मिंघम विश्वविद्यालय से एमबीए की डिग्री प्राप्त की है। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा, गुजरात काडर के 1985 बैच के अधिकारी हैं। श्री मुर्मू का जन्म 21 नवम्बर 1959 को उड़ीसा के मयूरभंज जिले में हुआ। डाक्टर स्मिता मुर्मू उनकी पत्नी हैं।

6. समझौता ज्ञापन

- **सेशेल्स के साथ समझौता ज्ञापन**

- **लेखापरीक्षा में सहयोग और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान को बढ़ाने के लिए सेशेल्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर**

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम उठाते हुए सेशेल्स गणराज्य के महालेखापरीक्षक कार्यालय (ओएजी) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

दोनों सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों द्वारा हस्ताक्षरित इस समझौते का उद्देश्य दोनों देशों के बीच लेखापरीक्षा के क्षेत्र में सहयोग और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान बढ़ाना है। यह समझौता ज्ञापन लेखापरीक्षा पेशेवरों के बीच ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान के लिए एक सहयोग मंच स्थापित करता है ताकि लेखापरीक्षा करने की क्षमता विकसित की जा सके।

इस अवसर पर बोलते हुए भारत के सीएजी श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने साझेदारी में अपना विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि "यह समझौता ज्ञापन एक महत्वपूर्ण अवसर है क्योंकि हम अपने एवं साई के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके अपने मौजूदा द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने

की यात्रा शुरू करने वाले हैं। मुझे यकीन है कि यह समझौता ज्ञापन हमारे एवं साई के मध्य ज्ञान साझा करने और क्षमता निर्माण पहल के लिए अधिक अवसर खोलेगा।"

सेशेल्स गणराज्य के महालेखापरीक्षक श्री जेमिनी हेराथ ने ओएजी को पेशेवर रूप से मजबूत बनाने में भारत के सीएजी के अधिकारियों द्वारा किए गए योगदान का उल्लेख किया।

अपनी यात्रा के दौरान, श्री मुर्मू ने सेशेल्स की राष्ट्रीय सभाओं के अध्यक्ष माननीय रोजर मैनसिएन के साथ बैठक की, जहां उन्होंने विभिन्न देशों की राष्ट्रीय सभाओं और संसदों के मिशन को समर्थन देने में महालेखापरीक्षक के कार्यालय द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

एक अलग कार्यक्रम में, श्री मुर्मू ने वित्त और लोक लेखा समिति के अध्यक्ष माननीय सेबेस्टियन एलिक पिल्ले से भी मुलाकात की, जहां नागरिकों द्वारा राष्ट्रीय विधानसभाओं को सौंपे गए विधायी अधिदेश को आगे बढ़ाने में सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों और लोक लेखा समितियों के बीच महत्वपूर्ण सहयोग पर चर्चा की गई।

7. अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता

प्रति वर्ष 16 नवंबर को मनाए जाने वाले ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 04 अक्तूबर 2024 को भारत वर्ष में 38 स्थानों पर हिन्दी एवं अँग्रेजी, दोनों भाषाओं में राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता – 2024 का आयोजन हुआ। यह प्रतियोगिता महाविद्यालयों के उन सभी छात्रों के लिए थी जो

(1) भारत के किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु नामांकित हों

(2) दिनांक एक अगस्त 2024 को उनकी आयु तेईस वर्ष से अधिक न हो।

दोनों भाषाओं में निबंध का विषय निम्नलिखित था -

- **सीएजी प्राथमिक हितधारक अर्थात "भारत के लोगों" की बेहतर सेवा कैसे कर सकता है**
- **How can CAG better serve the primary stakeholder – the people of India**

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता – 2024 के परिणामों की घोषणा की। चतुर्थ ऑडिट दिवस के अवसर पर अर्थात 16 नवंबर 2024 को भाषा की दोनों श्रेणियों अर्थात हिन्दी एवं अँग्रेजी में प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार निम्नलिखित प्रतिभागियों को दिए गए।

हिन्दी					
क्र.सं.	पुरस्कार	राशि (₹ में)	छात्र का नाम	विश्वविद्यालय / संस्थान	स्थान
1	प्रथम पुरस्कार	50,000	श्री अजय सिहाग	राजस्थान विश्वविद्यालय	जयपुर
2	द्वितीय पुरस्कार	40,000	श्री रक्षक त्यागी	आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ	मोहाली
3	तृतीय पुरस्कार	30,000	श्री अब्दुल्लाह	जामिया मिलिया इस्लामिया	नई दिल्ली
अँग्रेजी					
1	प्रथम पुरस्कार	50,000	सुश्री मानवी सरकार	दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज	नई दिल्ली
2	द्वितीय पुरस्कार	40,000	श्री धर्मेंद्र कुमार जांगीड़	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय	नई दिल्ली
3	तृतीय पुरस्कार	30,000	सुश्री सनेया रफ़ीक़ सिद्दीकी	यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, ओस्मानिया विश्वविद्यालय	हैदराबाद

ऑडिट दिवस की झलकियाँ

4th AUDIT DIWAS CELEBRATIONS
13 NOVEMBER 2024
AND

ऑडिट दिवस की झलकियाँ

सत्यमेव जयते
4th
चतुर्थ ऑडिट दिवस

चतुर्थ ऑडिट दिवस
१६ नवंबर २०२४
4th AUDIT DIWAS

ऑडिट दिवस की झलकियाँ

ऑडिट दिवस की झलकियाँ

चतुर्थ ऑडिट दिवस
१६ नवंबर २०२४

चतुर्थ ऑडिट दिवस
१६ नवंबर २०२४

सीएजी - सुर्खियों में

सरकार विस सत्र बुलाकर सदन में पेश करे कैग रिपोर्ट : एलजी

रिपोर्ट को लटकाकर रखने से केजरीवाल की प्रतिबद्धता संदिग्ध : राजनिवास

कैग रिपोर्ट एलजी के पास भेजने संबंधी याचिका हाईकोर्ट ने निपटाई

दिल्ली सरकार ने कैग की सभी 14 रिपोर्ट स्पीकर को भेजीं

कोर्ट ने सभी पक्षों से 10 दिन में हलफनामा देने को कहा

सेना में कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी में देरी, CAG ने उठाए सवाल

NBT Lens

तय समय में कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी क्यों जरूरी

लोकतंत्र को मजबूती देती है ऑडिट प्रणाली

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने शनिवार को कहा कि मजबूत और पारदर्शी ऑडिट प्रणाली लोकतंत्र को मजबूत करने में मदद करती है ...र देश को सर्वांगीण विकास ... पर ले जाती है। वे दिल्ली ...यंत्रक एवं महालेखा परीक्ष... (...ग) के ऑडिट दिवस कार्य... संबोधित कर रहे थे...

कैग रिपोर्ट मामले में कोर्ट ने सरकार से जवाब मांगा

अदालत से

याचिका में दावा- सीएम के पास लंबित है रिपोर्ट

घोषणा पत्र लेखापरीक्षा प्रथाओं और शासन में सुधार के लिए कार्यरत

एसोसाई महासभा का सफलतापूर्वक समापन

नई दिल्ली। 16वीं एसोसाई महासभा का आज यहां सफलतापूर्वक समापन हुआ, जिसमें 42 देशों के 200 प्रतिनिधियों द्वारा सार्वजनिक लेखापरीक्षा, शासन और जवाबदेही पर चर्चा हुई। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) श्री गिरीश चंद मुर्मु द्वारा आयोजित, महासभा में नई दिल्ली घोषणा को अपनाया गया, एक रोडमैप जो समानता, पारदर्शिता और नवाचार के लिए एसोसाई सदस्यों की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। उन्होंने आज के नए परिदृश्य में अधिक लचीलापन, नवाचार और शासन की दिशा में एसोसाई एवं इसके 48 सदस्यों के लिए एक रास्ता तैयार करते हुए बैंकॉक घोषणा 2021 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए साई थाईलैंड की विभिन्न पहलों की सराहना की। सीएजी ने कहा कि नई दिल्ली घोषणा पत्र बैंकाक घोषणा पत्र पर किए गए प्रयासों को आगे बढ़ाएगा और उन्हें इसकी प्रगति की आशा है। सीएजी ने एसोसाई के पूर्व अध्यक्ष साई थाईलैंड

और महासचिव साई चीन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने एसोसाई के सात (अजरबैजान, कजाकस्तान, कोरिया, मलेशिया, पाकिस्तान, फिलीपींस और संयुक्त अरब अमीरात) और लेखापरीक्षा समिति के दो (ईरान और वियतनाम) नव निर्वाचित सदस्यों को बधाई दी। श्री मुर्मु ने नई दिल्ली घोषणा में निहित सामूहिक प्रयासों की भी प्रशंसा की, जो लेखापरीक्षा प्रथाओं और शासन में सुधार के लिए भविष्य के प्रयासों का मार्गदर्शन इस क्षेत्र में करेगा। यह घोषणा संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों, विशेष रूप से एसडीजी-5 (लैंगिक समानता) और एसडीजी-10 (असमानता में कमी) की सीध में है, जो डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का लाभ उठाकर सेवाओं तक समान पहुंच प्रदान करने पर केंद्रित है। नई दिल्ली घोषणापत्र न केवल हमारे साझा दृष्टिकोण का प्रतिफल है, बल्कि हमारे भविष्य के प्रयासों का मार्गदर्शक प्रकाश भी है। 24 सितंबर, को भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा उद्घाटित किए गए चार दिवसीय कार्यक्रम में सार्वजनिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा को बढ़ाने के लिए एशिया के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (साई) एक साथ एकत्रित हुए।

सीएजी - सुर्खियों में

अब महालेखा परीक्षक रिपोर्ट में भी सामने आई शहरों की अव्यवस्था

कई राज्य निर्वाचन आयोगों को वार्डों के परिसीमन का अधिकार ही नहीं

18 राज्यों में 74वें संविधान संशोधन के क्रियान्वयन का किया आकलन

• शहर न अपने स्रोतों से धन जुटा सके, न आवंटित पैसों का इस्तेमाल कर सके

नई दिल्ली: नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट में भी देश के शहरों में कामचलाऊ रवैये की सच्चाई सामने आई है। कैग ने 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के प्रावधानों को राज्यों में लागू किए जाने की स्थिति के आकलन को लेकर गत दिवस अपनी रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट के अनुसार 17 राज्यों में 2,625 शहरी स्थानीय निकायों में से 1,600 में सक्रिय निर्वाचित परिषद ही नहीं बनी है। ...

कैग रिपोर्ट के लिए विशेष सत्र बुलाने की मांग पर सरकार, LG को नोटिस

■ विस, नई दिल्ली: दिल्ली हाई कोर्ट ने कैग रिपोर्ट पेश करने के लिए विधानसभा की विशेष बैठक बुलाने की मांग वाली BJP के सात विधायकों की याचिका पर दिल्ली सरकार और LG से जवाब मांगा है। विधायकों की याचिका पर मंगलवार को सुनवाई करते हुए जस्टिस संजीव नरूला ने कहा कि दिल्ली सरकार और मुख्यमंत्री आतिशी, जिनके पास वित्त विभाग भी है, को 14 कैग रिपोर्ट स्पीकर को भेजने का निर्देश देने की मांग पूरी हो गई है। कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं के अनुरोध पर दिल्ली सरकार, मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष के कार्यालय, LG और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) के दफ्तर को नोटिस जारी किया।

याचिका में स्पीकर को अपना संवैधानिक दायित्व निभाने और ... है। सुनवाई के दौरान दिल्ली सरकार के वकील ने कहा कि फाइलें दिन के दौरान मुख्यमंत्री ऑफिस से दिल्ली सचिवालय तक पहुंच गई थीं। याचिकाकर्ताओं के वकील ने कहा कि विधायक होने के नाते, सदन में रिपोर्ट पर बहस करना उनका अधिकार है। CAG रिपोर्ट के संबंध में BJP विधायकों की यह दूसरी याचिका है। हाई कोर्ट ने मामले में अगली सुनवाई के लिए 8 जनवरी, 2025 का दिन तय किया। नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता और BJP विधायक मोहन सिंह बिष्ट, ओम प्रकाश शर्मा, अजय कुमार महावर, अभय वर्मा, अनिल कुमार बाजपेयी और जितेंद्र महाजन ने CAG रिपोर्ट विधानसभा के समक्ष रखने के मुद्दे पर याचिका दायर की थी। एडवोकेट नीरज और सत्य रंजन स्वाईं के जरिए दायर याचिका में याचिकाकर्ताओं ...

दिल्ली सरकार ने फाइलें सचिवालय तक पहुंचाने का HC में दावा किया

विधानसभा में कैग रिपोर्ट पेश करने के लिए एलजी ने फिर लिखा सीएम को पत्र

• एलजी ने आग्रह किया है कि इन रिपोर्टों को चालू सत्र में पेश किया जाए

• तथ्य- जानबूझकर सदन की सार्वजनिक जांच से बच रही है दिल्ली सरकार

रिपोर्ट से जुड़ी याचिका पर दो दिसंबर को सुनवाई

कैग ने सेशेल्स के ओएजी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

नई दिल्ली, (भाषा)। भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (कैग) ने सेशेल्स के साथ लेखा परीक्षा में सहयोग और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान बढ़ाने के लिए सेशेल्स के महालेखा परीक्षक कार्यालय (ओएजी) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। कैग ने सोमवार को बयान में कहा कि यह समझौता ज्ञापन (एमओयू) लेखा परीक्षा करने की क्षमता विकसित करने के लिए लेखा परीक्षा पेशेवरों के बीच ज्ञान और अनुभव के द्विपक्षीय आदान-प्रदान के लिए एक सहयोग मंच स्थापित करता है।

इस अवसर पर कैग गिरीश चंद्र मुर्मू ने उम्मीद जताई कि यह समझौता भारत और सेशेल्स के सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों के बीच ज्ञान साझा करने और ...

के. संजय मूर्ति ने ली कैग की शपथ

नई दिल्ली (भाषा)। पूर्व उच्च शिक्षा सचिव के. संजय मूर्ति को बुधवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) के रूप में शपथ दिलाई। हिमाचल प्रदेश काडर के 1989 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी मूर्ति, गिरीश चंद्र मुर्मू का स्थान लेंगे। ...

■ शपथ ग्रहण समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे

बदलती तकनीक में अपनाएं नये तरीके : कैग

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) गिरीश चंद्र मुर्मू ने शनिवार को अधिकारियों से नये तरीके से सोचने, नयी तकनीकों के साथ प्रयोग करने और बदलते तकनीकी परिवेश के साथ तालमेल बिठाने को कहा।

उन्होंने यहां चौथे लेखापरीक्षा दिवस समारोह में कहा, 'एक संगठन के रूप में, हम इससे गहराई से परिचित हैं और ऐसे परिवेश में लेखापरीक्षा और लेखा प्रणालियों के असर को बढ़ाने के लिए उभरते तकनीकी रुझानों के साथ जुड़ रहे हैं।' मुर्मू ने कहा कि लेखा परीक्षा और लेखा पद्धतियों को मजबूत करने के लिए कैग संगठन के सभी कार्यालयों को नयी तकनीकों के साथ प्रयोग करने, नये तरीके से सोचने और बदलते तकनीकी तथा शासन परिवेश से तालमेल बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने चौथे लेखा परीक्षा दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए कैग की समृद्ध विरासत की सराहना की। उन्होंने कृत्रिम मेधा सहित उभरती प्रौद्योगिकियों को कैग के अपनाने की भी प्रशंसा की।

मजबूत, पारदर्शी ऑडिट प्रणाली से लोकतंत्र मजबूत : बिरला

कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि मजबूत और पारदर्शी ऑडिट प्रणाली लोकतंत्र को मजबूत करने में मदद करती है और देश को सतत विकास के पथ पर ले जाती है। बिरला ने यह भी कहा कि भारतीय लोकतंत्र में राजकोषीय अनुशासन और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए, प्रमुख विपक्षी दल के एक वरिष्ठ सदस्य को पारंपरिक रूप से संसद की लोक लेखा समिति (पीएसी) के प्रमुख के रूप में नियुक्त किया जाता है। उन्होंने कहा, 'यह भारतीय लोकतंत्र की ताकत है।'

चतुर्थ ऑडिट दिवस
१६ नवंबर २०२४
4th AUDIT DIWAS

चतुर्थ ऑडिट दिवस
१६ नवंबर २०२४
4th AUDIT DIWAS

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)

सीएजी श्री के. संजय मूर्ति निदेशक आईआईटीएम डॉ.वी कामकोटि को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124